Vol.20, Issue 8 | Annual Subscription ₹420

June 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Rotary

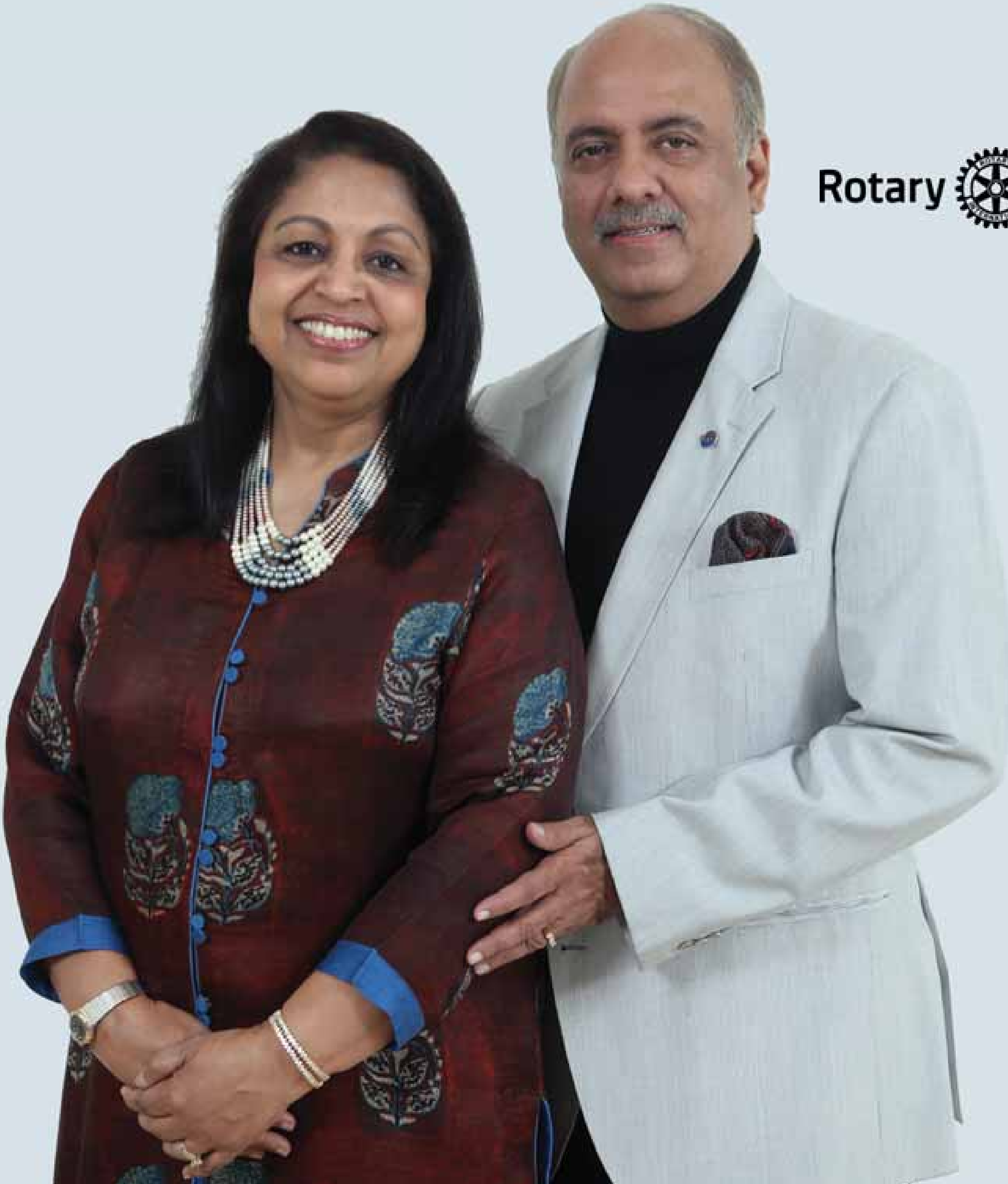

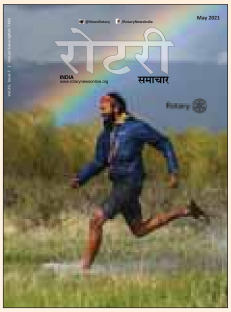

नियमित रूप से *रोटरी न्यूज़* प्राप्त करने के लिए अपने पते का नवीनीकरण कीजिए

Subscription in charge	District numbers
Kalpana *kalpana@rotarynewsonline.org*	2982, 3020, 3054, 3090, 3100, 3170, 3181, 3182, 3190, 3250, 3262
Sasikala *sasi@rotarynewsonline.org*	2981, 3012, 3110, 3120, 3141, 3142, 3201, 3211, 3212, 3261, 3291
Valli *valli@rotarynewsonline.org*	3000, 3030, 3060, 3070, 3080, 3131, 3132, 3232, 3240
Anuvarshini *anu@rotarynewsonline.org*	3011, 3040, 3053, 3150, 3160, 3202, 3231

आप हमारे सब्सक्रिप्शन प्रमुख सेंथिल कुमार से *senthil@rotarynewsonline.org* पर संपर्क कर सकते हैं

आप इस नंबर 044-42145666 या 9840078074, पर कॉल कर सकते है और आप अपने मंडल के सब्सक्रिप्शन प्रभारी से पूछ सकते है और शिकायत दर्ज करवा सकते है।

लेकिन इन सबसे पहले, इन बातों को सुनिश्चित कर लीजिए:

1. आपने अपने क्लब को *रोटरी न्यूज़* के शुल्क का भुगतान कर दिया हो।
2. क्लब ने रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट को शुल्क भेज दिया हो।
3. हो सके तो ईमेल और फोन नम्बर के साथ, सही पिनकोड वाला पूरा पता और आपका नाम हमें दे दिया गया हो।

कोविड महामारी की चुनौतियों के बावजूद, *रोटरी न्यूज़* ट्रस्ट की टीम नियमित रूप से हर महीने समय पर पत्रिका निकालती और आप तक पहुँचाती है। हम यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश कर रहे है कि हमारे सभी अभिदाताओं को समय पर पत्रिका मिल जाए। लेकिन हमें अभी भी शिकायतें मिल रही है कि आप में से कुछ लोगों को उनकी प्रतियां प्राप्त नहीं हो रही है।

उसके निम्न कारण हो सकते है:

- पते में परिवर्तन, जिसकी जानकारी हमें नहीं हो। यदि आपको आपकी प्रति प्राप्त नहीं हो रही है, तो कृपया हमें तुरंत एक मेल भेजें, अपना नवीनतम पता संलग्न करें, और यदि पता नहीं बदला है तो सही पिन कोड के साथ पुराना पता भेजिए। हमसे rotarynews@rosaonline.org पर संपर्क कीजिए।
- कृपया इस बात को याद रखें कि भले ही आपकी नवीनतम जानकारी रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय के पास हो, लेकिन हमारे पास उस डेटा तक पहुंच नहीं है। रो ई की गोपनीयता नीति के कारण, उस डेटा को प्राप्त करने के बारम्बार किए गए प्रयास विफल रहे है। इसलिए कृपया हमसे सीधे संपर्क कीजिए।
- आपको आपकी प्रति ना मिलने पर कृपया अपने डाकिए या पोस्ट ऑफिस से पता कीजिए।
- क्लब के अधिकारी, सदस्यों द्वारा क्लबों को छोड़ने या नए सदस्यों के जुड़ने की जानकारी हमसे नियमित रूप से साझा कीजिए। आपके द्वारा क्लब छोड़ चुके सदस्यों की जानकारी ना मिलने पर, उन्हें पत्रिका मिलती रहेंगी, वो भी बिना भुगतान किए। और जो नया सदस्य जुड़ता है, उसे अपने सब्सक्रिप्शन शुल्क का भुगतान करने के बावजूद भी पत्रिका नहीं मिलेगी, क्योंकि रोटरी न्यूज ट्रस्ट कार्यालय के पास उस नए सदस्य की कोई जानकारी नहीं होगी।
- इस बात का भी ध्यान रखिए कि किसी भी एक रोटरी पत्रिका - The Rotarian (जो अब रोटरी हो गई है), या एक क्षेत्रीय पत्रिका, की सदस्यता लेना सभी रोटेरियनों के लिए अनिवार्य है जैसा कि मैनुअल ऑफ़ प्रोसीजर में रो ई द्वारा निर्धारित किया गया है। ऐसा नहीं करने पर क्लब को निलंबित किया जा सकता है।

विषयसूची

12 बड़े सपने, बड़ी मुस्कान

रोटरी न्यूज़ के साथ बातचीत में नये रोटरी अध्यक्ष शेखर मेहता ने अपने अध्यक्षीय वर्ष के लिए अपने सपनों एवं प्राथमिकताओं को साझा किया।

28 रोटरी क्लब बेलथंगड़ी, रो ई मंडल 3181, की संवहनीय जल संरक्षण परियोजनाएं

क्लब ने कई नवोन्मेषी, पुनरूत्पादित और किफायती जल संरक्षण परियोजनाओं को क्रियान्वित किया है।

36 अन्वेषक, सुधारक, बागी

रोटरी न्यूज़ को दिए गए एक साक्षात्कीर में, निर्वाचित रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने अपनी व्यक्तिगत अनुभवों और अपनी रोटरी यात्रा को साझा किया।

46 शांत रहें, घर पर अलग रहें और अस्पताल के बिस्तरों को अनावश्यक रूप से न घेरें: डॉ वी रामसुब्रमण्यन

संक्रामक रोगों के विशेषज्ञ डॉ वी रामसुब्रमण्यन कोविड संक्रमण से निपटने के लिए तर्कसंगत दृष्टिकोण और कुछ सहानुभूति का आग्रह करते हैं।

56 भारतीय रोटेरियन कोविड की दूसरी लहर से लड़ने में मदद करते है

देश भर के रोटरी क्लब अपने समुदायों की मदद करने के लिए कोविड से संबंधित चुनौतियों से निपट रहे हैं।

60 रो ई मंडल 3190 में एक फोटो प्रतियोगिता विशाल परियोजनाओं के निधीयन में मदद करती है

एक रोटरी एक्शीन ग्रुप और इंटरनेशनल फेलोशिप, बेंगलुरू और उसके आसपास के क्षेत्रों में तीन पर्यावरणीय योजनाओं को समर्थन प्रदान कर रहे हैं।

68 बेहतर प्रकाश को चमकने दिया जाए

बाजार में उपलब्ध सर्वोत्तम ऊर्जा-बचत प्रकाश केविकल्प प्राप्त करने के लिए गो ग्रीन कॉलम के लिए सुझाव।

76 एक झूले पर स्थिरता

आइए वर्तमान महामारी में होने वाले परिवर्तनों और चुनौतियों का सकारात्मक रूप से सामना करें।

कवर पर : रो ई निर्वाचित अध्यक्ष शेखर मेहता और उनकी पत्नी राशि।

चित्र : हेमंत बंसवाल

साइकिल से विभिन्न देशों की यात्रा करने वाले चालक पर शानदार कहानी

पृष्ठभूमि में इंद्रधनुष के साथ मई की कवर फोटो इस महामारी के समय में आशा की किरण जगाती है। यह लेख इस युवक के कई देशों में साइकिल चलाने के जुनून को दर्शाता है। कोविड अग्निकुंड पर आपका संपादकीय हमारे देश की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है, जिसमें लगभग हर परिवार ने अपने किसी प्रियजन को खो दिया है। न्यासी प्रमुख के आर रवींद्रन का यह कहना सामयिक है कि हमें जरूरतमंदों को पहचानकर उनकी मदद करने के लिए रोटरी के MCH अनुदान का उपयोग करना चाहिए।

जयश्री का लेख *लड़कियों की एक दिन छुट्टी* वाकई में दिल को छू लेने वाला है। *WASH परियोजना का विस्तार,* शीला नांबियार का लेख *यह भी बीत जाएगा, पीस इन द एज ऑफ कैओस* किताब पर संध्या राव की समीक्षाऔर एस आर मधु का संगीत और माधुर्य,गो ग्रीन लेख के साथ कोयंबटूर का किचन गार्डन, कोट्टायम का डायलिसिस केंद्र, साइकिलिंग के लिए भारतीय फ़ेलोशिप जैसे लेख इस अंक को उल्लेखनीय बनाते है।

रोटरी के प्रति RIDE वेंकटेश की ईमानदारी की भावना को सब जानते है। विनीता वेंकटेश के बारे में जानकारी साझा करने के लिए धन्यवाद; मुझे उनकी शादी की तस्वीर बहुत पसंद आई।

नन नारायणन
रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट, मंडल 3000

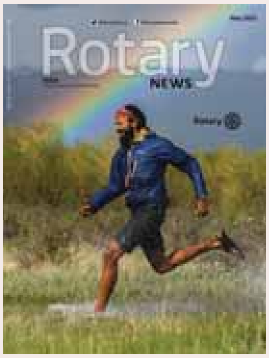

मई की कवर फोटो शानदार है और हम रोटेरियनों को रोटेरियन नरेश कुमार पर गर्व है जिन्होंने चेन्नई से लेकर हैम्बर्ग तक साइकिल चलाई। उनकी जीवन गाथा, यात्रा और यात्रा का उद्देश्य आकर्षक है। यह जानकर खुशी हुई कि उनकी साइकिल का नाम दया है।

संपादक का संदेश को रोनावायरस की दूसरी लहर के विनाशकारी प्रभावों की अच्छी तरह से व्याख्या करता है। जहाँ रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने विनिमय कार्यक्रमों की आवश्यकता पर उचित रूप से जोर दिया वहीं रो ई निदेशक निकट भविष्य में युवा सेवा परियोजनाओं को बनाए रखने का आह्वान करते है। न्यासी प्रमुख रवींद्रन सभी को एक प्रेरक संदेश देते है। RIDE ए एस वेंकटेश और विनीता की दिलचस्प जीवन गाथा को पढ़कर खुशी हुई। रंगीन तस्वीरों के साथ लेख हमारी संस्था के विकास के लिए अपनी रोटरी के किस्से कहानियां सुनाएं: जेनिफर जोन्स बहुत बढ़िया है।

पढ़कर खुशी हुई कि RIPE शेखर मेहता को उनके मानवीय कार्यों के लिए D Litt सम्मानित किया गया। कोट्टायम में रोटरी डायलिसिस केंद्र की स्थापना हेतुअथक परिश्रम करने वाले सभी लोगों को उनके अनुकरणीय कार्य के लिए बधाई।गीतों की बैलेरीना, गीता दत्त, पर लेखन उत्कृष्ट है। तस्वीरें रंगीन और आकर्षक है। मई अंक शानदार है।

फिलिप मुलप्पोने एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन,
मंडल 3211

युवा रोटेरियन नरेश कुमार के साइकिल अभियान पर लिखे गए लेख और RIPN जेनिफर जोन्स के किलिमंजारो पर्वत पर चढ़ाई करने के बारे में लिखित लेख के साथमई अंक उत्साहवर्धक था। रो ई निदेशक भरत पांड्या और रो ई निदेशक कमल संघवी के संदेश भी प्रेरक थे।

लेकिन RIDE ए एस वेंकटेश पर लिखा गया लेख सोने पर सुहागा था। उनका यह विचार कि हमें रोटरी को सभी के लिए पसंदीदा संगठन बनाना चाहिए विचारोत्तेजक है।

जी आर भास्करन
रोटरी क्लब विरुधनगर एलीट
मंडल 3212

पोलियो कर्मियों की हत्या

अफगानिस्तान में तीन पोलियो प्लस स्वयंसेवकों की निर्मम हत्या वास्तव में चौंकाने वाली है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उन दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें जिन्होंने मानवता के लिए प्रेमपूर्वक सेवा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

टोमी ईपेन, रोटरी क्लब अलेप्पी
मंडल 3211

मैं यह जानकर हैरान रह गया कि अफगानिस्तान में तीन पोलियो कार्यकर्ताओं की उग्रवादियों द्वारा हत्या कर दी गई। वे कार्यकर्ता बच्चों को पोलियो जैसी गंभीर बीमारी से अशक्त होने से बचाने हेतु अपना फर्ज़ निभा रही थी। हम रोटेरियन उन बहादुर आत्माओं को शांति देने के लिए भगवान से प्रार्थना करते है।

रामकृष्ण के
रोटरी क्लब पुट्टूर, मंडल 3181

रोटरी के विषयों के साथ-साथ मानव हित के विविध लेख मिलकर *रोटरी न्यूज़* को पढ़ने में आकर्षक बनाते है। *एक बैल जो अच्छी ख़बर लाता है* रोचक लेख था।दुख की बात है कि आजकल बैलों के गले से घंटियों की आवाज सुनाई नहीं देती क्योंकि यह चीज़ लुप्त हो रही जनजाति से संबंधित है।

गोपीनाथ
रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर
मंडल 3190

आपके पत्र

रो ई निदेशक कमल संघवी ने युवाओं में निवेश को लेकर सही संदेश दिया है। RYLA, युवा विनिमय, मॉडल यूएन असेंबली और अन्य रोटरेक्ट, इंटरेक्ट गतिविधियां जैसे हमारे कार्यक्रम दुनिया के सामने युवा पीढ़ी के प्रति हमरि देखभाल और चिंता साबित करने के अच्छे उदाहरण है। हमें इस बात पर गर्व कर सकते है कि हम युवाओं को उनकी प्रतिभा का पोषण करने में मदद कर रहे है ताकि वे अपने जीवन में सफल हो सकें। कोविड महामारी पर आपकी संपादकीय, हमारे विभिन्न विनिमय कार्यक्रमों पर रो ई अध्यक्ष के विचार पढ़ने में दिलचस्प है।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन
मंडल 3000

लेख लड़कियों की एक दिन की छुट्टी मेंमुझे रो ई मंडल 3080 की परियोजना छोटी सी ख्वाहिश के बारे में पढ़कर वास्तव में खुशी हुई। एक अनाथालय की नन्हीं परियों के छोटे-छोटे सपनों को पूरा करके उनके चेहरे पर मुस्कान लाना अद्भुत कार्य है।

उदय सिंह राजपूत
रोटरी क्लब बेलगाम मिडटाउन
मंडल 3170

प्रोजेक्ट सुंदरी के तहत 100 युवतियों को प्रशिक्षण देने हेतु रो ई मंडल 3232 द्वारा की गई पहल पर अप्रैल की कवर स्टोरी अत्यधिक सराहनीय है।

जैसा कि RIPE शेखर मेहता ने उल्लेख किया है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम रोटेरियन प्रभावशाली परियोजनाओं पर ध्यान दें। कुछ क्षेत्र जिन्हें संबोधित किए जाने की आवश्यकता है उनमें सामुदायिक सशक्तिकरण,सामाजिक और आर्थिक विकास को सुगम बनाना और महिला उद्यमियों को तैयार करना शामिल है।

राम भटनागर
रोटरी क्लब ठाणे प्रीमियम, मंडल 3142

रो ई अध्यक्ष-मनोनीत जेनिफर जोन्स का लिंग संतुलन लाने का लक्ष्य प्रशंसनीय है (संपादकीय, अप्रैल अंक)। लेकिन न्यूज़ीलैंड की प्रधान मंत्री जैसिंडा आर्डर्न और जर्मनी की एंजेला मर्केल का आदर्श नेताओं के रूप में उदाहरण देना विवेकपूर्ण नहीं है। हमारे देश में मुश्किल से 1-2फीसदी महिला सांसद और विधायक है। नारी शक्ति को राष्ट्र की ताकत का आधार बनना चाहिए क्योंकि उन्होंने सभी क्षेत्रों में अपनी काबिलियत साबित की है लेकिन एक पुरुष प्रधान समाज नहीं चाहता कि महिलाएं स्वायत्त और सक्षम हों।

कोई भी देश अपनी आधी आबादी की उपेक्षा करके आगे नहीं बढ़ सकता। अगर इस कहावत में रत्ती भर भी सच्चाई है, हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है, तो वे एक बड़ी भूमिका की हकदार है।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूपनगर मंडल 3080

मुझे LBW लेख बार-बार स्कूल बदलने के जोखिम पसंद आयौ। मैं 70 वर्ष का हूँ और हाल ही में मुझे अपने पूर्व सहपाठियों का एक समूह मिला है। मैंने उनसे मुझे शामिल करने के लिए कहा और उन्होंने मुझसे मेरी कक्षा के कुछ लड़कों के नाम देने को कहाजो मुझे याद नहीं थे।

वे मुझे उस समूह में शामिल करने में हिचक रहे थे। लेकिन जब मैंने बताया कि मैं कुछ स्कूल पुस्तकालय की किताबें दिखा सकता हूँ जो मैंने वापस नहीं कीतो उन्होंने तुरंत मुझे उस समूह का सदस्य बना दिया!

सतीश व्यास
रोटरी क्लब भावनगर
मंडल 3060

हमारी पृथ्वी और पर्यावरण के संरक्षण पर रो ई अध्यक्ष के विचार सामयिक है। लेख *लड़कियों के लिए एक दिन की छुट्टी* रोटरी साथ ही रो ई मंडल 3232 द्वारा शारिरिक रूप से अक्षम 100 युवतियों को प्रशिक्षण दिया जाना प्रशंसनीय है।

आय-सृजन में मदद करने वाले इस प्रशिक्षण से इन लड़कियों को लाभ होगा। एक और अच्छी तरह से शोध किया गया लेख गंगा नदी के बारे में था। हम सभी को यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे शहरों और कस्बों की नदियाँ और नाले प्रदूषित न हों। कुल मिलाकर एक संतुलित अंक।

विनायक देओधर
रोटरी क्लब नासिक
मंडल 3030

पानी की बचत तभी संभव है जब हम अपनी मूलभूत आवश्यकता और नहाने, धोने आदि गतिविधियों के लिए एक दिन में पानी की आवश्यक मात्रा को समझें। विदेशों में नहाने के लिए एक बाल्टी पानी का उपयोग करने जैसी कोई प्रणाली नहीं है। उन देशों में, लोग केवल शॉवर में नहाते है जिससे पानी की बचत होती है।

गोविंद दास अग्रवाल,
रोटरी क्लब बेलूर, मंडल 3291

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details, along with hi-res photos, to **rotarynewsmagazine@gmail.com.**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com.** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

एक नई रोमांचक पोस्ट-कोविड दुनिया

जनवरी 2020 में, जब मैंने अपनी अध्यक्षीय थीम, *रोटरी अवसरों को खोलती है* की घोषणा की और उन परिवर्तनों की बात की, हममें से किसी को भी अंदाजा नहीं था कि परिवर्तन इतनी जल्दी आएगा। लेकिन मैं हमेशा चुनौतियों को अवसरों के रूप में देखने में विश्वास करता हूं। इस वर्ष, हमने रोटरी को एक नयापन देने के लिए नए अवसरों को ग्रहण किया है। कई वर्षों से हम रोटरी को लचीला और अनुकूल बनाने के तरीकों पर चर्चा करते आ रहे है, और हमने कुछ प्रयोग भी किए थे। इस साल, हम सभी ने प्रयोग किया - और सफल हुए! ऑनलाइन बैठकें अब नियमित रूप से होती हैं क्योंकि क्लब दुनिया भर से मेहमानों को आमंत्रित करते है। सुसैन और मुझे दुनिया भर के रोटरी परिवार के सदस्यों से मिलना पसंद है लेकिन हम पिछले एक साल से आप से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल सके। लेकिन मेरे लिए, यह रोटरी का अनुभव करने का एक नया तरीका था। हमने आभासी रूप से विश्व की यात्रा की। मैं निश्चित रूप से हजारों लोगों से मिला जिनसे मैं शायद ही कभी मिल पाता। मैंने अध्यक्ष के रूप में इवेंस्टन में अपने कार्यालय में कभी पैर नहीं रखा, फिर भी हमने यात्रा की लागत में कटौती करते हुए इस काम को पूरा करने के नए तरीके खोजे।

यह वो रोटरी है जिसका अनुभव हमने 2020-21 में किया था: कुशल, अनुकूलनीय और रचनात्मक। अगला कदम यह होगा कि हमें महामारी से पहले वाले तरीकों को नहीं अपनाना है। हमें आगे बढ़ना होगा। अपने सदस्यों को नए अनुभव और अवसर प्रदान करने के लिए जो भी हमने सीखा हैउसे लागू करें, जैसे कि एक नियमित विकल्प के रूप में ऑनलाइन उपस्थिति। हमें अपने क्लबों को मजबूत बनाए रखने के लिए प्रत्येक स्तर पर एक युवा, अधिक विविध रोटरी की आवश्यकता है। विविधता के मायने हर क्षेत्र के लिए अलग होते है, लेकिन मैं आपको सभी पृष्ठभूमि के लोगों का स्वागत करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। एक और कदम जो हम सभी उठा सकते है वो है महिलाओं की संख्या और हर जगह उनकी भूमिका में वृद्धि करना। मुझे खुशी है कि अब बहुत से लोग रोटरी और रोटरेक्ट क्लबों को बराबर नज़रों से देखते है। हम जो भी करते है उसमें रोटरेक्ट क्लबों को आमंत्रित करके इस दिशा में आगे बढ़ते रहें। युवा नेतृत्वकर्ताओं तक पहुंचने का कोई भी अवसर न छोड़ें, बल्कि रोटरेक्ट के साथ साझेदारी करें और हमारी अनेक नई पहलों में निवेश करें।

निष्पक्ष वितरण और गलत सूचनाओं का मुकाबला करके रोटरी कोविड-19 टीकाकरण अभियानों का समर्थन करने का जो कार्य कर रही है मुझे उसपर बहुत गर्व है। लेकिन पोलियो को खत्म करने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते है उसे हमें ज़ारी रखना चाहिए। और अब हमारे पास एक नए ध्यानाकर्षण क्षेत्र - पर्यावरण- पर काम करने का अवसर है। जब मैंने पहली बार यह घोषणा की थी कि रोटरी *अवसरों को खोलती है* तब से लेकर आज दुनिया काफी बदल गई है। इस वर्ष हमने रोटरी को जैसे अपडेट किया है उसपर हम सभी गर्व कर सकते है। इस राह पर चलते रहें, हमेशा हमारे क्लबों और उन क्लबों में हमारे दोस्तों का ख्याल रखें। वे बहुमूल्य है,और वे रोटरी को जीवंत और संपन्न बनाते है।

सुसैन और मैं स्वयं से ऊपर सेवा के नए अर्थ को बताने वाले इस विशेष वर्ष के दौरान संगठन की सेवा करने के सभी अवसरों को पाकर आभारी महसूस कर रहे है। हम रोटरी को ऐसे लोगों के समुदाय के रूप में देखते है जो अपने मूल्यों को कार्यात्मक रूप देती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन असाधारण समयों में हमें सेवा पर अधिक जोर देना चाहिए। हमारे पास दुनिया को यह दिखाने का उचित अवसर है कि रोटेरियनों के लिए स्वयं से ऊपर सेवा का क्या अर्थ है। उन्हें हाथ से न जाने दें और बड़ी चीजों को हासिल करने के लिए उनका लाभ उठाएं। और जब हम नवीन विचारों को अपनाते है, तो हमारे मस्तिष्क और हमारे दिल के दरवाजे भी खुल जाते है। याद रखें कि रोटरी में हम जो कुछ भी करते है वह किसी और के लिए,किसी अन्य जगह पर एक और अवसर खोलता है।

Holger Knaack

होल्गर नेक

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

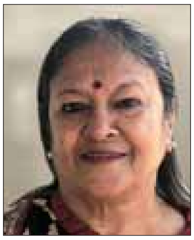

दूर से शोक मनाने का सदमा

भारत में कोरोना महामारी की दूसरी लहर के रूप में आई तबाही की वजह से, हमारे जानने वाले अधिकांश परिवार व्यक्तिगत नुकसान से जूझ रहे है। एक स्वस्थ व्यक्ति की असामयिक मृत्यु का नुकसान। वायरस के इस अचानक हमले, जो अब जीवन को तबाह करने के लिए नए रूपों एवं अवतारों में वापस आया है, ने हमारे देश की शानदार, कुशल एवं आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली को किसी गौरवशाली प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा की तरह बना दिया है। यह बात कितनी भी कड़वी लगे, लेकिन सांस लेने के लिए संघर्ष करने वाले एवं ऑक्सीजन की जरूरत वाले व्यक्ति के रिश्तेदारों को ऐसा ही लगता है, जब उन्हें अनेक अस्पतालों से लौटा दिया जाता है। एक बेड देने की बात तो भूल जाइए, जब महामारी ने दैत्याकार रूप लेकर हमारे दैनिक संक्रमण दर को 4 लाख के पार पहुँच दिया था, तब दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई आदि के अस्पताल अपने रोगियों को पर्याप्त ऑक्सीजन तक प्रदान करने में असमर्थ थे। ऑक्सीजन सपोर्ट और अस्पतालों के बाहर बेड की प्रतीक्षा करने वालों की तो बात तो छोड़िए, उनमें से कुछ लोग जो पहले से ही भर्ती थे और ऑक्सीजन पर थे, उनकी मृत्यु इसलिए हो गई क्योंकि कुछ अस्पतालों में इस जीवन रक्षक वस्तु की कमी हो गई थी।

रोटरी न्यूज ट्रस्ट परिवार को भी बख्शा नहीं गया। मेरी टीम की सदस्य चित्रा ने अपने पति को खो दिया; वह केवल 48 वर्ष के थे और तमिलनाडु सरकार में उनकी पक्की नौकरी थी। वह अब अपने कॉलेज जाने वाले बेटे के लिए एकल अभिभावक होने की गंभीर चिंता का सामना कर रही है। के विश्वनातन ने अपनी मां को खो दिया, और प्रतिश ने अपने पिता को खो दिया। तीनों, जिनके जीवन को कोविड वायरस ने इतनी क्रूरता से छीन लिया, अन्यथा पूरी तरह से स्वस्थ थे। मुझे यकीन है कि आप में से अधिकांश लोग इस भयानक घड़ी में किसी प्रियजन के खोने का शोक मना रहे होंगे।

लेकिन कोरोना वायरस से होने वाली मौतों और लॉकडाउन के कारण देशों और यहां तक कि राज्यों के बीच सीमाओं की सीलिंग का जो एक विचित्र नतीजा हमारे सामने आया वह यह है कि लोग दूर से ही शोक मनाने के लिए मजबूर हो रहे है। और Zoom मीटिंग पर अपने प्रियजनों को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे है। ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका और अन्य देश, जिन्होंने भारत के लिए अपनी सीमाएं बंद कर दी है, में रहने वाले हजारों भारतीयों, जिन्होंने अपने माता-पिता, भाई-बहन, चाचा, भतीजे, भतीजी और करीबी दोस्तों को खो दिया है, को अपने किसी प्रियजन को शारीरिक रूप से अलविदा कहने के लिए ना आ पाने की यातना झेलनी पड़ी है। और इस बेड़ियों में जकड़ने वाले हम अकेले नहीं है।

मेरे सबसे पसंदीदा लेखकों में से एक, चिमामांडा नगोज़ी अदिची, ने पिछली जून में हुए अपने पिता के निधन पर अपने दुख को अत्यधिक भावात्मक एवं मार्मिक शब्दों में उनकी नवीनतमलघु पुस्तक *Notes on Grief* के माध्यम से प्रकट किया है। वह नाइजीरिया में अपने गृहनगर में थे, और वह अमेरिका में। लॉकडाउन के कारण सीमाएं बंद थी; 7 जून को वह बिल्कुल ठीक थे और 10 जून को वह चल बसे।

"मैं बर्बाद हो गई। उन व्यक्तियों के बारे में सोच कर मेरे तन-बदन में आक्रोश की सुई चुभती है जो 88 वर्ष से अधिक उम्र के है, मेरे पिता से बड़े, और जीवित एवं स्वस्थ है। मेरा क्रोध मुझे डराता है, मेरा भय मुझे डराता है, और कहीं न कहीं शर्मिंदगी भी है- मैं इतनी क्रोधित और इतनी भयभीत क्यों हूँ? मुझे सोने जाने और जागने से डर लगता है, आने वाले कल और आने वाले सभी कलों से डर लगता है। यह दुनिया कैसे चलती रहती है, सांस लेती रहती है, जबकि मेरी आत्मा स्थायी रूप से बिखर चुकी है? मैं अमेरिका में फंसी हुई हूँ, मेरी हताशा एक छाले की तरह है जोइस खबर की तलाश कर रही है कि नाइजीरियाई हवाई अड्डे कब खुलेंगे। यहां तक कि नाइजीरियाई अधिकारियों को इसके बारे में पता नहीं है।"

यदि आप पढ़ सके तो अदिची की *Notes on Grief* को पढ़िए... यह आपको अपने शोक से निपटने में मदद करेगा।

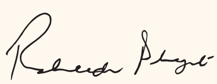

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG R Balaji Babu
RI Dist 2982	DG K S Venkatesan
RI Dist 3000	DG A L Chokkalingam
RI Dist 3011	DG Sanjiv Rai Mehra
RI Dist 3012	DG Alok Gupta
RI Dist 3020	DG Muttavarapu Satish Babu
RI Dist 3030	DG Shabbir Shakir
RI Dist 3040	DG Gajendra Singh Narang
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Rajesh Agarwal
RI Dist 3060	DG Prashant Harivallabh Jani
RI Dist 3070	DG CA Davinder Singh
RI Dist 3080	DG Ramesh Bajaj
RI Dist 3090	DG Vijay Arora
RI Dist 3100	DG Manish Sharda
RI Dist 3110	DG Dinesh Chandra Shukla
RI Dist 3120	DG Karunesh Kumar Srivastava
RI Dist 3131	DG Rashmi Vinay Kulkarni
RI Dist 3132	DG Harish Motwani
RI Dist 3141	DG Sunnil Mehra
RI Dist 3142	DG Dr Sandeep Kadam
RI Dist 3150	DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy
RI Dist 3160	DG B Chinnapa Reddy
RI Dist 3170	DG Sangram Vishnu Patil
RI Dist 3181	DG M Ranganath Bhat
RI Dist 3182	DG B Rajarama Bhat
RI Dist 3190	DG B L Nagendra Prasad
RI Dist 3201	DG Jose Chacko Madhavassery
RI Dist 3202	DG Dr Hari Krishnan Nambiar
RI Dist 3211	DG Dr Thomas Vavanikunnel
RI Dist 3212	DG P N B Murugadoss
RI Dist 3231	DG K Pandian
RI Dist 3232	DG S Muthupalaniappan
RI Dist 3240	DG Subhasish Chatterjee
RI Dist 3250	DG Rajan Gandotra
RI Dist 3261	DG Fakir Charan Mohanty
RI Dist 3262	DG Saumya Rajan Mishra
RI Dist 3291	DG Sudip Mukherjee

Printed by P T Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by P T Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रो ई निदेशकों

आमने-सामने

ज़ोन 4, 5, 6, 7 में रोटरी में शामिल पुरुषों एवं महिलाओं ने वास्तव में इस महामारी के दौरान इस अनजान रास्ते पर चलकर लोगों की मदद करने में अपना तन-मन लगाया है, और ऐसा वे उद्यम एवं नवीनता की भावना से कर रहे है। रोटरी हमें देखने के लिए आंखें, प्यार करने के लिए दिल और सेवा करने के लिए हाथ देती है। देखने वाली आंखें, प्यार करने वाले दिल और रोटेरियन के हाथों ने जिन ज़िंदगियों को छुआ, जिन बदलावों को वे लाए, और इनके मद्यम से अर्जित की गई अनेकों उपलब्धियों, अनुभवों एवं यादों ने इन दो सालों को खास बना दिया है। रोटेरियनों, आपके द्वारा की जाने वाली सेवा के लिए धन्यवाद। टॉर्चबियर गवर्नर्स और फिर ट्रेलब्लेज़र गवर्नर्स ने जोश एवं उत्साह के साथ आगे रहकर नेतृत्व किया है। गवर्नरों एवं उनके दल के दोनों बैचों को शाबाशी!

रोटरी न्यूज़ के पन्नों के माध्यम से आप सभी से सीधे संवाद करने में सक्षम होना एक विशेष अनुभूति रही है। यह अच्छा महसूस करवाने वाली पत्रकारिता का सर्वश्रेष्ठ नमूना है, जो हमारे लिए देखभाल करने और बांटने की; प्यार एवं करुणा की कहानियां ला रहा है। संपादक रशीदा भगत के नेतृत्व में *रोटरी न्यूज़* के कर्मचारियों को उनके द्वारा किए गए महान कार्य के लिए बधाई।

इस महामारी ने हमें दिखाया है कि परिवर्तन ही एकमात्र स्थिर चीज़ है। जैसे-जैसे हम सीखे गए सबकों के साथ आगे बढ़ रहे है, हम आभासी प्रारूप का उपयोग करने के अधिक एवं बेहतर तरीकों की खोज कर रहे है - चाहे वह फेलोशिप या बोर्ड मीटिंग हो, आभासी युवा विनिमय कार्यक्रम हो या फिर रोटरी प्रशिक्षण कार्यक्रम। वैयक्तिक एवं आभासी प्रारूप का संयोजन नया सामान्यप्रतीत होता है। इससे हमें दोनों प्रारूपों का सर्वश्रेष्ठ मिलता है। मुझे लगता है कि यहीं रोटरी का भविष्य है।

माधवी और मैं अनेक परियोजनाओं और गतिविधियों एवंरोटेरियनोंऔर उनके परिवारों द्वारा लुटाए गए प्यार और स्नेह को देखकर बहुत धन्य महसूस करते है। हम प्रत्येक रोटेरियन और रोटरी के परिवार को उनकी उदारता, गर्मजोशी और दया के लिए धन्यवाद देते है। इमर्सन के शब्दों में मुझे सच्चाई का एहसास हुआ है: "यह जीवन के सबसे खूबसूरत पुरस्कारों में से एक है कि कोई भी व्यक्ति खुद की मदद किए बिना दिल से दूसरे की मदद करने की कोशिश नहीं कर सकता।" जिस व्यक्ति ने मेरी सबसे अधिक मदद की वह मैं हूं। अब जब मैं रो ई निदेशक की जिम्मेदारी आगे सौंपने जा रहा हूँ, मुझे एहसास हुआ कि ये सुखद यादें, उनकी सुहानी खुशबू के साथ, आने वाले अनेक वर्षों तक मेरे साथ रहेंगी। मैं आगामी निदेशकों को रोटरी सेवा में दो महत्वपूर्ण वर्षों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

जहाँ अत्यधिक प्रेम होता है, वहाँ हमेशा चमत्कार होते है। रोटरी के चमत्कार को साझा करें। रोटरी द्वारा नए अवसरों को खोलने के साथ ही, आइए हम जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा करें।

रोटरी का आनंद ले, स्वयं आनंदित रहे।

डॉ भरत पांड्या

रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

आभासी दुनिया के नए सामान्य

कोरोनावायरस के बाद एक नए युग की शुरुआत हुई है, जिससे लैंगिक समानता आई है और घर एवं परिवार की जिम्मेदारियाँ साझा होने लगी है; संकुचित मानसिकता खत्म हो रही है और महिलाओं के लिए शिक्षा एवं कौशल विकास के लिए खुल रहे है। यह राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है, और इससे रोटेरियनों को बाजी पलटने और *प्रोजेक्ट डिग्निटी* - महिलाओं/विधवाओं और विधवाओं के बच्चों के कौशल विकास - जैसी विविध परियोजनाओं को शुरू करने का अवसर मिलता है।

हम रोटेरियन पीछे नहीं हटे है, और कई तकनीकी माध्यमों की बदौलत इस दुनिया में लगातार अपना स्थान हासिल करने की कोशिश कर रहे है। आभासी बैठकों - नया सामान्य - का आयोजन किया जा रहा है, उसी तरह प्रशिक्षण और फेलोशिप का भी आयोजन किया जा रहा है। दुनिया के इस विशाल परिवर्तन के साथ, रोटेरियनों को सीखने का पर्याप्त अनुभव प्राप्त हो रहा है, वे बाधाओं को तोड़ते हुए परिवर्तन के अनुकूल ढलने की कोशिश कर रहे है।

फैलोशिप रोटरी के मुख्य मूल्यों में से एक है। जून रोटरी फेलोशिप का महीना है। यह वो समय है जब रोटेरियन, उनके जीवनसाथी और रोटारेक्टरों के समूह उपयुक्त मनोरंजक गतिविधियों में एक समान रुचि साझा करने के लिए शामिल होते है। अन्य पेशेवरों के साथ परिचित होने और सेवा के नए अवसरों को तलाश करके हमारे व्यावसायिक विकास को आगे बढ़ाने का यह एक अच्छा अवसर है। आभासी माध्यम हमें फेलोशिप और दोस्ती के लाभों को अर्जित करने के नवीन तरीकों को खोजने के महान अवसर प्रदान करते है। तो आइए पुरानी दोस्ती को फिर से ताजा करें और नए मित्र बनाएं, दुनिया से जुड़ते हुए रोटरी की विश्वव्यापी फैलोशिप का आनंद लें।

मैं सभी DGE की सराहना करता हूँ कि वह आभासी मंचों पर अपने सभी प्रशिक्षण और फेलोशिप बैठकें आयोजित कर रहे है और तत्परता के साथ कुशलतापूर्वक परिवर्तनों के अनुकूल ढल रहे है। मैंने कई नवीन फेलोशिप बैठकें - अंताक्षरी, तंबोला, संगीत और नृत्य प्रतियोगिताएं, नागरिक व्यक्तित्वों के साथ मुलाकात - आदि देखी है। यह निश्चित रूप से कुछ नया करने का एक फलदायी अभ्यास है।

मैं सभी DGयों को उनकी OCV जारी रखने और उसे आभासी रूप से पूरा करने एवं 100 प्रतिशत सदस्यता अवरोधन के साथ अपने सेवा वर्ष को समाप्त करने की चुनौती देता हूँ। अपने सभी सदस्यों तक पहुंचने के लिए आभासी मंचों का उपयोग करें, उनमें सेवा के जुनून को जगाएं और उन्हें प्रेरित करें क्योंकि दुनिया को हमारी मदद की आवश्यकता है। जून में अपने क्लबों में तीन नए सदस्यों को शामिल करने के लिए अपने अध्यक्षों को प्रोत्साहित करें। याद रखें कि सदस्यता ही हमारी एकमात्र स्थायी संपत्ति है।

अकेले हम बहुत कम कर पाते है, साथ मिलकर हम बहुत कुछ कर सकते है। हमें मजबूत बनने के लिए एक साथ आना होगा और एकजुट होकर अपनी भूमिका निभानी होगी।

"एक रंग से इन्द्रधनुष नहीं बनता; एक पेड़ से जंगल नहीं बनता और एक नेता कोई परिवर्तन नहीं ला सकता। मुश्किल की इस घड़ी में यह नवाचार और सहयोग ही है जो हमें किसी भी जीत की ओर ले जाता है; यह दृढ़ता ही सफलता की कुंजी है।"

कमल संघवी

रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPE Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya *Chairman, Rotary News Trust*	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250
RIDE A S Venkatesh	RI Dist 3232
RIDE Dr Mahesh Kotbagi	RI Dist 3131

Executive Committee Members (2020–21)

DG Sanjiv Rai Mehra Chair – Governors Council	RI Dist 3011
DG Sudip Mukherjee Secretary – Governors Council	RI Dist 3291
DG Sangram Vishnu Patil Secretary – Executive Committee	RI Dist 3170
DG Prashant Harivallabh Jani Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3060
DG S Muthupalaniappan Member – Advisory Committee	RI Dist 3232

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

आगे बढ़ने का समय

विंस्टन चर्चिल ने एक बार कहा था, "मुझे भविष्य को लेकर कोई भय नहीं है।" आइए हम इसके ओर आगे बढ़े, जो पर्दे हमें इसे नहीं देखने देते उन्हें हटा दें, और विश्वास एवं साहस के साथ आगे बढ़ें।

चर्चिल अपने कुछ सबसे प्रसिद्ध भाषणों में इस वाक्यांश का उपयोग करते थे "आइए एक साथ मिलकर आगे बढ़े।" उनके पास आगे बढ़ने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था क्योंकि वह उनके युद्ध पस्त देश का साहस से नेतृत्व कर रहे थे।

प्रत्येक पीढ़ी को अपने हिस्से की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है; हम अपने हिस्से की चुनौतियों का सामना कर रहे है,एक भी बार इसके कारण डगमगाए नहीं। एक ऐसे वर्ष में जब लोग एक दूसरे से मिलने में असमर्थ थे, परिवार एकांत में रह रहे थे, और व्यवसाय फलने-फुलने के लिए संघर्ष कर रहे थे, बावजूद इसके हम कई क्षेत्रों में एक साथ आगे बढ़ने में कामयाब रहे। रोटरी संस्थान के अनुदानों के माध्यम से, क्लब और मंडल अपने महामारी प्रभावित समुदायों के लिए रचनात्मक समाधान लाए है। मार्च 2020 से, संस्थान ने कोविड-19 से संबंधित पहलों के लिए 34 मिलियन डॉलर से अधिक के अनुदान स्वीकृत किए है।

हमारे वैश्विक अनुदानों की मांग अधिक थी। वे इतने लोकप्रिय थे कि हमें 1 जुलाई से लागू होने वाली अनुदान निधीयन नीति में बदलाव करने पड़े ताकि संसाधनों के साथ मांग को संतुलित किया जा सकें जिससे अधिक से अधिक मंडल भाग ले सकें।

इस वर्ष, रोटरी संस्थान ने नए कदम उठाते हुए कुछ साहसिक फैसले लिए: संस्थान ने एक ध्यानाकर्षण क्षेत्र के रूप में पर्यावरण को मान्यता देकर अपनी पहुंच का विस्तार किया है और एक रोटेरियन के नेतृत्व वाले कार्यक्रम को हमारा पहला प्रोग्राम्स ऑफ स्केल अनुदान स्वीकृत किया जिसका उद्देश्य जाम्बिया में गंभीर रूप से प्रभावित समुदायों में मलेरिया को कम करना है।

भले ही महामारी के कारण 2020 में कुछ महीनों के लिए हमारि पोलियो प्रतिरक्षण गतिविधियां रुकी, साल के बीच से वे फिर से शुरू हो गई थी। हम अंततः अपनी यात्रा में एक बड़ा कदम आगे बढ़ाने में सक्षम हुए: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने घोषणा की कि अफ्रीकी क्षेत्र अब इस खतरनाक पोलियो वायरस से मुक्त है।

और ओटो एवं फ्रेन वाल्टर फाउंडेशन ने मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीकी क्षेत्र में रोटरी शांति केंद्र की स्थापना हेतु पूर्ण निधीयन के लिए हमारे साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह स्वागत योग्य विकास रोटरी को एक ऐसे क्षेत्र में मूर्त योगदान देने का अवसर देता है जहाँ स्थायी शांति इतनी भ्रांतिजनक रही है।

हमारि उपलब्धियां इस बात की याद दिलाती हैं कि रोटरी हर जगह अच्छा काम करने के लिए एक बड़ी ताकत है और आप ही कारण है जो हम रुके नहीं। अब तक हमने 282 मिलियन डॉलर से अधिक जुटा लिए है और हम 410 मिलियन डॉलर जुटाने के लक्ष्य की ओर अग्रसर है। इस साल हमने जो महान काम किया है, और जो काम हम अगले साल और आगे के वर्षों में करेंगे उसके लिए आपका समर्थन आवश्यक है। संस्थान को पोषित करके दुनिया को हमारा सर्वोत्तम उपहार देने के लिए मैं रोटरी संस्थान के न्यासियों की ओर सेआप सभी का तह दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

के आर रवींद्रन

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

मानव जाति की बेहतर सेवा करने के लिए उदारतापूर्वक दान करें

ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो जब हम पोलियो उन्मूलन के इतने करीब थे। आज, हम एक ऐसे वायरस से अभिभूत है जो तेजी से परिवर्तित हो सकता है, जो किसी भौगोलिक सीमा को नहीं मानता और जो किसी को नहीं बख्शता। हम सभी को प्रियजनों एवं करीबी दोस्तों के खोने का सामना करना पड़ा है। यहां तक कि जब मैं यह लिख रहा हूं, कुछ क्षेत्रों में ऐसे लोग होंगे जिन्हें ऑक्सीजन और गंभीर देखभाल की जरूरत होगी और जो हताश होकर अस्पताल में बिस्तरों की तलाश कर रहे होंगे।

उपन्यासकार शैनन एल्डर ने कहा, "इस धरती पर आप जो सबसे महत्वपूर्ण काम कर सकते हैवह है लोगों को यह बताना कि वे अकेले नहीं है।" एक बड़े मानवीय संकट के इस समय में, हमें उन लोगों तक पहुंचना चाहिए और जो भी मदद और सहायता हम प्रदान कर सकते है, उन्हें प्रदान करना चाहिए। अक्सर, सहायता उपलब्धता की जानकारी हो सकती है - अस्पताल में बिस्तर की, ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर की, महत्वपूर्ण देखभाल, दवाइयों, आदि की। "जब एक व्यक्ति तूफान से गुजर रहा हो, तो आपकी मौन उपस्थिति भी लाखों खाली शब्दों से अधिक शक्तिशाली होती है।"

जरूरत की इस घड़ी में, रोटरी फाउंडेशन और समस्त भारत के रोटेरियनों ने समुदाय के सभी वर्गों को सहायता प्रदान करने के लिए संसाधन जुटाए है। जैसा कि एम एस धोनी कहते है, "एक अच्छे समय, जहां सब कुछ आपके हिसाब से होता है, की तुलना में आप कठिन दौर से गुजरते समय बहुत कुछ सीखते है।" अब पहले से कहीं अधिक, हमें दूसरों के लिए वहाँ होना चाहिए - न केवल अपने करीबी और प्रियजनों के लिए बल्कि संपूर्ण मानव जाति के लिए। जैसा कि रो ई अध्यक्ष निर्वाचित शेखर मेहता समुचित रूप से कहते है *जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा* करें - और यह रोटरी और TRF की वजह से ही है कि हम न केवल भारत में, बल्कि दुनिया भर में भी सेवा करना, जीवन परिवर्तित करना और अच्छा करना जरी रख पा रहे है।

इस महामारी ने हमारे सामने उस कड़वी सच्चाई को लाकर खड़ा कर दिया हा जो एलेक्जेंडर पोप ने अपनी घोषणा में कहीं थी: "कोई भी आदमी आत्मनिर्भर नहीं होता; हर एक आदमी की मृत्यु मुझे कम कर देती है।"

रोटरी फाउडेशन को दिए गए प्रत्येक दान का उपयोग जरूरतमंद लोगों की मदद करने और इस तरह दुनिया में अच्छा करने के लिए किया जाएगा। तो कृपया अपने दिल और बटुए को खोलिए और उदारतापूर्वक दीजिए।

गुलाम ए वाहनवटी
ट्रस्टी, द रोटरी फौउंडेशन

मध्य पूर्व या उत्तरी अफ्रीका में नए रोटरी शांति केंद्र के निधीयन के लिए 15 मिलियन डॉलर का उपहार

ओटो और फ्रांसिस दूनन वाल्टर

ओटो और फ्रैन वाल्टर फाउंडेशन ने रोटरी संस्थान को मध्य पूर्व या उत्तरी अफ्रीका में एक रोटरी शांति केंद्र शुरू करने के लिए 15.5 मिलियन डॉलर देने का वादा किया है। यह नया केंद्र क्षेत्र में शांति और विकास के मुद्दों पर केंद्रित एक पेशेवर विकास प्रमाणपत्र कार्यक्रम प्रदान करेगा। बूथबेहार्बर, मेन, यूएसए,में स्थित वाल्टर फाउंडेशन का यह उदार उपहारकेंद्र की स्टार्टअप लागतों और परिचालन खर्चों के साथ ही एक अक्षय निधि का निधीयन करेगाजो 40 छात्रों को अनंतकाल तक शांति फैलोशिप प्रदान करेगा ताकि वे वहाँ हर साल अध्ययन कर सकें।

TRF 2024 में ओटो और फ्रैन वाल्टर रोटरी पीस सेंटर की मेजबानी के लिए एक भागीदार संस्थान का चयन करेगाऔर उम्मीद है कि पहले रोटरी शांति मित्र जनवरी 2026 से वहाँ अध्ययन शुरू कर सकते है।

ओटो और फ्रैन वाल्टर ने शांति और अन्य धर्मार्थ कारणों को बढ़ावा देने के लिए अपने पारिवारिक संस्थान की नींव रखी,और उनकी मृत्यु के बाद भी उनका मिशन जारी है। ओटो रोटरी क्लब न्यूयॉर्क सिटी के एक सदस्य थे।

2003 में ओटो औरफ्रैन दोनों की मृत्यु होने के बाद, एक कानूनी सलाहकार और मित्र, रोटेरियन फ्रैंक हेलमैन उनके संस्थान के अध्यक्ष और निदेशक बने। उन्होंने और उनकी पत्नीमार्था, जो संस्थान की वर्तमान अध्यक्ष है, ने TRF को 15.5 मिलियन डॉलर का उपहार देकर मदद की। दोनों पति-पत्नी रोटरी क्लब बूथबे हार्बर के सदस्य है।

"वाल्टर फाउंडेशन ओटो एवं फ्रैन और उनकी विरासत को याद करने के लिए मध्य पूर्व - दुनिया का एक हिस्सा जो संघर्ष में बर्बाद हो गया -में एक रोटरी शांति केंद्र स्थापित करने से बेहतर तरीके की कल्पना नहीं कर सकता," मार्था कहती है जो TRF की शांति प्रमुख उपहार पहल समिति की अध्यक्ष के रूप में भी कार्य करती है। ■

बड़े सपने, बड़ी मुस्कान

शेखर मेहता

रशीदा भगत

जो भी व्यक्ति रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर, रो ई मंडल 3291,से तालुक रखने वाले नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता को देखता है या उनके साथ करीब से काम करता है, उसके दिमाग में पहली बात यही आती है कि उनके सपने बहुत बड़े होते है। उनकी असीम ऊर्जा भारतीय रोटरी जगत में प्रसिद्ध है और जो उनके साथ काम करते है वे फुसफुसाते है कि: वह सोते कब है! रो ई निदेशक कमल संघवी, जिन्होंने जनवरी 2020 में भारत के कोलकाता में रोटरी के शताब्दी समारोह का

आयोजन किया था, ने साझा किया कि मेहता इंतजामों को देखने के लिए रात के 2.30 बजे आयोजन स्थल पर पहुंचे थे!

वरिष्ठ भारतीय रोटेरियनों के पास रात के 2 बजे उनका फोन यह पूछने के लिएआया किआप क्या कर रहे है और फिर उन्होंने अपने दिमाग में उमड़ रहे अगले बड़े विचार/परियोजना की बात की। उनकी योजना विस्तृत और कुशल होती है, वह किसी भी परियोजना के लिए लंबा और विकट समय देते है और उनका प्रतिनिधि मंडल कार्य के लिए एकदम सटीक होता है। यह सभी चीजें उनके द्वारा की जाने वाली विशाल परियोजनाओं के उचित समय पर उचित निष्पादन की खूबसूरती में झलकती है। 2012 में हैदराबाद में आयोजित दक्षिण एशिया शिखर सम्मेलन में लगभग 6,000 प्रतिभागी थे। इसके बाद साक्षरता सम्मेलन में बुद्धिजीवियों, मशहूर हस्तियों और वरिष्ठ राजनेताओं द्वारा सम्बोधन हुए। उनके मार्गदर्शन में, रोटरी ने जनवरी 2020 में कोलकाता में भव्य शताब्दी शिखर सम्मेलन के माध्यम से भारत में अपना 100वां वर्ष मनाया। हमरी नियमित होने वाली बातचीत में, वह हमेशा मुझ से कहते है: "एक नेता को बड़े सपने देखने पड़ते है। एवं उसे और अधिक नेताओं का निर्माण करने के लिए सही लोगों का चुनाव करना पड़ता है।" जैसा कि उनके साथ उनकी रोटरी यात्रा में हुआ।

व्यक्तिगत रूप से एक बैठक करना असंभव है क्योंकि भारत कोविड महामारी की दूसरी लहर से जूझ रहा है, इसलिए हम एक आभासी साक्षात्कार पर बातचीत करते है। तो किस बात ने उन्हें बड़े सपने देखने और बड़ी परियोजनाएं करने के लिए प्रेरित किया, चाहे वह साक्षरता हो, हृदय की सर्जरियाँ हो या आपदा पीड़ितों के लिए घर बनाना हो, मैं उनसे पूछता हूँ। वह मुस्कराते हुए कहते है, "शुरुआत में एक वरिष्ठ भारतीय रोटरी नेतृत्वकर्ता ने इसके लिए मुझे प्रेरित किया और बाद में यह जीने का एक तरीका बन गया। उदाहरण के लिए, पूर्व निदेशक सुशील गुप्ता ने हमेशा मुझसे केवल एक प्रश्न करके मुझे कार्यवाही करने हेतु प्रेरित किया। जब 2004 की सुनामी ने तटीय भारत को तबाह कर दियाथा तो उन्होंने मुझे फोन किया और पूछा: 'शेखर, आप इस बारे में क्या कर रहे है?' मैंने कहा ज्यादा कुछ नहीं और उन्होंने कहा 'लेकिन अंडमान और निकोबार आपका क्षेत्र है।' बस इतना ही।

लेकिन उस फोन कॉल की क्या प्रतिक्रिया रही उसे जानने से पहले, चलिए मेहता की शुरुआती रोटरी यात्रा पर एक नज़र डालते है। वह पेशे से एक एक चार्टर्ड अकाउंटेंट, कॉस्ट अकाउंटेंट और कँपनी सेक्रेटरी है और केवल 25 वर्ष की उम्र में वह रोटरी से जुड़े "और उस वक्त सेवा का विचार मेरे दिमाग में ही नहीं था। मेरा जन्म एक संपन्न परिवार में हुआ था,जहाँ मेरी हर फरमाइशों का ध्यान रखा जाता था... मैं अक्सर कहता हूँ, मेरा

क्या आप किसी ऐसे संगठन की कल्पना कर सकते है जिसने पिछले 20 वर्षों से कोई विकास न किया हो? मैं अपनी सदस्यता में इस यथास्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता।

RID 3020 के पीडीजी जी वी मोहन प्रसाद के साथ शेखर मेहता एक उर्दू मीडियम स्कूल में जहां रोटरी द्वारा ई-लर्निंग किट बाँटे गए।

जीवन वातानुकूलित था, चाहे वह घर हो, कार हो या कार्यालय हो। इसलिए मुझे बाकी दुनिया के लोगों की समस्याओं के बारे में कैसे पता होता? मैं दोस्त बनाने के लिए रोटरी में शामिल हुआ था और सेवा करने का वास्तव में मेरा कोई विचार नहीं था।"

युवा रोटेरियनों के लिए यह अग्नि परीक्षा थी। एक महीने के भीतर उनसे एक स्मारिका लाने के लिए कहा गया; वह सफल हुए क्योंकि बहुत लोगों ने योगदान दिया, "लेकिन उन्होंने मुझे श्रेय दिया क्योंकि यह किसी को आगे बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका होता है।" इसके बाद क्लब बुलेटिन था जो अत्यधिक सफल साबित हुआ और वह क्लब निदेशक, सचिव, अध्यक्ष और अंततः गवर्नर के रूप में शामिल हुए।

एक नेता को बड़े सपने देखने पड़ते है। एवं उसे और अधिक नेताओं का निर्माण करने के लिए सही लोगों का चुनाव करना पड़ता है।

जब उनके गुरु PDG चंद्रमोहन ने उन्हें उनके डीजी वर्ष के लिए उनके सभी लक्ष्यों को लिखने की सलाह दी, तो उन्होंने एक सूची तैयार की जिसे उन्होंने 'सहस्राब्दी स्वप्न' नाम दिया क्योंकि वह रोटरी का सहस्राब्दी वर्ष था। "बड़े सपने देखने की यह आदत 20 साल पहले ही लग गई थी! जब मैंने इन सपनों को साझा किया तो लोग हँसने लगे। जैसी कि गांधीजी की एक प्रसिद्ध कहावत है... पहले वे आपकी उपेक्षा गांधीजी की है, फिर वे आप पर हंसते है, फिर वे आपसे लड़ते है और फिर आप जीतते है! ऐसा मेरे साथ कई बार हो चुका है। लेकिन इसने मुझे परेशान नहीं किया, मैं काम करता रहा और बड़े सपने देखता रहा। पेशे से एक बिल्डर होने के नाते, मैंने सोचा - उन लोगों के लिए रोटरी चक्र के साथ 500 घरों का निर्माण करने की कल्पना करें जिनके पास कभी घर नहीं था!"

उन्होंने यह सपना अपने PETS में साझा किया और जल्द ही किसी ने गरीबों के लिए घर बनाने हेतु जमीन दान की। उन्हें आश्चर्य चकित करते हुए, बिजली की गति से एक 3H अनुदान आवेदन स्वीकृत हो गया। "जब मुझे उसी रोटरी वर्ष के भीतर इस स्वीकृति के बारे में पता चलातो मेरी आँखों से आँसू बहने लगे और 500 घरों के निर्माण के मेरे सपने में से 300 घर बन गए!"

यह एक चमत्कार की तरह था जिसने उन्हें सिखाया कि अगर आप किसी चीज़ में अपना दिल और दिमाग लगाते है तो कुछ भी संभव है। नेतृत्व की अधिक भूमिकाओं के साथ बढ़े पैमाने की सेवा गतिविधियां भी देखने को मिली; सेवा करने का नशा और भी बड़ा हो गया।

सूनामी पर लौटते हुए,गुप्ता के फोन कॉल ने उन्हें कार्यवाही करने हेतु प्रेरित किया और छह रोटेरियनों की एक टीम के साथवह अंडमान के एक

राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद के साथ शेखर मेहता।

शेखर कहते हैं

*(बाएं से): केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्ष वर्धन, शेखर मेहता, **RID** भरत पांड्या, **PDG** नैन्सी बार्बी और **RID** कमल सांघवी के साथ शताब्दी शिखर सम्मेलन में हृदय शल्य चिकित्सा लाभार्थी।*

नेतृत्व:

मैं एक अच्छा प्रतिस्पर्धी और एक बुद्धिमान शिक्षार्थी हूँ; मैं कोई नया आविष्कार नहीं करना चाहता; मैं दूसरों से सीखने के लिए तैयार हूँ। मैंने PRIP कल्याण बेनर्जी और कई अन्य लोगों को देखकर बहुत कुछ सीखा है। मैंने देखा कि ये नेता कैसे योजना बनाते है, संगठित होते है, बोलते है। मैंने सीखा कि जो भी काम करो उसमें उत्कृष्टता हासिल करो। इसके अलावा मेरी रोटरी यात्रा में मेरे पिता का समर्थन भी मुझे प्राप्त हुआ। रोटरी के लिए मैंने जो कुछ भी करना चाहा उसके लिए उन्होंने मुझे कभी नहीं रोका। हमारा पारिवारिक व्यवसाय था और अचानक मैं दोपहर 2 बजे ऑफिस से निकल जाता था। उन्होंने मुझसे ऐसा कभी नहीं कहा कि मैं रोटरी को बहुत ज्यादा समय दे रहा हूँ।

साक्षरता :

मेहता भारत को पूर्ण रूप से साक्षर बनाने के लक्ष्य के लिए काम करने हेतु भारतीय रोटेरियनों कोप्रेरित करने में बहुत गर्व महसूस करते है। यह बहुत बड़ी चुनौती थी, लेकिन TEACH कार्यक्रम (कड़ी मेहनत के बाद विकसित किया गया) के साथ हमें लगता है कि हमने सफलता की कुंजी खोज ली है! हमारे ई-शिक्षण कार्यक्रम लाखों बच्चों द्वारा प्रतिदिन टीवी चैनलों के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे दुनिया के सबसे बड़े शिक्षा के ई-मंचों में से एक, *दीक्षा,* पर देखे जा रहे है।

एक के बाद एक राज्य अब TEACH के तहत विभिन्न कार्यक्रमों के कार्यान्वियन हेतु RILM से संपर्क कर रहे है। भारत सरकार का नया वयस्क साक्षरता कार्यक्रम वास्तव में रोटरी द्वारा शिक्षा मंत्रालय को उपलब्ध कराए गए श्वेत पत्र पर तैयार किया गया

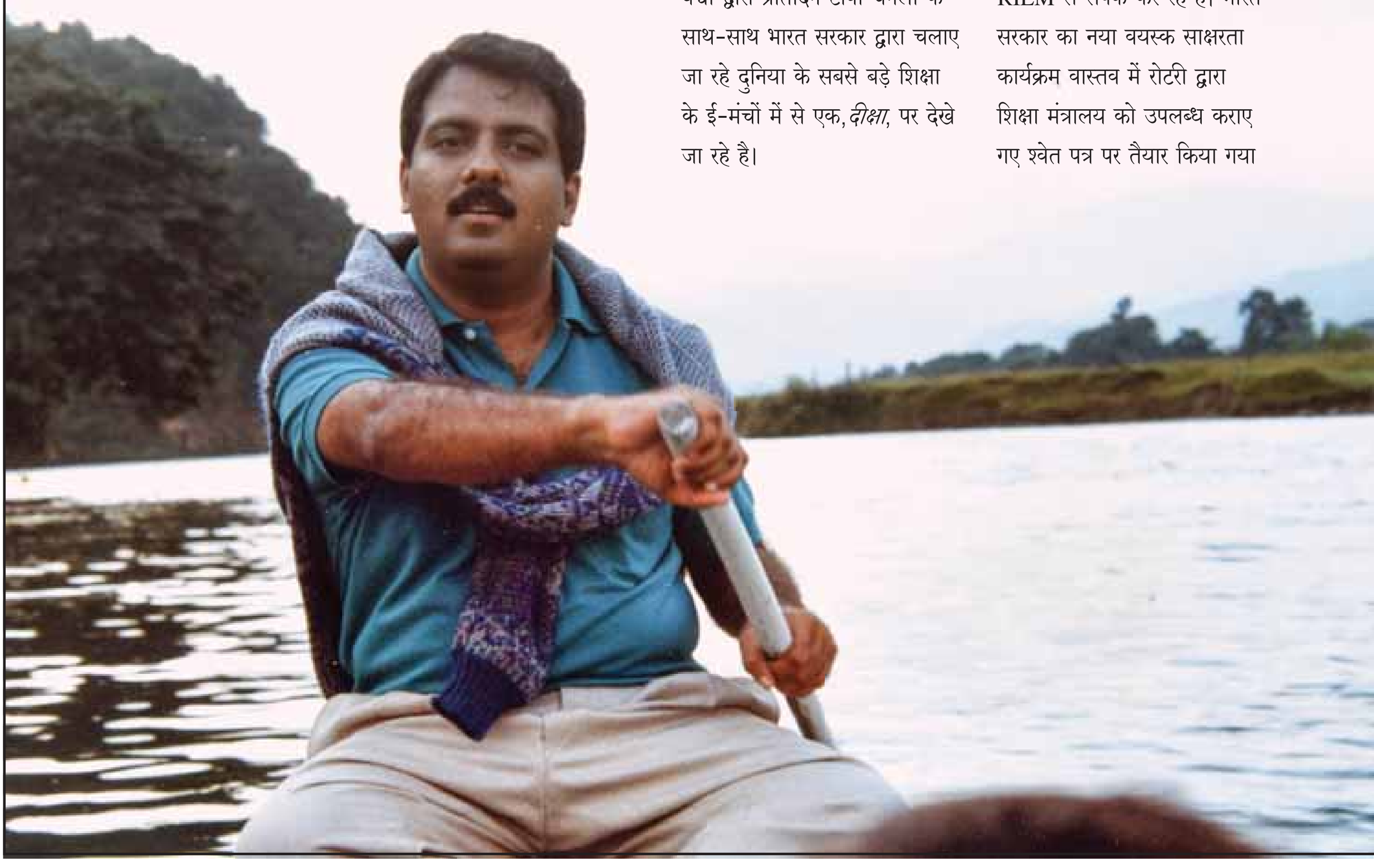

है। हम साक्षरता दर को 90 प्रतिशत तक लाकर भारत में पूर्ण साक्षरताकी तस्वीर बदलने के हर संभव प्रयास कर रहे है। यह एक कठिन कार्य है...अगले पांच वर्षों में लगभग 20 करोड़ भारतीय वयस्कों को साक्षर बनाना, लेकिन रोटरी 50 प्रतिशत बोझ उठाने और सरकार के साथ कँधे से कँधा मिलाकर काम करने के लिए तैयार है।

राशी की भूमिका:

मैंने एक बार आपसे कहा था कि यदि मैं चेहरा हूँ, तो वह बैक ऑफिस है; यह बात पिछले 12-18 महीनों में और भी अधिक प्रासंगिक बन गई है। रोटरी परियोजनाओं के नियोजन और उनके कार्यान्वियन के 35 वर्षों में, मैं इतना कुछ इसलिए कर सका क्योंकि मुझे बहुत सी दूसरी चीजों को देखने की जरूरत नहीं पड़ी। मुझे जो दवाई लेनी होती है उन्हें मैं केवल रंग से जानता हूँ, नाम से नहीं। जब मैं यात्रा करता हूँ, तो वह सुनिश्चित करती है कि मेरा सूटकेस पैक हो। राशि सुनिश्चित करती है कि मैं जो भी योजना बनाता हूँ और जिसपर कार्य करता हूँ वो बिना किसी रुकावट के पूरी हो। और इन सबसे बढ़कर, वह सभी सभाओं और कार्यक्रमों में मेरे साथ मौजूद रहती है, मेरे एक ही भाषण को बार-बार सुनती है! पहली प्रतिक्रिया जो मैं चाहता हूँ, और जो मेरे लिए मायने रखती है,वह उनकी होती है। वह बहुत अच्छी तरह जानती है कि क्या हो रहा है या क्या हुआ है। वह कहेगी: शेखर, आज तुमने बहुत बोला, या यह उतना अच्छा नहीं बोल, या बहुत अच्छा या उत्कृष्ट बोला।

लोगों के अध्यक्ष:

मैं मेहता से पूछता हूँ कि ऐसा क्या है जो उन तक पहुँचना इतना आसान बनाता है; कि रोटरी में उनकी वरिष्ठता के बावजूद कोई भी रोटेरियन सिर्फ एक फोन कॉल पर ही उनसे बात कर सकता है। वह मुस्कराते हुए कहते है: मेरे लिए एक नेता का सबसे बड़ा गुण विनम्रता है। मैं नेताओं में इस गुण की मौजूदगी की प्रशंसा करता हूँ और मैंने इसे उनके अंदर आत्मसात करने की कोशिश भी की है,और मुझे लगता है कि यही कारण हो सकता है जो कोई भी मुझसे आसानी से संपर्क कर सकता है। मुझे किसी बात का घमंड नहीं है, न ही मैं खुद को रो ई अध्यक्षके रूप में देखता हूँ। मैं किसी भी उच्च पद को एक अतिरिक्त जिम्मेदारी के रूप में देखता हूँ और स्वेच्छा से आवश्यक कार्य करता हूँ।

मैं बदलती परिस्थितियों के अनुरूप खुद को बहुत तेजी से ढाल लेता हूँ भले ही वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

2004 की सुनामी के बाद अनादमन में एक द्वीप पर बने 500 घरों में से एक में।

दूरस्थ द्वीप हुतबे, जहाँ केवल सरकार द्वारा संचालित हेलीकॉप्टर सेवा द्वारा ही पहुँचा जा सकताथा, में 500 घरों के निर्माण हेतु गए। हमें इस बात का पता नहीं था कि वह उड़ान कब उपलब्ध होगी; उसे हमें वहीं छोड़ना था,दूसरे द्वीपों पर जाकर वापस हमें लेने के लिए आना था क्योंकि उस द्वीप पर रात बिताने के लिए कोई जगह नहीं थी।

उस द्वीप की अनेक यात्राएं करने और स्टीव वॉ एवं भारतीय क्रिकेट टीम और अनुदान संचयन समारोहों की मदद से हम करीब ₹55 लाख जुटा पाए। उसके ऊपर कई लोगों से प्राप्त उदार योगदानों की मदद से, उस द्वीप पर 500 घरों का निर्माण सम्पन्न हो पाया।

वह टीम में काम करना पसंद करते है और इसी वजह से लोग उनके साथ काम करना पसंद करते है, भले ही यह सिलसिला रात से लेकर सुबह तक और उसके बाद भी चलता रहे।

राशी मेहता

जिस दिन लोगों को घर सौंपें गए उस दिन को याद करते हुए उनकी आंखें चमक उठीं और उनका चेहरा खिल गया। "मैं उप-राज्यपाल और अन्य लोगों के साथ हेलीकॉप्टर में था और जब हम भूमि पर उतरने के लिए चक्कर लगा रहे थे, मुझे झिलमिलाती छतें दिखाई दे रही थी। इतने वर्षों में, मैंने अच्छी इमारतें बनाई है और ऐसा करके पैसा भी कमाया है, लेकिन यहाँ सबसे साधारण इमारतें थी जिन्हें मैंने बनाया था वो भी ऐसे लोगों के लिए जिनसे मैं कभी नहीं मिला और शायद कभी नहीं मिलूँगा। फिर भी उन इमारतों को देखने से मिलने वाली संतुष्टि और ख़ुशी मेरे पेशेवर काम से कई अधिक थीक्योंकि मैं खुद से ज्यादा दूसरों के बारे में सोच रहा था," मेहता कहते है।

आश्रय किट परियोजना के साथ एक और बड़ा सपना साकार हुआ। "Shelter Kits अब एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय परियोजना बन गई है। हमारे क्षेत्र में जहाँ कहीं भी कोई प्राकृतिक आपदा आती है, चाहे केरल हो, उत्तराखंड हो, उड़ीसा हो, नेपाल हो, बंगाल हो, या बिहार हो, रोटेरियन 52 वस्तुओं से युक्त इन Shelter Kits के साथ प्रभावित क्षेत्रों में पहुंच जाते है। इनमें से अधिकांश आपदाओं के दौरान मैं व्यक्तिगत रूप से वहाँ मौजूद रहा हूँ और मैंने वहाँ काम किया है," वह कहते है।

ऐसा बाल हृदय सर्जरि कार्यक्रम के साथ भी हुआ। "मुझे जल्द ही महसूस हुआ कि मेरी भूमिका अखिल भारतीय स्तर पर सेवा परियोजनाएं शुरू करने की थी।" एक बार फिर गुप्ता ने एक कॉल करके प्रेरणा दी: शेखर, क्या आप हृदय सर्जरि कार्यक्रम पर एक नज़र डाल सकते है? उत्तर-पूर्व में कई बच्चों को हृदय सर्जरि की आवश्यकता है। मेहता को यह पता भी नहीं था कि "दाईं या बायीं वेंट्रिकल या दिल में छेद होने का क्या मतलब होता है!"

लेकिन जब अच्छा होना लिखा हो तो सब कुछ चमत्कारिक रूप से सही हो जाता है। उनके क्लब के नव निर्वाचित अध्यक्ष, डॉ राम पाल विधावन, बच्चों के लिए दिल की सर्जरियाँ करना चाहते थे। उनका लक्ष्य उस वर्ष छह ऑपरेशन करने का था; लेकिनहमने 66 ऑपरेशनों के साथ उस वर्ष का समापन किया!" अब हमारे नव निर्वाचित अध्यक्ष को सेवा करने का नया विचार सुजा "मैं स्थापना समारोहों में कहता रहता था कि हमें एक बच्चे की जान बचानी है, और ऐसा करने के

पीडीजी रवि वडलमणि के साथ आंध्र प्रदेश में बाढ़ पीड़ितों को शेल्टर बॉक्स बांटने के लिए नाव की सवारी।

राशी कहती है

(बाएं से) बहू गीता, राशि, पोता वीर, शेखर मेहता, बेटा चिराग, मां वल्लभ कुमारी और बेटी चांदनी।

मैं राशी मेहता से पूछता हूँ कि उन्हें अपने पति का कौन सा गुण सबसे ज्यादा पसंद है। यह सुनकर वह खुश हो जाती है और मुस्कराते हुए कहती है: वह सबसे हर चीज़ के बारे में दिल खोलकर बात करते है। वह अत्यधिक भावुक होने के साथ-साथ काफी प्रैक्टिकल भी है। वह लोगों से बहुत आसानी से जुड़ जाते है क्योंकि वह दिल से दिल का रिश्ता जोड़ते है। वह टीम में काम करना पसंद करते है और इसी वजह से लोग उनके साथ काम करना पसंद करते है, भले ही यह सिलसिला रात से लेकर सुबह तक और उसके बाद भी चलता रहे। वे उनके साथ काम करते हैऔर उनके साथ खड़े रहते है और ऐसा इसलिए है क्योंकि वह उन सभी से प्यार करते है, और उनके अंदर दूसरों के साथ काम करने का उत्साह है। और वह एकदम निः स्वार्थ भाव से काम करते है।

अपनी रोटरी यात्रा में उन्होंने कभी किसी पद की लालसा नहीं की और न ही उसे हासिल करने के लिए काम किया। यह हमेशा उल्टा रहा है; उन्होंने बहुत ही लगन के साथ काम किया है और अथक परिश्रम किया है और फिर पद उनके पास आए है। जब वह रो ई निदेशक और फिर अध्यक्ष बने, तो हम समस्त भारत में हमरि यात्राओं के दौरान हम पर हुई प्यार की बरसात देख सकते थे। मेरा मानना है कि यह सब स्वैच्छिक था न कि इन पदों की वजह से था।

यह सब यूं ही नहीं होता। यह आपका आंतरिक वास्तविक स्वभाव होता है जो लोगों को छूता है... आप कुछ समय के लिए नाटक कर सकते है लेकिन ऐसा सहज स्नेह और प्रेम तब तक नहीं आता जब तक कि आप वास्तविक न हो। वह बहुत स्पष्टवादी और ईमानदार भी है। अगर उन्हें लगता है कि कुछ गलत तरीके से किया जा रहा है, तो वह तुरंत उसे बोल देते है, लेकिन जिस तरीके से वह ऐसा करते है,उससे दूसरे व्यक्ति को समझ में आता है।

वह एक संपूर्ण पारिवारिक व्यक्ति हैहमारे सभी पारिवारिक समारोहों में हर कोई उनके आस-पास रहना पसंद करता है क्योंकि वह बहुत मजाकिया हैऔर उनकी हास्यवृत्ति कमाल की है।

एक भयावह क्षण:

मैं राशी से उनके सबसे भयावह क्षण के बारे में पूछता हूँ जिसका सामना उन्होंने मेहता के साथ प्राकृतिक आपदा क्षेत्रों में राहत सामग्री पहुंचाने के दौरान किया हो। "हाँ, कभी-कभी यह डरावना होता है, लेकिन जब आप देखते है कि आप के द्वारा की गई मदद इतना बड़ा बदलाव ला रही है,तो यह बहुत संतोषजनक होता है। कश्मीर भूकँप्र एक अविस्मरणीय अनुभव था। हम उरी से आगे भारत-पाक सीमा के पास लाल पुल की ओर जा रहे थे जहाँ कोई भी राहत सामग्री लेकर नहीं गया था। एक 18 वर्षीय रोटरेक्टर जीप चला रहा था। यह एक संकरी, जोखिम भरी पहाड़ी सड़क थी जिसके एक तरफ 3,000 फीट की गहरी खाई थी और अचानक हमरि गाड़ी को रुकना पड़ा क्योंकि तभी भूस्खलन शुरू हो गया था। यह बहुत डरावना था; हम सब एक दूसरे का हाथ थामे हुए थे। हमारे साथ जो दो अन्य रोटेरियन थे उन्होंने कहा कि हमें वापस जाना चाहिए। लेकिन शेखर को तो हम सभी जानते हैं! उन्होंने कहा: नहीं, हम यहाँ तक आ गए है और जरा उन लोगों के बारे में भी सोचों जो दूसरी तरफ इस राहत सामग्री के मिलने का इंतजार कर रहे है। इसलिएहमें इंतजार करना होगा और फिर आगे बढ़ना होगा। हमारे पीछे भी एक भूस्खलन हो रहा था! और शेखर ने मुझसे कहा: राशि, यह जीवन की वास्तविक रोलर कोस्टर सवरि है। जैसे ही सामने का भूस्खलन साफ हो गयाहम आगे बढ़े और हम इस बात से पूरी तरह अनजान थे कि हम लौटेंगे कैसे। लेकिन इससे हम रुके नहीं, आगे बढ़े,इस बात से अनजान कि इस धरती पर यह हमारा आखिरी दिन है या नहीं!"

लिए 30 हाथ ऊपर उठ जाते थे। और हमने अनेक अनुदान संचयन समारोह भी किए।"

66 ऑपरेशन पूरे होने के बाद,अगले साल 100 और बच्चों के दिल ठीक किए गए और जल्द ही यह एक मंडल कार्यक्रम बन गया। अंततः हृदय सर्जरि परियोजना को पूरे भारत के शहरों में ले जाया गया और अब तक रोटरी ने 20,000 से अधिक बच्चों की हृदय सर्जरि कर चुका है, जिसमें से 2,500 से अधिक ऑपरेशन सीधे उनके कार्यालय के माध्यम से किए गए है। "बच्चे रोज मेरे ऑफिस आते थे; मेरा दिन उनके माता-पिता से मिलने के साथ शुरू होता था।"

"अब जब मैं रो ई अध्यक्ष बनूंगा, तो लक्ष्य अगले पांच वर्षों में 20,000 हृदय सर्जरि करने का है। इस लक्ष्य का पता चलते ही रोटेरियन विवेक गौर मुझ से दिल्ली में मिले और कहा कि उन पांच वर्षों में से प्रत्येक के लिए मैं 3,000 अधिक सर्जरियाँ प्रायोजित करूंगा। तो पांच साल का लक्ष्य 20,000 से बढ़कर 35,000 हृदय सर्जरियों का हो गया! वृद्धि इसी को कहते है। मेरा मानना है कि एक बार जब आप किसी लक्ष्य को पूरा कर लेते हैतो रास्ते अपने आप निकलने लगते है," वह अपनी आँखों में चमक के साथ कहते है।

मेहता ने आंखों के ऑपरेशन के लिए भी बहुत काम किया है और पूरे भारत में 15 नेत्र अस्पताल स्थापित करने में मदद की है।

1.3 मिलियन का एक साहसी स्वप्न

मेहता का सबसे साहसी सपना उनके साल के अंत तक रोटरी की सदस्यता को 1.3 मिलियन तक ले जाने का

PRIP कल्याण बेनर्जी और बिनोटा के साथ।

अध्यक्षीय वर्ष के लिए पांच प्राथमिकताएं

- **सदस्यता:**
  क्या आप किसी ऐसे संगठन की कल्पना कर सकते है जिसने पिछले 20 वर्षों से कोई विकास न किया हो? मैं अपनी सदस्यता में इस यथास्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता। लगभग दो वर्षों से, मैं प्रत्येक सदस्य से एक सदस्य लाने के लिए कह रहा हूँ। यह संभव है और इसके लिए मुझे दुनिया भर से प्रतिबद्धताएं मिली है।
- **लचीले, मिश्रित क्लब:**
  जब हम हर-एक-लाए-एकपर ध्यान केंद्रित करते हुए नए सदस्यों को लाते है, तो हम कारण-आधारित, मिश्रित क्लब आदि जैसे लचीले क्लबों के माध्यम से उन्हें रोके भी रखेंगे। मेरा क्लब पहले से ही एक मिश्रित क्लब बन गया है; हमरि आभासी बैठकें होती है और यही आगे बढ़ने का तरीका है। इससे हमें युवा सदस्य भी मिलेंगे... जब एक नौजवान को ट्रैफिक के बीच गाड़ी नहीं चलानी पड़ती और वह घर से आराम से लॉगिन करके, अपने समोसे का आनंद ले पाता है,और यहाँ तक कि वीडियो को बंद करके कुछ मिनट अपने बच्चे की देखभाल कर पाता है, तब वेरोटरी में शामिल होने के लिए आकर्षित होंगे। साथ ही बुजुर्ग सदस्यों का कहना है कि युवा हमारे क्लब में शामिल होने के लिए तैयार नहीं है। ठीक है, 15 लोगों के साथ एक सैटेलाइट क्लब बनाएं; जब यह संख्या बढ़कर 25 हो जाए तो एक अलग क्लब बना लें। याशायद उस समय तक वे आपके क्लब में ही शामिल होना चाहे। कारण-आधारित क्लब बनाएं; पानी और स्वच्छता में रुचि रखने वाले दुनिया भर के लोग एक साथ आकर इस साल इथियोपिया में जल परियोजनाएं कर रहे है, इसके बाद वे भारत में, और उसके बाद वे बोलीविया में करेंगे, दुनिया भर में साहचर्य का आनंद लेते हुए। ज़ूम ने दिखाया है कि यह संभव है। जिस तेज गति से हम बातचीत कर सकते है वो इस महामारी से होने वाला सबसे बड़ा फायदा है।
- **लड़कियों का सशक्तिकरण:** (बक्सा देखें)
- **अध्यक्षीय सम्मेलन:** रोटरी के विभिन्न ध्यानाकर्षण क्षेत्रों पर भारत के हैदराबाद में एक सहित दुनिया भर में सात (मई 3-5, 2021)।
- **रोटरी के सेवा दिन:** स्थानीय स्तर पर रोटरी द्वारा किए गए कार्यों का प्रदर्शन; हृदय दिवस, साक्षरता एवं स्कूल, जल एवं स्वच्छता परियोजनाएँ, आदि। आइए महीने में कम से कम दो बार सोशल मीडिया पर रोटरी को ट्रेंड करें।

है। इसे हासिल करने के लिए उनके पास एक आसान सा फॉर्मूला है। "*हर एक,लाए एक,* दुनिया भर से जो प्रतिक्रिया मुझे मिल रही है, वह मुझे इस लक्ष्य को हासिल करने की उम्मीद जगाती है।"

उन्हें दुनिया भर के रोटेरियनों द्वारा किए जा रहे कोविड राहत कार्यों पर बेहद गर्व है। "भारत में, महामारी की दोनों लहरों में बहुत कुछ किया गया था; पहली लहर में ₹100 करोड़ का वित्तीय योगदान और जमीनी स्तर पर ₹150 करोड़ की परियोजनाएं की गई। दूसरी लहर की प्रतिक्रिया उतनी ही तेज और उससे भी बड़ी रही है।" हजारों ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर, सैकड़ों वेंटिलेटर और 1,000 से अधिक विशेष कोविड बेड स्थापित किए गए।

"और काम बिना रुके जारी है। दुनिया भर के उन रोटेरियनों का बहुत-बहुत धन्यवाद जिन्होंने इस मुश्किल घड़ी में पूरे भारत भर में रैलियाँ आयोजित की। भगवान न करें, पर अगर कभी जरूरत पड़ीतो भारतीय रोटेरियन प्रतिक्रिया दिखाने में देर नहीं करेंगे," मेहता कहते है।

रोटेरियनों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की व्यापकता को देखते हुए उन्हें यकीन है कि इस महामारी का रोटरी की सदस्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत उन्हें लगता है कि रोटरी का प्रत्यक्ष कार्य लोगों को इसमें शामिल होने और सदस्यता में वृद्धि करने हेतु आकर्षित करेगा "क्योंकि लोगों को रोटरी के माध्यम से जरूरतमंद लोगों की मदद करने के अपार अवसर दिखाई देते है।"

"लेकिन सदस्यों को अभी व्यस्त रखना बहुत महत्वपूर्ण है। जो क्लब आभासी बैठक नहीं कर रहे है उन्हें वास्तव में सदस्यों को खोने का खतरा है," उन्होंने आगे कहा।

ऐसे समय में जब लोगों को यह महसूस होता है कि उन्हें दूसरों की मदद करने के लिए उदार होने

की आवश्यकता है, TRF के लिए भी हमें उसी तरह की सोच एवं नए साहसिक विचारों और बड़े लक्ष्यों की आवश्यकता है। "मुझे यकीन है कि न्यासी भी कुछ ऐसा ही सोच रहे होंगे," वह कहते है।

उनका एक और बड़ा सपना रोटरी को नोबल शांति पुरस्कार के लिए नामित कराने का था। आंखों में चमक लिए वह साझा करते है कि यह सपना पूरा हो गया। "अब हम केवल प्रार्थना कर सकते है। लेकिन यह किसी प्रकार के महिमामंडन या प्रसिद्धि के लिए नहीं है। नोबेल पुरस्कार हमें दुनिया के सर्वोच्च सेवा संगठनों में से एक के रूप में रोटरी को उभारने के एक कदम

₹12 करोड़ से ₹300 करोड़ तक की कोविड राहत

यह पूछे जाने पर कि उन्हें व्यक्तिगत रोटरी क्लबों द्वारा करोड़ों रुपये जुटाने और इससे भी अधिक, समुदाय और सरकार की कोविड महामारी से लड़ने में मदद करने पर कितना गर्व महसूस होता है, RIPE शेखर मेहता कहते है: मुझे भारत में रोटरियनों द्वारा किए गए कार्यों पर बहुत गर्व है। हाल ही में दो मेगा प्रोजेक्ट पीडीजी ओलिवनन और रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ के अध्यक्ष वेंकटरमण द्वारा लाये गएँ हैं। पहले प्रोजेक्ट में सिंगापुर के मुख्यालय वाला एक कॉर्पोरेट दिल्ली में 100,000 कोविड परीक्षण करने के लिए परीक्षण उपकरण प्रदान करने हेतु ₹12 करोड़ (1.65 मिलियन डॉलर) की एक सीएसआर परियोजना करना चाहता था। वे इसे लाएंगे और स्थापित करेंगेलेकिन वे सीधे किसी अस्पताल को नहीं दे सकते इसलिए उन्हें रोटरी की मदद की आवश्यकता थी। "मैंने ₹300 करोड़ (41.3 मिलियन डॉलर)की एक परियोजना करने का निर्णय लिया है। भारतीय अमेरिकी परोपकरी लोगों का एक समूह भारत में 50,000 ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर देना चाहता है। फिर से, इनका परिवहन किया जा सकता है, लेकिन उचित परिनियोजन और उपयोग, एवं त्वरित और प्रभावी निष्पादन के लिए भारत में एक साझेदार की आवश्यकता होती है। उन्होंने महसूस किया कि रोटरी के पास ऐसी बड़ी परियोजनाएं करने की क्षमता है; हमारे पास जो विरासत है वो एक या दो साल नहीं बल्कि 35 साल पुरानी है, जब पोलियो उन्मूलन में हमारी कड़ी मेहनत की बात आती है।" प्रायोगिक परियोजना तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में पहले ही शुरू हो चुकी है और इस परियोजना को PDG ओलिवन्नन और रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ के अध्यक्ष वेंकटरामन द्वारा शुरू किया गया।

नोबेल पुरस्कार हमें दुनिया के सर्वोच्च सेवा संगठनों में से एक के रूप में रोटरी को उभारने के एक कदम और करीब ले जाएगा।

लड़कियों का सशक्तिकरण

2021-22 में शेखर मेहता के नेतृत्व में, "हमारि अति-महत्वपूर्ण थीम लड़कियों का सशक्तिकरण होगी। दुनिया भर में बालिकाओं के साथ भेदभाव होता है। यह अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग रूप में होता है। हमारे क्षेत्र में, लड़कियों का एक बड़ा हिस्सा कक्षा 7 या 8 तक स्कूल छोड़ देता है। क्या हम ऐसी लड़कियों को वापस स्कूल भेजना सुनिश्चित कर सकते है; उन्हें रोके रखने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करें? कई राज्य लड़कियों को स्कूल जाने और घर वापस आने के लिए साइकिलें प्रदान कर रहे है। जहाँ बिजली न हो वहाँ उन्हें सोलर लाइट देना कैसा रहेगा ताकि वे घर पर ही पढ़ाई कर सकें। एक शिक्षित लड़की शिक्षित परिवार के बराबर है। और उनकी शिक्षा पूरी होने के बाद चलिए हम उन्हें ऐसे कौशल प्रदान करें जिससे आर्थिक सशक्तीकरण आए।"

निर्वाचित रो ई अध्यक्ष का साल बैठकें करने के बजाय योजना बनाने में और लोगों को प्रेरित करने में ही निकलना चाहिए, क्योंकि यहीं अध्यक्ष का काम होता है।

"उनके पोषण का ध्यान रखें, खासकर गर्भवती माताओं का, साथ ही उन्हें आत्मरक्षा की तकनीक भी सिखाएं। निश्चित रूप से दुनिया भर के बलात्कारियों को सबक सिखाने की जरूरत है! फिर पानी, स्वच्छता और MHM है। फिल्म *पैडमैन* ने इस विषय को उजागर कियादोबारा प्रयोग किए जा सकने वाले पैड और मासिक धर्म कप - बिना किसी हिचकिचाहट के स्वतंत्र रूप से इस विषय पर चर्चा की जा सकती है। केवल ₹300(4 डॉलर) में एक लड़की को दो साल के लिए दोबारा उपयोग में लाए जाने वाले पाँच पैड प्रदान किए जा सकते है। इससे कोई पर्यावरणीय खतरा नहीं है और महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले सामाजिक उद्यम शुरू हो सकते है।

कई सारी लड़कियों/युवा महिलाओं को घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है। उन्हें स्थानीय भाषा में सलाह देने और सांत्वना देने एवं उनकी मदद करने के लिए एक हेल्प लाइन की आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा के अंतर्गत आनेवाले बाल शोषण को भी यहीं प्रबंधित किया जा सकता है।" इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में लड़कियों को सशक्त बनाने और उन्हें समान भागीदार बनाने के लिए हम बहुत कुछ कर सकते हैं।

और करीब ले जाएगा। आज यह उसके आस-पास भी नहीं है।"

मैं मेहता से उनके कथन 'ये Zoom पर मिलना भी कोई मिलना होता है' के बारे में सवाल करते हुए पूछता हूँ कि वह वैयक्तिक बैठकों के आनंद और रोमांच को कितना याद कर रहे है? जवाब में वह कहते है "मैं बदलती परिस्थितियों के अनुरूप खुद को बहुत तेजी से ढाल लेता हूँ, मुझे जीवन में किसी भी चीज के लिए अपने दिमाग को समायोजित करने में कुछ समय लगता है भले ही वह कितना भी कठिन क्यों न हो। मैं इन चीजों को अपनी प्रगति की तरह देखता हूँ और मुझे कोई पछतावा नहीं होता। हालाँकि उनके दो वर्षों का कार्यकाल आधा बीत चुका है, "मेरे पास अभी भी 50 प्रतिशत समय शेष है! वैसे भी, नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष का पहला साल बैठकें करने के बजाय योजना बनाने में और लोगों को प्रेरित

करने में ही निकलना चाहिए, क्योंकि यहीं अध्यक्ष का काम होता है।"

परंतु हाँ,वह एक वैयक्तिक अंतर्राष्ट्रीय सभा को जरूर याद करते है, किसी भी "रो ई अध्यक्ष के लिए एक सपने जैसा कार्यक्रम। लेकिन इससे भी बढ़कर, मुझे अकेले अमेरिका में ही 30 दिनों में 24 MDPETS को संबोधित करना था और लगभग 8,000 अध्यक्षों से मिलना था। मैं आभासी बैठकों के लिए एक रिकार्ड किया हुआ संदेश भेज सकता था लेकिन मैं उनमें से प्रत्येक बैठक में एक भाषण देने के लिए सुबह 4 या 5 बजे उठा।" परिणामस्वरूप उन्होंने दुनिया भर के लगभग 35,000 क्लब अध्यक्षों में से लगभग 15,000 से बात की।

"मैं क्लब स्तर पर किए गए रोटरी के कार्य में दृढ़ विश्वास रखता हूँ। और गवर्नर एवं क्लब अध्यक्ष सबसे बड़ी भूमिका निभाते है।"

उन्होंने जापान, कोरिया, ताइवान और फिलीपिंस में MDPETS को भी संबोधित किया था। "इस में कोई संदेह नहीं है कि व्यक्तिगत उपस्थिति से बहुत फर्क पड़ता है, लेकिन अच्छी बात यह है कि व्यक्तिगत रूप से मैं शायद 15,000 अध्यक्षों से बात करने में कामयाब नहीं हो पाता। हम नहीं जानते कि कल क्या होगा, तो चलिए सीमाओं के खुलने का इंतजार करें," मेहता कहते है!

ताकि हम सेवा के ज़रिये ज़िन्दगियों को बदलते हुए अधिक बढ़ने और अधिक करने के लिए एक साथ काम कर सकें।

शेखर मेहता, तत्कालीन रो ई निदेशक संगकू यूं के साथ एक बाल लाभार्थी से मिलते हुए।

*ऊपर: कोलकाता में शताब्दी शिखर सम्मेलन में राशी और शेखर मेहता, तत्कालीन रो ई अध्यक्ष मार्क मेलोनी, गे, **RID** कमल सांघवी और सोनल के साथ।*

चित्र: रशीदा भगत और शेखर मेहता

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

दिल्ली के रोटेरियनों ने विभिन्न कोविड-संबंधी परियोजनाएं अपने हाथों में ली

जयश्री

दिल्ली में, रोटेरियनों ने अतिरिक्त आक्सिजन सुविधाओं को स्थापित करने के लिए तीव्रता से एवं उदारतापूर्वक काम किया है; जिसमें रोटरी क्लब दिल्ली प्रिमियर, एक एकल क्लब, ने अकेले भारत की राजधानी का दम घुटने से बचाने हेतु ₹2 करोड़ इकट्ठा किए।

कोविड की दूसरी लहर के जवाब में, जब दिल्ली के अस्पताल लगातार आपातकालीन ऑक्सीजन आपूर्ति के लिए हताश होकर संदेश भेज रहे है, और स्वास्थ्य विभाग द्वारा की गई एक अपील के बाद, दिल्ली में रोटेरियन मदद के लिए आगे आए है। रो ई मंडल 3011 के डीजी संजीव राय मेहरा ने मंडल के रोटरी क्लबों से हर संभव मदद करने का आह्वान किया। मंडल की ओर से शुरूआत में मैंने सरकार को एक सप्ताह के भीतर 10 ऑक्सीजन संयंत्र देने का वचन दिया था, वह कहते है।

डीजी के आह्वान के जवाब में, अनीशा डालमिया और सचिव सुधांशु पचीसिया के नेतृत्व में दो वर्षीय पुराने एवं 72 की मजबूत सदस्यता वाले इस क्लब, रोटरी क्लब दिल्ली प्रिमियर, ने दो सप्ताह के भीतर दिल्ली के सात अस्पतालों में सात ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित किए। पहले संयंत्र ने 48 घंटे के भीतर जीवन रक्षक गैस का उत्पादन करना शुरू कर दिया।

रोटरी क्लब दिल्ली प्रीमियर की अध्यक्ष अनीशा डालमिया और सचिव सुधांशु पचीसिया ने पुलिस बल के बीच बांटने के लिए एन95 मास्क दिए।

मैंने अपने डीजी को सुनने के तुरंत बाद आधी रात को हमारे क्लब के व्हाट्सएप ग्रुप पर एक लंबा लेख पोस्ट किया और अगली सुबह 8 बजे तक हमारे पास दो संयंत्रों को प्रायोजित करने के लिए फंड तैयार थे। दोपहर 2 बजे मैंने DG को फोन किया और कहा कि हम सात संयंत्र लगाएंगे। उसके बाद भी हमें धन प्राप्त होता जा रहा था। अब हम महीने के अंत तक छह अन्य संयंत्र उपलब्ध कराएंगे, अनीशा मुस्कुराती है।

50 बेड तक की क्षमता वाले छोटे अस्पतालों में 45 लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की क्षमता वाले छह प्लांट लगाए गए और 100 बेड वाले दीन दयाल अस्पताल में 500 लीटर प्रति मिनट का प्लांट लगाया गया। क्लब के अध्यक्ष का कहना है, ₹2 करोड़ की लागत वाली इस परियोजना को पूरी तरह से हमारे सदस्यों, उनके दोस्तों और रिश्तेदारों की उदारता से वित्त पोषित किया गया। ये संयंत्र सैकड़ों लोगों की जान बचाएंगे, और बदले में, ये अस्पताल क्लब द्वारा अनुशंसित वंचित रोगियों के इलाज के लिए सहमत हुए है।

लोगों को एम्बुलेंस में इंतजार करते देखना और कुछ को अस्पताल परिसर में प्रवेश करने से पहले ही मरते देखना दिल दहला देने वाला है। हम ऐसा नहीं होने दे सकते। यह एक ऐसी जंग है जिसमें हम सभी को मिलकर लड़ना है। कोविड से संक्रमित हर व्यक्ति इलाज का हकदार है, वह कहती है। क्लब ने छोटे अस्पतालों और कोविड केयर केंद्रों को 1,100 ऑक्सीजन कॅंसंटेटर भी दिए है।

मंडल के सभी रोटरी क्लब ऑक्सीजन कॅंसेंट्रेटर, वेंटिलेटर सहित अन्य महत्वपूर्ण सुविधाएं प्रदान करने के साथ-साथ कोविड देखभाल एवं टीकाकरण केंद्र स्थापित करने के लिए सामूहिक रूप से कार्य कर रहे है।

इन सामूहिक प्रयासों की वजह से, हमनें जून के अंत तक मंडल के अस्पतालों में 10 और ऑक्सीजन संयंत्र उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता को बढ़ाया है, मेहरा कहते है। तीन अंतरराष्ट्रीय भागीदारों - इंग्लैंड, ह्यूस्टन और कैलगैरी के क्लबों के साथ होने वाले एक वैश्विक अनुदान से 675 बिस्तरों वाले गंगा राम अस्पताल में ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित करने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री इस संयंत्र का उद्घाटन करने के लिए राजी हो गए है, वह आगे कहते है।

दिल्ली के एक अस्पताल में ऑक्सीजन प्लांट लगाया जा रहा है।

300-बेड वाली कोविड सुविधा

मंडल के रोटरी क्लबों ने दिल्ली के आर के पुरम स्थित सर्वोदय स्कूल में 300 बेड की कोविड देखभाल सुविधा भी स्थापित की है। चूंकि स्कूल कुछ समय के लिए बंद है, इसलिए दिल्ली सरकार ने सुझाव दिया कि हम इस सुविधा को यहां लगाएं। कक्षाओं से फर्नीचर हटा दिया गया है और हमने 300 बेड उपलब्ध कराए है, और इनमें से 100 बेड में ऑक्सीजन की सुविधा होगी। यह सुविधा आपातकालीन उपयोग के लिए ऑक्सीजन कॅंसेंट्रेटरसे सुसज्जित है, और यह वास्तव में इस कठिन समय के दौरान रोगियों के लिए बहुत मददगार साबित हुआ है। मंडल दिल्ली में एक अन्य 100 बेड की सुविधा पर काम कर रहा है। कॉरपोरेट्स भी इस कार्य के लिए क्लबों का समर्थन कर रहे है।

राजधानी में 100 उपकरणों के साथ एक ऑक्सीजन कॅंसेंट्रेटरबैंक स्थापित किया गया है और यह सुविधा उपयोग के बाद वापसी के आधार पर काम करेगी। लॉजिस्टिक सहायता प्रदान करने के लिए बैंक सात स्थानों पर उप-बैंकों के माध्यम से पूरे मंडल में फैला रहेगा।

RIPE शेखर मेहता ने मुझसे पूरे भारत के प्रत्येक मंडल में कम से कम 10ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित करने में मदद करने का अनुरोध किया है और मैं RID डॉ भरत पांड्या, RIDE डॉ महेश कोटबागी और PDG रवि वाडलमानी के साथ इस पर काम कर रहा हूं,वह कहते है।

रोटरी क्लब दिल्ली प्रीमियर ने दिल्ली के सरकारी और निजी अस्पतालों में वितरण के लिए 10000 पीपीई किट दिए।

कोविड देखभाल योजना

अनीशा ने अपने क्लब के सदस्यों एवं उनके परिवारजनों के लिए एक कोविड देखभाल योजना तैयार की है। हमने परीक्षण प्रयोगशालाओं, सीटी स्कैन केंद्रों, टेली-परामर्शदाताओंएवं एम्बुलेंस सेवा प्रदाताओं के साथ हाथ मिलाया है और सदस्यों के बीच उनके संपर्क सूत्रों की एक तैयार सूची प्रसारित की गई है। हमने दिल्ली में एक केंद्रीय स्थान पर रोटेरियन और उनके तत्काल परिवारजनों के लिए ऑक्सीजन कॅंसेंट्रेटर और सिलेंडर भी तैनात किए हुए है। हमें 72 सदस्यों और उनके परिवारजनों की देखभाल करनी है, जो कुल मिलाकर कम से कम 300 लोग है,वह मुस्कुराती है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब बेलथंगड़ी, रो ई मंडल 3181, की संवहनीय जल संरक्षण परियोजनाएं

रशीदा भगत

*रोटरेक्टर्स, इंटरेक्टर्स, **RCC** सदस्यों और रोटेरियनों ने मिलकर बेलथंगड़ी में बांध का निर्माण करने के लिए काम किया।*

स्थायी जल संरक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए रोटरी क्लब बेलथंगड़ी, रो ई मंडल 3181, अभिनव, अनुकरणीय और पैसे बचाने वाली अनेक जल संरक्षण परियोजनाएं करते हुए रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के नवीनतम ध्यानाकर्षण क्षेत्र - पर्यावरण संरक्षण में सराहनीय रूप से सेवा कार्य कर रहा है।

चलिए तालुक में धान की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के लिए शुरू की गई परियोजना से शुरुआत करें। बेलथंगड़ी कर्नाटक का एक शहर है जो मैंगलोर से लगभग 60 किमी दूर है और लोकप्रिय तीर्थ स्थान धर्मस्थल के करीब है। इस तालुक में हाल ही के वर्षों में किसानों का रोपण फसलों की तरफ रुझान होने के कारण धान के खेत गायब हो गए है। 'पुराने अच्छे दिनों में, एक धान का खेत इस क्षेत्र में एक प्राकृतिक जल कोष का कार्य करता था। लेकिन धान के खेतों के गायब होने की वजह से, कुछ साल पहले बेलथंगड़ी को ब्राउन बेल्ट क्षेत्र घोषित किया गया और इसका भूजल स्तर लगातार कम होता जा रहा था,' क्लब अध्यक्ष धनंजय राव कहते है। इस क्लब में 80 सदस्य है और यह इस शहर का एकमात्र क्लब है।

क्लब के सदस्यों ने स्थानीय किसानों को शिक्षित कर उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान करके इस क्षेत्र में, विशेष रूप से बंजर और परती भूमि में, धान की खेती को पुनर्जीवित करने हेतु किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए एक परियोजना तैयार की। इस दक्षिण केनरा तालुक में खेती की प्रथाओं के परिप्रेक्ष्य को समझाते हुए राव कहते है कि पहले यहाँ के किसान धान उगाते थे और खेतों में ठहरे पानी के साथ धान के खेत जल संरक्षण का एक प्राकृतिक स्रोत बने रहते थे। 'लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, कृषि श्रम की लागत बढ़ने के साथ-साथ धान को चावल में बदलने की प्रक्रिया की लागत में बढ़ोत्तरी होने से अधिकांश किसानों का रुझान धीरे-धीरे सुपारी की खेती की ओर हो गया, जिसमें अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है।'

दूसरा पहलू यह है चूंकि सुपारी को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती और बरसात के

मौसम में पानी की अधिकता होने के कारण, वास्तव में इन खेतों से पानी को निकालना पड़ता है। बाढ़ सिंचाई द्वारा की जाने वाली धान की खेती इससे ठीक उलट होती है, जिसमें पानी को धान के खेत में 5 या 6 महीने तक भरे रहने दिया जाता है, जिससे प्राकृतिक जल संरक्षण होता है, राव आगे कहते है।

यहाँ के ज्यादातर किसानों के पास दो से चार एकड़ के छोटे रकबे है। प्रशंसनीय बात यह है कि रोटरी क्लब बेलथंगड़ी के सदस्यों ने इस जल संरक्षण परियोजना को एक स्थायी तरीके से शुरू किया जो पांच साल से चल रही है। पिछले कुछ वर्षों से, वे हर साल एक किसान को पावर टिलर जैसे आधुनिक उपकरण देते आ रहे है। धान की खेती के लिए आवश्यक ऐसे पावर टिलर की वास्तविक लागत लगभग छ3 लाख है। लेकिन सरकार से छ1.5 लाख की सब्सिडी भी मिलती है। हम क्लब के सदस्य शेष छ1.5 लाख जुटाते है और किसान को पावर टिलर दान करते है।

इस साल, हमारे सदस्य किसानों को धान की खेती की ओर रुख करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है, और "हम खेत की जुताई में लगने वाली श्रम लागत का भुगतान करके उनकी सहायता करते है। यह लागत लगभग ₹3,000-₹4,000 प्रति एकड़ है और हमारे क्लब के सदस्य खुशी-खुशी इस राशि को जुटाते है," राव मुस्कुराते है।

लेकिन धान के खेतों के गायब होने की वजह से, कुछ साल पहले बेलथंगड़ी को ब्राउन बेल्ट क्षेत्र घोषित किया गया और इसका भूजल स्तर लगातार कम होता जा रहा था।

इन रोटेरियनों के श्रम के परिणामस्वरूप बेलथंगड़ी तालुक में लैला, मुंडाजे, आंदिनजे, मीठाबागिलु, कोययुर और कुवेट्टु जैसे गांवों के साथ-साथ 15 एकड़ भूमि में प्राकृतिक जल स्रोतों की स्थापना हो गई है।

"हमारी शोध कहती है यदि एक एकड़ भूमि में एक इंच पानी इकट्ठा किया जाता है, तो यह उप-भूमि में पानी के भंडारण को प्रति दिन 1 लाख लीटर से अधिक बढ़ा देगा। इस गणित से हमारे क्लब ने बेलथंगड़ी में धान के खेतों में प्रतिदिन 15,41,580 x120 दिन पानी का संरक्षण किया है।"

क्लब अध्यक्ष आगे कहते है, इसके परिणाम स्वरूप, इस क्षेत्र के खेतों और घरों दोनों ने भूजल स्तर में निरंतर वृद्धि का अनुभव किया है।

रोधक बांधों का निर्माण

जल संरक्षण जैसी पर्यावरण अनुकूल गतिविधि पर अपना ध्यान केंद्रित करते हुए, इस क्लब ने रोधक बांधों का निर्माण भी शुरू किया है। राव समझाते है कि "पहले, सामुदायिक स्तर की सहयोगी गतिविधियाँ जैसे रोधक बांध का निर्माण कृषि सिंचाई और जल संरक्षण का एक पारंपरिक तंत्र था। लेकिन व्यक्तिगत

पर्यावरण के अनुकूल बनाया गया एक चेक डैम।

क्लब ने बेलथंगडी में धान की खेती को पुनर्जीवित करने में मदद की हैं।

दिल तोड़ने वाली घटना

कभी-कभी जब रोटेरियन किसी सामुदायिक सेवा परियोजना में इतनी सारि योजना, मेहनत और धन लगाते है, तो परियोजना के विकास के कुछ महीनों के भीतर उस परियोजना को बर्बाद होते देखना दिल तोड़ देने वाला मंजर होता है। फरवरी 2021 में, रोटरी क्लब बेलथंगड़ी के सदस्यों ने रोटरी क्लब मैंगलोर डाउनटाउन के साथ साझेदारी में दक्षिण कन्नड़ जिले के लैला गांव में बजक्रिसेल नामक स्थान पर एक सुराखदार बांध पर काम करना शुरू किया।

क्लब सेवा निदेशक योगिश भिड़े ने इस परियोजना का विवरण देते हुए कहा कि इस बांध में 11 सुराख हो गए थे और चार दिनों में इसका काम पूरा हो गया था। "बेलथंगड़ी के सरकारि कॉलेज के लगभग 120 NSS छात्रों ने हमारि रेत के 700 बोरियाँ भरने में मदद की, रोटरी क्लब मैंगलोर डाउनटाउन के सदस्य सुरेश हेब्बार द्वारा 110 फीट x 14 फीट की प्लास्टिक शीट दी गई, और प्रत्येक सुराख के लिए 60 बोरियों का इस्तेमाल किया गया। केवल आठ वेतनभोगी मजदूरों का इस्तेमाल किया गया और हमने यहाँ पर काम करने वाले सभी लोगों को घर का बना खाना परोसा, साथ ही कुछ लोगों ने मिठाई भी दी!"

इस कार्य का परिणाम यह हुआ कि नदी किनारे 4 किमी तक के क्षेत्र का जल स्तर 4 फीट की ऊंचाई तक बढ़ गया; "40 एकड़ भूमि को सीधे सिंचित किया गया और कुओं का जल स्तर लगातार बढ़ने से लगभग 200 स्थानीय लोगों को लाभ हुआ। मैं भी नजदीक ही रहता हूँ और व्यक्तिगत रूप से इससे लाभान्वित हुआ हूँ।"

उन्होंने कहा कि DG रंगनाथ भट ने इस सुराखदार रोटरी बांध का उद्घाटन किया।

लेकिन दिल तोड़ देने वाली बात अब आती है। भिड़े कहते है, "दुख की बात है कि हाल ही में दो गांवों को जोड़ने के लिए एक नई सड़क के निर्माण करने हेतु प्रशासन द्वारा इस सुराखदार बांध को तोड़ दिया गया।" इस संरक्षण परियोजना की बदौलत 1 मई तक बांध में पर्याप्त पानी था। संयोग से, भिड़े खुद एक किसान परिवार से है।

तो इससे रोटेरियनों का दिल टूट गया होगा, मैं उनसे पूछा। उनका जवाब उस सकारात्मक सोच का मूल है जो रोटरी में अंतर्निहित है। "हाँ ऐसा हुआ, मैं इससे इनकार नहीं कर सकता। दरअसल, यह बांध किसी भी सरकारि रिकॉर्ड में दर्ज नहीं था और इस बांध को बनाने के लिए मेरे दादाजी ने करीब पांच दशक पहले पहल की थी। लेकिन कई सालों से यह अनुपयोगी पड़ा था। लेकिन अब, हम इस बात से भी खुश है कि पुल, जो गांव के कुछ क्षेत्रों को जोड़ने का एकमात्र संभव मार्ग होगा, के साथ-साथ नए बांध का निर्माण भी किया जाएगा। यह सामान्य विकास के लिए भी आवश्यक था," वह मुस्कुराते है।

खेती के विकास के साथ, पारंपरिक लोकाचार खतरे में है।

इसलिए, सहकारी एवं सहयोगी सामुदायिक कार्य के पारंपरिक लोकाचार को पुनर्जीवित करने के लिए रोटरी क्लब बेलथंगड़ी के सदस्यों ने मंडल के एक अन्य क्लब रोटरी क्लब मैंगलोर डाउनटाउन - और रोटरी परिवार की अन इकाइयों जैसे RCC, रोटरेक्ट क्लब, बेलथंगड़ी फर्स्ट ग्रेड कॉलेज की NSS इकाइयों और SDM पॉलिटेक्निक कॉलेज उजीरे के साथ-साथ स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर कार्य किया। इस जीवंत साझेदारी के परिणामस्वरूप बेलथंगड़ी में बहने वाली प्राकृतिक जल धाराओं पर छह रोधक बांधों का निर्माण किया गया। "स्थानीय समुदाय के अलावा हमने अपने तीन रोटरेक्ट और पांच इंटरेक्ट क्लबों और 5 RCCयों के सदस्यों की भी सेवाएं ली। तो आप देख सकते है कि हमारे जल संरक्षण प्रयासों में हमरी मदद करने के लिए हमारे पास रोटरी परिवार की एक छोटी सी सेना है!"

स्थानीय रूप से उपलब्ध पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियाँ जैसे रेत, मिट्टी, नारियल के पेड़ों की शाखाएं, पत्थर, लकड़ी के तख्तों का उपयोग किनारों का निर्माण करने के लिए किया गया। "हमने पानी को रोके रखने के लिए तिरपाल और पॉलिथीन बैग का भी इस्तेमाल किया।"

जब मैंने पॉलिथीन बैग के उपयोग करने पर असहमति जताई, तो राव समझाते है कि अधिकांश तौर पर रोधक बांधों की दीवारों को मजबूती प्रदान करने के लिए रेत और अन्य सामग्री से भरी सीमेंट की बोरियों का उपयोग किया जाता है। चूंकि सीमेंट की बोरियां लीकेज प्रूफ नहीं होती, इसलिए किनारों से पानी के रिसाव को रोकने के लिए पॉलिथीन बैग का इस्तेमाल किया जाता है।

ऐसे प्रत्येक बांध के निर्माण के लिए, जिसमें लगभग दो से तीन दिन लगते थे, रोटेरियनों ने श्रम सहायता प्रदान करने हेतु "लगभग 100 सदस्यों" की मदद ली। हमारी भूमिका यह सुनिश्चित करने की थी कि उनमें से प्रत्येक को ताजा, घर का बना भोजन परोसा जाए।

प्रत्येक बांध के जलग्रहण क्षेत्र और लाभार्थियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए गाँव के क्षेत्रों में बाँधों का निर्माण किया गया और इससे मुंडाजे, थोटाथड़ी, नेरिया, चर्माडी और लैला जैसे गाँव

चेक डैम के निर्माण में मदद करने वाले रोटरक्टरों को ताजा, घर का बना खाना परोसा जा रहा है।

लाभान्वित हुए। "इस परियोजना से 150 से अधिक परिवार लाभान्वित हुए और 5-10 किमी के दायरे में फैली 50 से लेकर 100 एकड़ से अधिक की कृषि भूमि के कुंडों और कुओं में पानी का रिसाव शुरू हुआ। स्थानीय रूप से उपलब्ध उत्पादों का उपयोग और न्यूनतम लागत इस परियोजना के मुख्य आकर्षण थे," क्लब सेवा निदेशक योगिश भिड़े कहते है।

RCB के इस सतत जल संरक्षण प्रयास के परिणामस्वरूप मीडिया, शोधकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और समुदाय के बड़े हिस्से का ध्यान आकर्षित हुआ। "अब हम स्थानीय समुदायों को शामिल करके जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने के लिए परामर्श सेवाएं प्रदान करते है," राव तसल्ली के साथ कहते है।

50 से लेकर 100 एकड़ से अधिक की कृषि भूमि के कुंडों और कुओं में पानी का रिसाव शुरू हुआ।

पानी की बर्बादी को रोकना

चिलचिलाती गर्मी के दिनों में भी घरों, स्कूलों और कार्यालयों की छतों पर बनी टंकियों से अतिप्रवाह के कारण भारी मात्रा में पानी की बर्बादी देखने को मिलना एक आम बात है। के पी प्रसाद, एक रोटेरियन और NITK, सुरथकल, के पूर्व छात्र, जो SDM पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्रमुख है, ने धर्मस्थल मंदिर के एक परोपकारी और वंशानुगत प्रशासक रोटेरियन डी वीरेंद्र हेगड़े के मार्गदर्शन में पानी की इस तरह से बर्बादी को रोकने के लिए एक किफायती उपकरण का आविष्कार किया और उसे लोकप्रिय बनाया। उन्होंने ऐसा एक डिवाइस के जरिए किया है जिसका नाम उन्होंने *SDM रोटरी जल रक्षक* रखा है।

यह उपकरण छत पर रखी टंकी में पानी भरने के दौरान जल स्तर की निगरानी करता है और टंकी में एक निश्चित स्तर तक जल पहुँचने पर यह अलार्म बंद हो जाता है। RCB ने ग्राम पंचायत, पुलिस थानों, स्कूलों आदि जैसे सार्वजनिक कार्यालयों में 50 ऐसे जल बचत उपकरण वितरित किए।

वर्षा जल का निस्पंदन

रोटरी जीवनधारा नामक एक अन्य परियोजना वर्षा जल को संचित करने से पहले उसके निस्पंदन से जुड़ी है ताकि पानी में शामिल गाद और अन्य कार्बनिक अवशेष निकाले जा सके और पानी की गुणवत्ता में सुधार हो सके। इस उद्देश्य के लिए, रोटरी क्लब बेलथंगड़ी के सदस्यों ने ₹3,500 की किफायती लागत पर एक वर्षा जल संचयन फ़िल्टर तैयार किया और बेहतर गुणवत्ता वाले वर्षा जल संचयन को प्रोत्साहित करने के लिए कारखानों, कार्यालयों और घरों में 10 फ़िल्टर वितरित किए। इस सरल उपकरण के माध्यम से पानी को फ़िल्टर करके उसे सीधे खुले कुओं या नलकूपों में प्रवाहित किया जा सकता है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

होल्गर नेक
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

भारत की मदद के लिए कदम उठाए

के आर रवींद्रन
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

प्रिय डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स,

हमें उम्मीद थी कि 2021 दुनिया भर में फैल रहे वायरस से राहत लाएगा। दुर्भाग्य से, भारत में फैलती भयावह दूसरी लहर और ब्राजील में बिगड़ती स्थिति हमें निराश करती है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो अछूता रह गया हो।

टीकों के विकास और वितरण से दुनिया के कुछ हिस्सों में उम्मीद, आशा और सामान्य स्थिति में वापसी की झलक देखने को मिली। दुर्भाग्य से, दुनिया का अधिकांश हिस्सा अभी बहुत पीछे है, हाल ही में फैल रहे संक्रमण की वजह से जो दैनिक संक्रमण को उसके उच्चतम स्तर तक पहुँचने में मदद कर रहा है।

प्रति दिन 400,000 से अधिक नए मामलों के आने के साथ, ऑक्सीजन की अत्यंत कमी, अस्पताल में बिस्तरों की कमी, और मौत के बढ़ते आँकड़ें भारत में स्थिति के बेहतर होने का कोई भी संकेत नहीं दे रहे है, और यहाँ मदद की तत्काल आवश्यकता है। इसी तरह, ब्राजील और कई अन्य देशों को कुछ समान दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है और उन्हें सहायता की बहुत अधिक आवश्यकता है।

हम मंडल गवर्नरों से आपूर्ति और उपकरण भेजकर सहायता प्रदान करने की अपील कर रहे है, जैसे कि ऑक्सीजन संकेंद्रक, वेंटिलेटर और जिस किसी भी चीज़ की आवश्यकता हो वो। हम आपको अपने मंडल में क्लबों के साथ काम करने और देश भर में जरूरतमन्द रोटरी क्लबों के साथ समन्वय करने के लिए प्रोत्साहित करते है, ताकि वस्तु के रूप में सहायता प्रदान की जा सकें और परिवहन में समन्वय किया जा सकें - या तो निजी कँम्पनी के माध्यम से या स्वयं के द्वारा भेजी गई आपूर्तियों का भुगतान करके। आप अन्य क्लबों, मंडलों या स्थानीय संगठनों के साथ साझेदारी करके एक संयुक्त प्रयास भी कर सकते है।

मंडल, क्लब और सदस्य महत्वपूर्ण आपूर्तियों एवं सेवाओं को प्रदान करके एवं लीक से हटकर सोचकर भारतके साथ-साथ ब्राजील की सहायता करने के लिए पहले ही मैदान में आ चुके है। इनके कुछ उदाहरण है:

- रोटरी मंडल 6400 और रोटरी क्लब एसेक्स आक्सिजन कॉन्ट्रैक्टर की आपूर्ति करने की दिशा में जाने वाले दान के समन्वय के लिए रोटरी इंडियास कोविड टास्क फोर्स के साथ साझेदारी कर रहे है।
- रोटरी मंडल 6900भारत को वेंटिलेटर, एनेस्थीसिया मशीन, ऑक्सीजन और श्वसन आपूर्ति जैसे चिकित्सीय उपकरण भेजने के लिए अन्य संगठनों, जिनमें णझड शामिल है, के साथ साझेदारी कर रहा है।
- रोटरी क्लब मद्रास ने टीके की दो मिलियन खुराक लेने जाने में सक्षम 8 फुट के दो प्रशीतित ट्रकों को दान किया, और केरल राज्य के रोटरी क्लबों ने पिछले तीन हफ्तों में रोटरी केंद्रों एवं शिविरों के माध्यम से लगभग 51,000 मुफ्त टीके लगाने की सूचना दी है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका के रोटेरियन उपकरण खरीद रहे है और भारत भेज रहे है। रॉकफोर्ड, इलिनोइस, के एक क्लब ने जेट के माध्यम से उपकरण भेजने के लिए एक निजी एयरोस्पेस कँम्पनी के साथ समन्वय किया।
- रोटरी यूथ एक्सचेंज के एक पूर्व छात्र संघ ने 50 ऑक्सीजन संकेंद्रक खरीदने के लिए एक क्राउडफंडिंग अभियान शुरू किया है।
- ब्राजील में, रोटरी सदस्य कोविड-19टीकों को बेहतर ढंग से वितरित करने के लिए वैक्सीन कोल्ड चेन को बेहतर बनाने के तरीकों की तलाश कर रहे है, और प्रशीतन उपकरणों के निधीयन हेतु मदद की आवश्यकता है।

रोटेरियनों के रूप में, हम कोविड-19 महामारी के दौरान प्रेरणादायक तरीकों से समुदायों का समर्थन करने के लिए सेवा के नाम पर एक साथ आए है। हम आपसे एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने और इस अंधकारमय समय में प्रकाश को खोजने एवं संक्रमण की वर्तमान लहर को दूर करने के लिए भारत और अन्य देशों की मदद करने का निवेदन करते है।

धन्यवाद,

होल्गर नेक
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

के आर रवींद्रन
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

अन्वेषक, सुधारक, बागी

RIDE महेश कोटबागी

रशीदा भगत

उनके आचरण से आपको उनके द्वारा झेले जाने वाले अथाह दबाव का पता नहीं चलता है। अप्रैल के अंत में मेरे द्वारा उनका साक्षात्कार लिए जाने के दौरान 75 बिस्तरों वाला उनका कोटबागी अस्पताल 100 कोविड पॉजिटिव रोगियों की देखभाल कर रहा था। "पुणे में कोविड की स्थिति भयानक है और 45 दिनों में ही हम पागल हो चुके है। हमारे पास लगभग 100 कोविड-पाज़िटिव रोगी है और हम हर दिन 5-6 मौतें देखते है। हमारा 30 प्रतिशत स्टाफ एक बार नहीं बल्कि दो बार पाज़िटिव हुआ है। हम रोजाना 400 लोगों का टीकाकरण करते है," नवनिर्वाचित रो ई निदेशक महेश कोटबागी कहते है। भारत के जिन रोटरी नेतृत्वकर्ताओं का कोविड टेस्ट पाज़िटिव आया है वह उनपर दूर से निगरानी रखने का भी कार्य कर रहे है।

वह डॉक्टरों से घिरे हुए है उनके पिता और दादा, पत्नी अमिता और उनकी बड़ी बेटी चिन्मयी सब डॉक्टर है। उनकी छोटी बेटी सना भी चिकित्सा की ही पढ़ाई कर रही है।

कोटबागी ने 1991 में पुणे विश्वविद्यालय से प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान में अपना पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा किया। उसी वर्ष उन्होंने सरकारी नौकरी कर रहे अपने पिता से एक अलग रास्ता अपनाकर कोटबागी अस्पताल शुरू किया। "मैंने छोटी शुरुआत की; कॉलेज के अपने अंतिम वर्ष में मैंने ऋण लेकर एक अस्पताल बनाने का फैसला किया।" जब तक वह स्नातक हुए तब तक इसका केवल एक हिस्सा ही तैयार हुआ था और यह अस्पताल केवल 10 बिस्तरों के साथ शुरू हुआ जिसे बाद में विस्तारित किया गया।

कम लागत वाली स्वास्थ्य सेवाओं के समर्थक होने के नाते उन्होंने कम लागत वाले अनेक

रोटेरियनों को यह समझने की आवश्यकता है कि एक डीजी या निदेशक केवल एक पूर्व गवर्नर या निदेशक बन जाएंगे। लेकिन कोई भी उन्हें पूर्व-रोटेरियन नहीं बना सकता।

एक झलक

धर्म: मेरा मानना है कि भगवान हर जगह है; मैं हर धार्मिक स्थल, मस्जिद, चर्च, मंदिर आदि में जाता हूँ।

भोजन: मैं खाने का शौकीन हूँ, और मेरा पसंदीदा व्यंजन भारतीय मांसाहार है।

छुट्टियों पर जाने का पसंदीदा स्थल: मुझे विश्व भ्रमण करना पसंद है; मैं 50 से अधिक देशों में बाइक सवारी, कार रैली और उड़ान भर चुका हूँ। एक स्थान को सूचीबद्ध करना मुश्किल है लेकिन भारतीय हिमालय, नॉर्वे, आयरलैंड और न्यूजीलैंड मेरे पसंदीदा स्थल है। हालांकि अमिता को अलास्का पसंद है। न्यूजीलैंड में मैंने अपने परिवार के साथ उत्तर से दक्षिण तक एक मनोरंजन वैन चलाई। जिस भी देश में मैंने गाड़ी चलाई; वहाँ कोई पैकेज या होटल आरक्षण नहीं था!

पढ़ना: मैं पढ़ने में बहुत पीछे था। मेरी मां मुझे सुनने के लिए 25 पैसे प्रति पेज देती थी। इसी तरह मैं डॉक्टर बना!

संगीत: मुझे विश्व संगीत पसंद है... सभी प्रकार की जुगलबंदी, पियानो, रैप, सैक्सोफोन, तबला, आदि।

फ़िल्में: मैं किसी थिएटर में 5-10 साल से नहीं गया!

पसंदीदा अभिनेता: अमिताभ बच्चन, हमेशा के लिए।

आराम: मैं कभी आराम नही ंकरता।

फिटनेस: मैं बहुत सारी साहसिक गतिविधियां करता हूँ। डर्ट ट्रैक पर एक हार्ले डेविडसन पर एक ही दिन में 1,200 किमी की लंबी सवारी। मैं बीएमडब्ल्यू और मर्सिडीज बेंज चलाता हूँ और अपने कॉलेज के दिनों से कार रैलियां करता रहा हूँ।

खाना पकाना: मुझे बारबेक्यू और ग्रिल्स करना बहुत पसंद है, जो मेरे दोस्तों को भी पसंद है। मैं सभी प्रकार के मांस, मछली, गोश्त, चिकन पका सकता हूँ।

फिटनेस: मैं नियमित रूप से व्यायाम और हृदय संबंधी गतिविधियां करता था, लेकिन पिछले 18 महीनों में रोटरी ने मुझे कभी खाली नहीं छोड़ा।

अस्पतालों को विकसित करने हेतु एक सलाहकार के रूप में कार्य किया। उन्होंने कम लागत वाली स्वास्थ्य सेवाओं और बच्चों की शिक्षा का समर्थन करने के लिए चिन्मयी मेडिकल फाउंडेशन चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की।

रोटरी की प्रारंभिक यात्रा

उनकी रोटरी यात्रा तब शुरू हुई जब एक नेत्रहीन रोटेरियन, निरंजन पांड्या, जिन्हें बाद में नेत्रहीनों को अपनी सेवा देने के लिए पद्मश्री दिया गया, ने स्वयं के द्वारा शुरू किए जा रहे एक नवीन - रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी - से जुड़ने के लिए कोटबागी के पिता से संपर्क किया। "उनके पास भौतिक दृष्टि तो नहीं थीलेकिन एक विशाल मानसिक दृष्टिकोण जरूर था। मेरे पिता ने उनसे मुझे जोड़ने का सुझाव दिया।'

इसका कारण पुणे विश्वविद्यालय में 10 वर्षों का बेटे का ट्रैक रिकॉर्ड था। 'मैं 10 साल तक छात्र संघ प्रतिनिधि के पद पर बना रहने वाला एकमात्र विद्यार्थी था," कोटबागी मुस्कुराते है। वह एक छात्र प्रतिनिधि के रूप में *सीनेट* के सबसे युवा सदस्य बने और 'ग्रामीण छात्रों एवं महिलाओं के हक में न्याय दिलाने के लिए वह विद्यार्थियों के आंदोलन में सबसे आगे रहते थे। पुणे तब भी ए शिक्षा का एक केंद्र था और वहाँ पर 25 से अधिक राज्यों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे, वे कई तरह की परेशानियों का सामना करते थे,प्रवासन, प्रवेश, परीक्षा में देरी, और हमने ATKT(अलाउड टू कीप टर्म)जैसी कुछ चीज़ों के लिए आंदोलन चलाया जिसका अर्थ यह था कि यदि कोई

विद्यार्थी एक विषय में फेल हो जाता है तो उसका पूरा साल व्यर्थ न जाएं। तो क्या उन्हें भी ATKT की जरूरत पड़ी, मैंने उनसे मजाक में पूछा।

'सौभाग्य से, नहीं' वह हंसते हुए आगे कहते है, 'मैं एक प्रतिभावान विद्यार्थी था। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी लेकिन मैं दूसरों के लिए लड़ा।' एक बहुत ही लोकप्रिय छात्र नेता होने के नाते वह आसानी से 25,000-50,000 की संख्या में छात्र रैलियाँ आयोजित कर सकते थे। 'लोगों को लगता था कि मैं राजनीति में शामिल हो जाऊंगा!'

क्या उन्हें कभी इसका अवसर मिला, मैंने उनसे पूछा। "हां बिल्कुल, मुझे हर प्रकार की सीट की पेशकश की गई थी... नगर निगम, विधायक की सीट, मेयर का पद और यहाँ तक एक कि राज्यसभा की सीट भी। लेकिन मैंने उन सभी को ठुकरा दिया क्योंकि मेरे माता-पिता ने मुझे मना कर दिया था भले ही उन दिनों शिक्षित लोगों का राजनीति में शामिल होने का चलन था। मुझसे रोटेरियन पांड्या से जुड़ने के लिए कहना शायद मेरे पिता का मुझे राजनीति से दूर रखने का एक अप्रत्यक्ष तरीका था!"

युवा कोटबागी ने पांड्या से पूछा कि उनसे क्या अपेक्षा की गई थी। 'उनका सपना महाराष्ट्र के सबसे बड़े नेत्र अस्पतालों में से एक का निर्माण करना था और उन्हें अस्पताल उद्योग में मेरे अनुभव पर भरोसा था।उन्हें एक भरोसेमंद व्यक्ति की आवश्यकता थी जो चेक पर हस्ताक्षर कर सके और अन्य काम कर सके।

चुनौती को स्वीकार करते हुए कोटबागी 1995 में क्लब में शामिल हुए और उन्होंने नेत्रहीनता पर शोध किया। "मैं क्रिस्टोफर ब्लाइंड मिशन, जर्मनी, साइट सेवर्स, द नेशनल ब्लाइंड मिशन से जुड़ा हुआ था; मैंने मदुरई के अरविंद नेत्र अस्पताल का दौरा किया और ऑस्ट्रेलिया की वर्ल्ड ब्लाइंड फोरम में भाग लिया। मैंने नेत्रहीनता से जुड़ी हर चीज़ और नेत्रहीन व्यक्तियों के मनोविज्ञान के बारे में जाना... वे कैसे सोचते है और योजना बनाते है; कैसे एक कुत्ते को किसी नेत्रहीन आदमी के साथ यात्रा पर जाने हेतु प्रशिक्षित किया जा सकता है, आदि।'

वह तीन साल के भीतर क्लब अध्यक्ष बन गए, सेवा गतिविधियों में भाग लेने के साथ ही

हमारे सदस्य स्पास्टिक बच्चों के मनोरंजन केंद्र, में बच्चों से मिलते है और इस केंद्र में सम्मिलित होने के कारण,हमारी सदस्यता शत-प्रतिशत बनी हुई है।

उन्हें "कई महान अनुभव प्राप्त हुए जिनमें से एक लोगों का भरोसा जीतना है ताकि वे दान करने हेतु आगे आए, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। छह महीने के बाद, मैं प्रिंट की गई दान प्राप्तियों के लिए प्रिंटर का भुगतान करने तक की पर्याप्त धन राशी नहीं जुटा सका," वह याद करते है।

लेकिन इसने उन्हें यह सिखाया कि धन कैसे जुटाया जाता है। 'बाद में, लोगों के योगदान से हम बहुत कुछ हासिल कर सकें लेकिन शुरुआत बहुत ही खराब थी।" पांड्या पुणे ब्लाइंड मेंस एसोसिएशन (PBMA) के कार्यकारी सचिव थे, जो पुणे में नेत्रहीन लोगों के सबसे बड़े संगठनों में से एक थाऔर यह अस्पताल झइच, रोटेरियनों और CSR भागीदारों के लिए था। "इस अस्पताल को बनने में 10 साल लग गए, सरकार ने इसके लिए सब्सिडी वाली जमीन दीऔर आज यह महाराष्ट्र में दृष्टिहीनों का सबसे बड़ा अस्पताल है और यहाँ पर रोजाना 100 नि:शुल्क नेत्र ऑपरेशन होते है," वह गर्व के साथ कहते है।

कोटबागी अपने क्लब और मंडल (तत्कालीन 3130) जिसमें 155 क्लब थे,के सबसे युवा सदस्य थे। 1997 में, जब अध्यक्ष-निर्वाचित को अचानक यूरोप में स्थानांतरित कर दिया गया, तोबोर्ड ने कहा कि अंतिम क्षण में जो एकमात्र व्यक्ति उनका स्थान ले सकता है वह महेश है।

वह गवर्नर कैसे बने यह एक दिलचस्प कहानी है; अपने अध्यक्षीय वर्ष के बादउन्होंने एक GSE व्यावसायिक टीम का नेतृत्वकर्ता बनने हेतु आवेदन दिया और उनका चयन भी हो गया। "लेकिन डीजी और पीडीजीयों के साथ समूह चर्चा में,उनसे कहा गया कि आप सबसे अच्छे उम्मीदवार है लेकिन टीम के सदस्यों की तुलना में बहुत छोटे होने के नातेआपका चयन नहीं किया जा सकता है। आपके पास अभी बहुत उम्र बाकी है इसलिए बाद में भी ऐसा किया जा सकता है।"

भेद भाव महसूस होने पर उन्होंने मंडल सचिवालय के एक सदस्य के रूप में इस्तीफा दे दिया; "DGE ने मुझसे पूछा कि क्या आप नाराज है। मैंने कहा नहीं, मैंने यह इस्तीफा इसलिए दिया क्योंकि मंडल का एक

उपनियम यह कहता है कि इस सदस्यता की वजह से मैं DG के पद का चुनाव नहीं लड़ सकता। और मैं ऐसा करने जा रहा हूँ। ताकि भविष्य में मुझे किसी को साक्षात्कार न देना पड़े बल्कि एक डीजी के रूप में मैं दूसरों का साक्षात्कार ले सकूँ।"

वरिष्ठजनोंको चकित करते हुए और उनके अविश्वास के बीच, कोटाबागी ने चुनाव लड़ा और प्रचंड बहुमत के साथ विजयी हुए।

अपने गवर्नर वर्ष की मुख्य झलकियों पर आते हुए कोटबागी कहते है कि जापानी रोटेरियनों के साथ उन्होंने महिलाओं के लिए साक्षरता केंद्रों की स्थापना की। "अमिता और मैंने जापान में एक मैत्री विनिमय यात्रा की, उन्होंने पुणे का दौरा किया, हमने 13 गांव गोद लिए और कई व्यावसायिक केंद्रों, स्कूलों का निर्माण किया, महिलाओं के समूहों को प्रशिक्षित किया और उन्हें बसें दान की।"

लेकिन उनके दिल की सबसे करीबी और अग्रणी परियोजना पुणे में अपाहिज बच्चों के लिए स्थापित एक छोटे से स्कूल, बाल कल्याण संस्थान, में मनोरंजक

अतीत में मंडल सम्मेलन

उन दिनों हमारे मंडल सम्मेलनों सहित अनेक सम्मेलनों में सभी पूर्व मंडल गवर्नर सारा दिन मंच पर बैठते थे... केवल उद्घाटन सत्र में ही नहीं बल्कि पूरे सम्मेलन के दौरान," महेश कोटबागी याद करते हुए कहते है। एक युवा और शरारती रोटेरियन होने के नाते वह अपने आसपास बैठे लोगों से पूछा करते थे, "क्या आपको नहीं लगता इन PDG यों को वॉशरूम जाने की आवश्यकता है?

वे लगातार इतने घंटों तक मंच पर कैसे बैठे रह सकते है? मेरे आस पास के सभी प्रतिनिधियों के या तो सफेद बाल थे या उनके बाल ही नहीं थे।

उन दिनों हमारे मंडल में एक युवा रोटेरियन की कोई अवधारणा नहीं थी। गवर्नर की औसत आयु 65-70 थी।"

एक डीजी के रूप में अपने मंडल सम्मेलन के दौरान, कोटाबागी ने मंच पर सभी डीजीयों के बैठने की प्रणाली की निंदा करते हुए कहा, "जब प्रमुख वक्ता प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे होते है तो उनके पीछे बैठे वीआईपी प्रतिनिधियों को उनकी पीठ नज़र आती है। जिस वजह से वे न ही एक दूसरे के चेहरे के हाव-भाव देख सकते है और न ही आंखें मिला सकते है इससे भाषण का प्रभाव कम होता है।

"मैंने कहा कि मंच पर केवल वक्ता को होना चाहिए और डीजीयों सहित अन्य सभी को दर्शकों के बीच बैठना चाहिए। आज आपको मंडल सम्मेलनों में जो खाली मंच नज़र आता है वो मेरे गवर्नर वर्ष के साथ ही शुरू हुआ था।'

कोटबागी कहते है कि वे 10 रोटरी संस्थानों के नियोजन में शामिल थे; ये उतनी ही नीरस हुआ करती थी, 'जिसमें से आधा समय पूर्व निदेशकों और वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं का सम्मान करने में चला जाता था और लोग बहुत बोर हो जाते थे।'

दूसरा लंबे परिचय को भी बंद किया गया; 8 मिनट के भाषण के लिए 10 मिनट का परिचय! 'अधिकांश समय यही होता रहता था कि आप मेरा काम करें और बदले में मैं आपका काम करूंगा'। मैं बहुत ही कुंठित हो गया और मैंने यह सब बकवास बंद करने के लिए कहा।

शेखर मेहता के संस्थान में निदेशक के रूप में मेरे द्वारा पहली दृश्य-श्रव्य परिचय क्लिप पेश की गई थी। मैंने कहा कोई भी दृश्य-श्रव्य दो मिनट से अधिक नहीं होगा!'

ठीक ऐसा ही साक्षरता शिखर सम्मेलन में भी किया गया जहाँ वह योजना बनाने और उसके निष्पादन में करीब से शामिल थे।

नीचे बाएँ से दक्षिणावर्त:

अमृतसर में स्वर्ण मंदिर में महेश कोटबागी; न्यूजीलैंड में एक आर वी के साथ; नॉर्वे में नौकायन; घर पर अपने माता-पिता के साथ; अमिता के साथ।

अमिता की भूमिका

अमिता और मेरे माता-पिता दोनों ने बहुत बड़ी सहायक भूमिका निभाई है। मैं हमारे ज़ोन में निदेशक बनने वाला सबसे युवा व्यक्ति हूँ। हमें बहुत यात्रा करनी पड़ती थी और मेरे माता-पिता ने हमेशा कहा कि आप समाज सेवा कर रहे है, इसलिए जहाँ मन हो वहाँ की यात्रा करें। उन्होंने अमिता से भी यही कहा, जिसे वे अपनी बेटी मानते है।

जब मैंने डीजी का चुनाव जीता, अमिता की गोद में हमारी छोटी बेटी थी! जब हम अंतर्राष्ट्रीय सभा में गए तो अमिता ने बच्चों की देखभाल करने के लिए रिश्तेदारों की एक फौज लगा दी - मेरे माता-पिता और बहन, उनके माता-पिता और बहनें।

अमिता कहती है: "बच्चे बहुत खुश थे क्योंकि उन्हें इतना लाड़-प्यार मिल रहा था। वो तो मैं ही थी जो फोन पर उनसे बात करते वक्त रो पड़ती थी। कुछ प्रशिक्षण सत्रों में रोटेरियन हमारे बच्चों को गोद में लिए रहते थे जबकि हम दोनों मंच पर होते थे!"

अमिता मेरे अस्पताल के काम, परिवार के काम, रोटरी के काम में पूरी तरह से सहायक रही है।

वह सभी रोटरी गतिविधियों में शामिल थी। वह 2000 में रोटरी में शामिल हुई और गवर्नर को छोड़कर अध्यक्ष, सहायक गवर्नर, प्रशिक्षक जैसे सभी पद संभाल चुकी है!

महेश कहते है

नेतृत्व के गुण: त्वरित निर्णय लेना, नवाचार और पारदर्शिता।

अगले दो वर्षों की प्राथमिकताएं: प्रशिक्षण; मैं एक अटल प्रशिक्षक हूँ। मैं लगभग एक लाख लोगों को नि:शुल्क सर्जरी और चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए 15 भारतीय राज्यों में 15 चिकित्सा मिशनों को आयोजित करना चाहता हूँ। हम मुख्यमंत्रियों और राज्य के स्वास्थ्य मंत्रियों से बात कर रहे है। दूसरी, RILM को हमेशा प्राथमिकता दी जाएगी क्योंकि साक्षरता हमारा भविष्य है और यह शर्म की बात है कि 1947 से 2021 तक हम भारत को साक्षर नहीं बना पाए।

रोटरी भारत की ताकत और कमजोरियाँ: हम जो सेवा परियोजनाएँ करते है और जो श्रम शक्ति लगाते है; उसमें हम एक तरफ है और बाकी दुनिया दूसरी तरफ! हमारे पास एकल मंडल है जो 40 वैश्विक अनुदान, 20-25 सीएसआर अनुदान और अन्य परियोजनाएं कर रहे है जिनके बारे में हमें जानकारी भी नहीं है। हमारे ज़ोनों में सबसे अधिक वैश्विक अनुदान किए जाते है क्योंकि हमारे पास सेवा प्रदान करने का मंच और अवसर मौजूद है। इसके अलावा, हमारे सभी धर्मों में सेवा को पुण्य समझा जाता है इसलिए यह हमारे खून और संस्कृति में है। हमारी चुनौती यह है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते है, प्रतिस्पर्धा और राजनीति भी अधिक होती है। हम यह नहीं कह सकते कि हम आगे तो बढ़ेंगेलेकिन राजनीति नहीं करेंगे। हम इससे कैसे निपटें? हमें एक जादूगर चाहिए! चुनाव का न होना सही नहीं है; यह सदस्यों का लोकतांत्रिक अधिकार है। लेकिन रोटेरियनों को यह समझने की आवश्यकता है कि एक डीजी या निदेशक केवल एक अवधि के लिए होता है; आप एक पूर्व गवर्नर या निदेशक बन जाएंगे। लेकिन कोई भी मुझे पूर्व-रोटेरियन नहीं बना सकता। एक बार जब हम यह जान जाएंगे, तो बाकि समस्याएं स्वयं ही खत्म हो जाएंगी।

महामारी की चुनौतियां: कई स्वरूपों को बदलना होगा; यदि आप युवाओं को आमंत्रित करना चाहते हैतो 20 मिनट के भाषण या अध्यक्ष और उनकी पत्नी का 20 तस्वीरों वाला क्लब का न्यूजलेटर से काम नहीं चल सकता! यदि आप महिलाओं को आमंत्रित करना चाहते है तो बैठक स्थल बहुत दूर नहीं रखे जा सकते और न ही देर रात तक बैठक की जा सकती है,जहां कुछ लोग नशे में हो सकते है और अभद्र टिप्पणियाँ कर सकते है। महिलाएं आसानी से दूर हो जाएंगी। बैठकें भी लचीली, नाश्ता के समय, दोपहर के भोजन के समय या ऑनलाइन करनी होगी। हम कहते है कि रोटरेकटर अब रोटरी का हिस्सा है। अच्छी बात है लेकिन एक रोटरेकटर ने मुझसे पूछा कि बूढ़ा पॉल हैरिस का पिन क्यों। हम एक युवा हैरिस का पिन पसंद करेंगे। महामारी के बाद रोटरी के एक मिश्रित संस्करण को सामने आना होगा जिसकी 40 प्रतिशत बैठकें ऑनलाइन हों। बड़े शहरों में, वे ट्रैफिक जाम के साथ की जाने वाली लंबी ड्राइव से राहत देंगी!

अभिलषित मूल्य, शिक्षण: बचपन में मैंने अपने पिता को चिकित्सा देखभाल या दवाइयाँ देने के लिए गाँवों तक बैलगाड़ियों पर जाते हुए देखा। मैंने किसानों को अपनी माँ को चावल की थैलियाँ, गुड़ या सब्जियाँ देते हुए देखा जो कहते थे कि उन्होंने हमारी जान बचाई है इसके लिए छोटी सी भेंट। मैंने बचपन में सीखा कि प्रशंसा के लिए धन; या ज्ञान प्रदान करने के लिए एक डिग्री आवश्यक नहीं है और यह कि जरूरी नहीं है मांसपेशियाँ ही ताकत प्रदान करें।

सपना: मैंने कभी भी रोटरी से कुछ नहीं चाहा लेकिन रोटरी ने मुझे महान मंच, दुनिया के हर कोने में एक दोस्त, बोलने, बातचीत करने, सीखने और कार्य करने के बहुत सारे अवसर दिए है। मैंने कभी कुछ नहीं मांगा और यहाँ तक आया, और निश्चित रूप से आगे भी जाऊंगा।

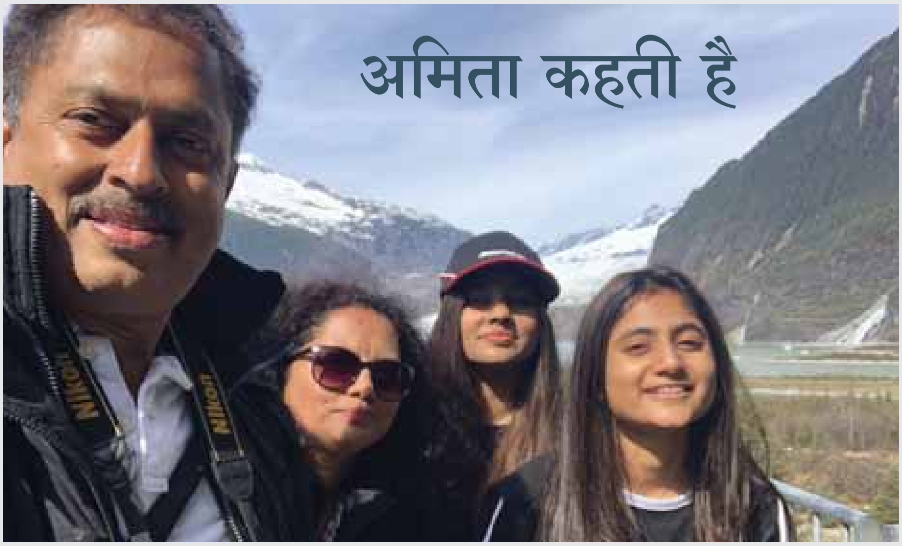

अमिता कहती है

बाए से : महेश कोटबागी, अमिता, चिन्मयी और सना।

मंडल सम्मेलन में मेरे आस पास के सभी प्रतिनिधियों के या तो सफेद बाल थे या उनके बाल ही नहीं थे। उन दिनों हमारे मंडल में एक युवा रोटेरियन की कोई अवधारणा नहीं थी।

वह महेश से कैसे मिली, मैंने अमिता से पूछा। "ओह, महेश मेरा बचपन का दोस्त है और हम तब मिले थे जब वह 12वीं कक्षा में था और मैं 11वीं कक्षा में थी। हम करीबी दोस्त बन गए और शुरू में मैंने इंजीनियरिंग में शामिल होने के बारे में सोचा था क्योंकि मेरे पिता एक इंजीनियर थे लेकिन महेश ने कहा कि वह एक डॉक्टर बनने जा रहा है और अच्छा होगा यदि मैं भी उसी के पेशे में शामिल हो जाऊँ।"

उनकी वजह से जिस लड़की ने 11वीं कक्षा में जीव विज्ञान को छोड़कर गणित लिया था उसने अगले साल फिर अदला-बदली की!

दोस्ती प्यार में कब बदल गई पर वह कहती है, "चूंकि हम एक ही पेशे में थे, हम एक-दूसरे से अलग-अलग मौकों पर मिलते रहते थे और एक समय ऐसा भी आया जब हमें यह कहने की जरूरत नहीं पड़ी कि हमें एक दूसरे से प्यार है। बेशक, महेश ने प्रस्ताव रखा था और हमने 1991 में शादी की, और हमरि बड़ी बेटी 1993 में हुई थी।"

कोटबागी तब केवल 24 वर्ष के थे और उनकी माँ कहती है कि जब उनकी शादी हुई तब वह बच्चे थे! उन्होंने पहले एक जीपी के रूप में अभ्यास किया, और जैसे-जैसे उनका अस्पताल बढ़ता गया, उन्होंने अस्पताल प्रबंधन में एक कोर्स किया और अब वह प्रशासन में शामिल है।

रोटरी द्वारा उनके पति का इतना समय लिए जाने के बारे में उनकी क्या प्रतिक्रिया रही पर, अमिता कहती है: मैं अपने स्वयं के करियर में व्यस्त थी और बच्चे भी बड़े हो रहे थे। उनके माता-पिता महान परोपकारी है, इसलिए सेवा हमारे परिवार का हिस्सा है।

वह उनकी रोटरी गतिविधियों में इतना करीब से जुड़ी हुई थी कि वह भी 2000 में उसी क्लब से जुड़ गई और अप्रैल 2009 में जब नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अंतिम समय में इस्तीफा दे दिया, "क्लब के सदस्यों ने मुझसे अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने का अनुरोध किया।"

अध्यक्ष के रूप में उनके वर्ष में, वह कहती है कि उन्हें हर किसी से पूर्ण सहयोग मिला। "वे इतने खुश थे कि मैंने उनके अनुरोध का मान रखा और मैं जिस भी चीज़ में उनसे मदद मांगती वे खुशी से मेरी मदद करते और मैंने अपने वर्ष का पूरा आनंद लिया। इसके अलावा, मुझे रोटरी के एक विश्वकोश, महेश की भी बहुत मदद मिलीइसलिए मुझे चिंता करने की ज़रूरत नहीं पड़ी!"

अंत में, कोटाबागी के बेहतरीन गुणों के बारे में वह कहती है: "वह जो कुछ भी करते है बड़े ही उत्साह से करते है, वह एक महान वक्ता है और मुझे उस शक्ति पर बहुत गर्व है कि जिसका उपयोग वह लोगों को अपने छोटे से छोटे विचारों को लागू करने हेतु प्रेरित करने के लिए करते है।" इन सबसे ऊपर, "वह लोगों के प्रिय है; वह सहज रूप से फर्श पर बैठकर लोगों के साथ भोजन कर सकते है, इससे उन्हें बहुत खुशी मिलती है और उन्हें लगता है कि वह उन्हीं के जैसे है... और लंबे समय से उनके मित्र है। यह उनका एक उत्कृष्ट गुण है!"

सुविधाएं प्रदान करने की है। "हमने उनके साथ पहला श्रव्य-दृश्यकक्ष, कार्टून और अन्य फिल्मे दिखाने के लिए एक बड़ी स्क्रीन स्थापित करने हेतु काम किया, उन्हें गायन और तैराकी सिखाई, घुड़सवारी और ऊंट की सवारी और अन्य हृदय संबंधित गतिविधियाँ आयोजित की। हमने कॉरपोरेटों से कुछ बसें प्राप्त हुई जिन्हें चढ़ने में सुगम बनाने के लिए उन्हें संशोधित किया गयाऔर हम मनोरंजन के लिए हर हफ्ते इस केंद्र में ग्रामीण क्षेत्रों सहित अन्य स्थानों से कुछ 2,000 विशेष बच्चों को लाते है।"

उनके कहने पर उनके क्लब ने स्टार होटलों में बैठकें करना बंद कर दिया और यहाँ पर मिलना शुरू किया; "इससे हमें इस केंद्र के लिए अधिक धन मिल और सदस्य इसकी सेवा गतिविधियों में वास्तव में शामिल हो पाए और जुड़ पाए। 25 वर्षों से,हमारे क्लब की बैठकें यहीं आयोजित की जाती है, हमारे सदस्य

महामारी के दौरान अस्पताल चलाने की चुनौती

रोटरी *न्यूज़* के साथ बातचीत करते हुए, RIDE महेश कोटबागी ने कोविड रोगियों के लिए एक अस्पताल को चलाने में आई अद्वितीय चुनौतियों की एक दिलचस्प झलक पेश की। "हम 100 कोविड पाज़िटिव रोगियों की देखभाल कर रहे है और प्रबंधन एवं सुविधाओं के संदर्भ में हम अपनी पूर्ण क्षमताओं का उपयोग कर चुके है। ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं है, रेमेडिसिविर की आपूर्ति नहीं है, और कितनी भी धनराशि देने के बावजूद हमारे कई कर्मचारी काम पर आने के इच्छुक नहीं हैक्योंकि उन्हें अपने स्वयं के परिवारों की चिंता है, जो ज़ाहिर सी बात है,"वह कहते है।

वह बताते है कि सामान्य स्थिति में भारतीय अस्पताल उद्योग का एक अनूठा पहलू यह था कि रिश्तेदार भोजन लाने, कपड़े धोनेऔर अस्पताल में भर्ती अपने रिश्तेदारों का हौसला बढ़ाने हेतु बहुत कुछ करते थे। "लेकिन कोविड परिदृश्य में जहाँ रिश्तेदार मरीजों के साथ रुकना तो दूर उनसे मिल तक नहीं सकते, वहीं मरीज को सुबह 6 बजे एक कप चाय देने से लेकर, उनकी साफ-सफाई का ध्यान रखना और उन्हें पौष्टिक भोजन प्रदान करना और उनके कपड़े धोने का प्रबंध करना... सब हमारी जिम्मेदारी है। एक कोविड इकाई और एक सामान्य चिकित्सा सुविधा का प्रबंधन करना दोनों ही बहुत अलग अनुभव है, और वे अपने साथ बहुत सारी चुनौतियाँ लाते है।"

एक और बड़ी दुविधा तब पैदा होती है जब कभी-कभी पति, पत्नी और बच्चे पाज़िटिव होते है। 'तब वहाँ उनकी दवा खरीदने या एटीएम से पैसे निकालने के लिए भी कोई नहीं होता। इसलिए कोविड रोगियों की देखभाल में कई सामाजिक-मनोवैज्ञानिक मुद्दे शामिल होते है। एक कोविड रोगी की मृत्यु भी एक भावनात्मक कारक है क्योंकि आप उनके मृत शरीर को रिश्तेदारों को नहीं सौंप सकते इसलिए हमें 100 से अधिक अंत्येष्टि का प्रबंधन भी करना पड़ा," वह आगे कहते है।

कोटबागी का अस्पताल उनके क्षेत्र में सबसे बड़ा है; यहाँ प्रतिदिन लगभग 400 टीके लगाए जा रहे है।

अपाहिज बच्चों से मिलते है और रोटरी द्वारा दौरा किए जाने या नहीं करने पर भी, यह केंद्र और यहाँ के बच्चे हमसे उनके अभिभावकों की तरह व्यवहार करते है। इस केंद्र में सम्मिलित होने के कारण,हमारी सदस्यता शत-प्रतिशत बनी हुई है।"

रो ई निदेशक के पद तक की यात्रा पर,उन्हें लगता है कि जिन लोगों ने उनके विकास में उनकी मदद कीवे PRID सुशील गुप्ता थे, "उनके पास इतना बड़ा व्यापारिक साम्राज्य होने के बावजूद भी जब रोटरी की बात आती थी,तो वह जमीनी स्तर पर आकर जुड़ते थे। हमने परियोजनाओं पर एक साथ काम करना शुरू किया।" फिर शेखर मेहता, जो उस समय तक एक रो ई निदेशक भी नहीं थे, कमल संघवी, मनोज देसाई, गुलाम वाहनवटी और रवि वाडलामानी से उनका जुड़ावथा। "शेखर की ऊर्जा, आज भी अभूतपूर्व है। हम छह रोटरी इंडिया ह्यूमैनिटी फाउंडेशन के संस्थापक थे, जिसने RILM का नेतृत्व किया।"

जब मेहता,देसाई और संघवी निदेशक बने, "मैंने महसूस किया कि जब आप काम में लिप्त होते है और काम करके देते है तो आपकी कद्र की जाती है।"

महिलाओं की सदस्यता को लेकर,उनका कहना है कि उनके अपने मंडल 3131 में 30 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ है, जो अंतर्राष्ट्रीय औसत से अधिक है। "शहरों में शिक्षित और पेशेवर महिलाएँ उपलब्ध होती है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में यह एक चुनौती है। महिलाएं समूहों में जाना पसंद करती हैइसलिए उन्हें छोटे समूहों में शामिल करने के लिए एक मॉड्यूल विकसित करें और उन्हें परियोजनाओं में शामिल करने के लिए भी ठीक ऐसा ही करें। यदि आप 35 की संख्या वाले किसी क्लब में दो महिलाओं को रखते है, तो वे लंबे समय तक वहाँ नहीं रहेंगी। 40 से ऊपर की महिलाएं भी एक अच्छा लक्ष्य समूह है।"

रो ई निदेशक के रूप में, कोटबागी रो ई बोर्ड की कार्यकारी समिति (EC) का भी हिस्सा होंगे जिसमें EC अध्यक्ष, रो ई अध्यक्ष, RIPE, रो ई उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष और एक रो ई बोर्ड सदस्य शामिल होंगे। EC बोर्ड की कार्मिक समिति के रूप में कार्य करता है और रोटरी कोड ऑफ पॉलिसीस के अनुसार इसकी ओर से कार्य करता है।

चित्र: RIDE महेश कोटबागी, अमिता और सना कोटबागी

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

शांत रहें, घर पर अलग रहें और अस्पताल के बिस्तरों को अनावश्यक रूप से न घेरे

डॉ वी रामसुब्रमण्यन

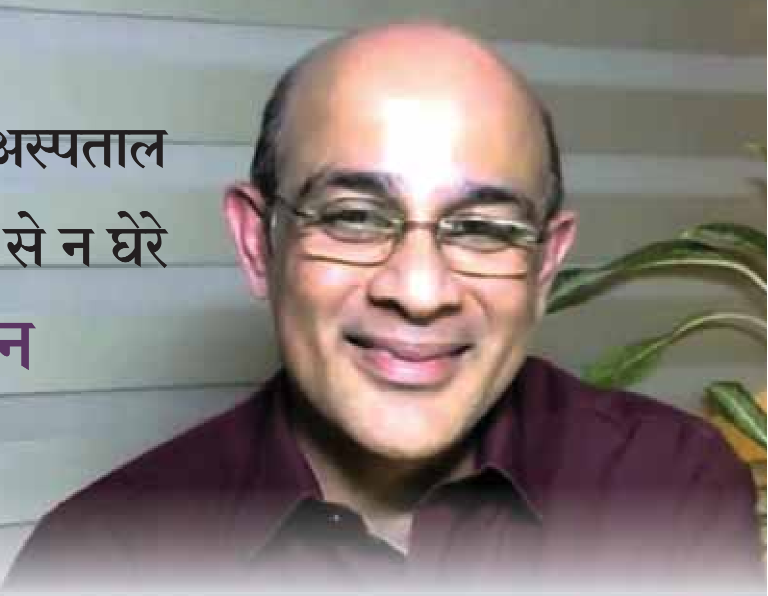

रशीदा भगत

*जहां एक तरफ कोविड महामारी की दूसरी लहर भारत में तबाही मचा रही है जिससे मानसिक आघात, संत्रास और उन्माद पैदा हो रहा है, वहीं दूसरी ओर **डॉ वी रामसुब्रमण्यन,** जो 30 वर्षों से संक्रामक रोगों के विशेषज्ञ है, लोगों को शांत रहने, सूझ-बूझ से काम लेने एवं चिकित्सीय सलाह मानने का आग्रह कर रहे है। वह रोटरी क्लब मद्रास के एक सदस्य है और मीडिया के शोर-शराबे एवं उसके द्वारा हर खबर को सनसनीखेज बनाने पर, एवं बहुत से सुविज्ञ लोगों में सहानुभूति की कमी होने पर रोटरी न्यूज को दिए एक साक्षात्कार में क्रोध व्यक्त करते है, और यह डॉक्टर, जो मई के अंत तक प्रतिदिन 150 रोगियों की जांच कर रहे थे, ने कहा सबसे पहले हम सभी को शांत होने की आवश्यकता है। उद्धरण:*

आपने संक्रामक रोग में विशेषज्ञता करने का निर्णय क्यों लिया?

मेरे पिता एक GP है; वह 90 वर्ष के है और अभी भी चेन्नई में अपने क्लिनिक में अभ्यास करते है। 1992 में चंडीगढ़ के पीजी इंस्टीट्यूट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च से सामान्य चिकित्सा से MD पूरा करने के बाद, मैं हृदय रोग विज्ञान या तांत्रिक विज्ञान जैसे किसी एक क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता को सीमित नहीं रखना चाहता था, इसलिए मैंने सामान्य चिकित्सा में विशेषज्ञता हासिल की।

चिकित्सा पेशे में अपने 30 वर्षों में क्या आपने कभी इस तरह की वायरस-प्रभावित महामारी को देखा है?

नहीं, न मैंने न मेरे पिता ने! लेकिन यह अपरिहार्य था, और इसका आना संभावित था, ऐसा नहीं है कि यह एकाएक आ गया। 1918 की शुरुआत से ही हमने ऐसे प्रसंग देखें है, हमने चिकित्सा में जबरदस्त विकास किया है लेकिन हमारी याददाश्त बहुत कमजोर है। हम कभी खुद को इसके लिए तैयार नहीं करते कि क्या हो सकता है।

क्या हम इसके लिए तैयार नहीं थे; क्या हम इसे बेहतर तरीके से संभाल सकते थे?

पीछे मुड़कर देखें तो, हम हमेशा बेहतर कर सकते थे। लेकिन किसी भी संक्रामक रोग या महामारी में, पहले से उठाए गए कदम बहुत ज्यादा लगते है और बाद में किए गए कोई भी उपाय बहुत कम लगते है।

ऐसा लग रहा था कि भारत ने पहली लहर को अच्छी तरह से संभाल लिया था और फिर दूसरी लहर ने एक सुनामी की तरह तबाही मचाई। क्या आप जैसे डॉक्टरों को लगता है कि हम बहुत जल्द जश्न मना रहे है?

मुझे हमेशा से यकीन था कि दूसरी लहर आएगी, और मुझे इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं था। मैं अपनी बिरादरी या क्षेत्र में सबसे अलग आदमी था। लेकिन मुझे लग रहा था कि दूसरी लहर हल्की होगी। इस बार संख्या अधिक है, लेकिन पहली लहर में कम संख्या होने के कई कारण थे... परीक्षण करवाने में आई कठिनाई, महंगे परीक्षण और पाज़िटिव आने वाले किसी भी व्यक्ति से जुड़ा कलंक, उनके घरों में बोर्ड और बैरिकेड्स का लगाया जाना, जिसके कारण लोग जांच करवाने से बहुत डर रहे थे।

साथ ही, उस समय कर्मचारी वर्ग संक्रमित हुए थे और कुछ ही दिनों में ठीक भी हो गए, इसलिए उनसे ज्यादा परेशानी नहीं हुई। मैं गारंटी से कहूँगा कि परीक्षण किए गए प्रत्येक व्यक्ति पर, कम से कम 10 व्यक्ति ऐसे थे जिनका परीक्षण नहीं किया गया था लेकिन वे पाज़िटिव/संक्रमित थे।

क्या कम परीक्षण होने का एक कारण उच्च लागत थी?

हाँ, लागत ₹4000 तक थी। इसलिए शुरू में बहुत कम लोगों ने परीक्षण करवाया था। उस समय वृद्ध लोग ज्यादा चपेट में आए थे; युवाओं का प्रदर्शन काफी ठीक था। मैंने कई लोगों को सलाह दी कि

आप केवल 30 वर्ष के है, अपने आप को अलग रखें, परीक्षण न करवाए और आप अच्छे हो जाएंगे। और वे सब ठीक हो गए।

लेकिन दूसरी लहर ने अधिक संपन्न, मध्यम वर्ग, घर से काम करने वाले लोगों को अपनी चपेट में लिया... उनके पास पैसा था, ज्ञान था और उन्हें पता था कि उन्हें खुद की देखभाल करनी है। इसलिए हर वो व्यक्ति, जिसको गले में कुछ परेशानी महसूस हुई, हल्की सी सर्दी लगी, सर में भारीपन महसूस हुआ, ने तुरंत जाकर अपना परीक्षण करवाया जो अब सस्ते दाम में उपलब्ध है।

क्या आप यह कह रहे है कि अधिक परीक्षणों के कारण मामलों की संख्या अब अधिक है?

बिल्कुल।

लेकिन हमारी चिकित्सा प्रणाली और स्वास्थ्य अवसंरचनाओं, जिस पर हमें कभी बहुत गर्व था, का इस तरह से लड़खड़ा जाना चकित कर देने वाला है। ऑक्सीजन के लिए अस्पतालों के बाहर लाइन में लगे लोग, अस्पताल में बिस्तरों का न होना, लोगों का आकस्मिक निधन। ऐसा क्यों और कैसे हुआ?

यहाँ तक कि स्पेन, इटली, इंग्लैंड और न्यूयॉर्क जैसी बेहतरीन जगहों को भी उसी अनुभव से गुजरना पड़ा जब पहले चरण में वे बुरी तरह प्रभावित हुए थे। अब वे पलट कर कह सकते है कि भारत सरकार का प्रदर्शन बुरा रहा। बकवास। पहली और दूसरी लहर के चरम पर उन्होंने बहुत ही खराब प्रदर्शन किया था। मैंने विकसित देशों के आपातकालीन विभागों और स्ट्रेचर पर मरते लोगों की तस्वीरें देखी है। उनके अस्पतालों में न तो बिस्तर थे और न ही इतनी संख्या में संक्रमित रोगियों की देखभाल करने की सुविधाएं थी। मैं भारत के प्रति पश्चिमी दुनिया के इस रवैये से हैरान हूँ क्योंकि वे सब इससे गुजर चुके है। जब आपके पास 10 लोगों को संभालने की व्यवस्था हो और आपके पास 1,000 लोग आ जाएं तो कोई भी इस स्थिति को संभाल नहीं सकता। हाँ, हम सभी को स्वीकार करना चाहिए कि हम सभी ने गलतियां की है, और केवल भारत पर उँगलियाँ उठाने से कुछ नहीं होगा। यह न केवल निंदनीय है बल्कि सही भी नहीं है। हमारी आबादी को भी ध्यान में रखते हुए, जो उनकी आबादी से 10, 50 या 100 गुना अधिक है, हमने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है।

कम से कम 4 लाख की हमारी दैनिक संख्या घटकर लगभग 2 लाख हो गई है; क्या आपको लगता है कि यह संख्या नियंत्रण में आ जाएगी?

बिल्कुल! चेन्नई में हमने पहले ही बाह्य-रोगियों की संख्या में गिरावट देखी है और आंतरिक रोगियों की संख्या हमेशा जझ संख्या से दो सप्ताह पीछे रहती है। मुझे विश्वास है कि दो सप्ताह में ही आंतरिक मरीजों की संख्या में कमी आ जाएगी।

मैं भारत के प्रति पश्चिमी दुनिया के इस रवैये से हैरान हूँ क्योंकि वे सब इससे गुजर चुके है। हाँ, हम सभी को स्वीकार करना चाहिए कि हम सभी ने गलतियां की है, और केवल भारत पर उँगलियाँ उठाने से कुछ नहीं होगा।

क्या आपको लगता है कि लोग जरूरत से ज्यादा दहशत में है?

बिल्कुल, हमारी स्थिति समुचित रूप से बेहतर होती, पूरी तरह से सही नहीं लेकिन काफी बेहतर होती, अगर लोग शांति से काम लेते और यह समझते कि कोविड से संक्रमित हुए अधिकांश लोग अच्छे हो सकते है यदि आप घर पर अलग रहें। अस्पतालों की दौड़ लगाना और बिस्तरों को रोकना, जिससे ऑक्सीजन की आवश्यकता वाले व्यक्ति को बिस्तर ही नहीं मिल पाता, दुखद बात है।

मेरे पास अस्पतालों में ऐसे मरीज है जो ठीक हो जाते है, मैं उन्हें घर जाने के लिए कहता हूं क्योंकि हमें किसी और के लिए बिस्तर की जरूरत है, परंतु वे कहते है कि आज मंगलवार है, एक अशुभ दिन, या आज मुझे भर्ती हुए नौवां दिन है; मैं तो 11वें दिन ही जाऊंगा। या घर पर मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं है; मैं यहाँ तीन दिन और रहूंगा। किसी और अधिक जरूरतमंद व्यक्ति का बिस्तर मिलने से वंचित रह जाना, वो भी तब जब आप पहले ही ठीक हो चुके है, मुझे बहुत दुख पहुँचाता है। सहानुभूति की अत्यधिक कमी है।

तो क्या हमेशा की तरह की सम्पन्न लोगों हर चीज़ पर हक जमा लेते है?

(व्यंग्यात्मक रूप से मुस्कुराते हुए) सब एक जैसे है; लेकिन कुछ दूसरों की तुलना में अधिक एक जैसे है!

बहुत सारी जानकारी और गलत सूचना चारों ओर फैल रही है। हम किस पर यकीन करें?

हम सूचनाओं से लदे हुए है। जब मैं छोटा था, मुझे अपनी जरूरत की जानकारी लेने के लिए पुस्तकालय

जाना पड़ता था। अब आप अपने घर पर आराम से बैठकर अपनी इच्छानुसार किसी भी विषय पर जानकारी हासिल कर सकते है। उसमें व्हाट्सएप, FB और इंस्टाग्राम को जोड़ दीजिए! 30 वर्षों तक चिकित्सा का अभ्यास करने के बाद, मुझे इतनी सारी जानकारी का विश्लेषण और अभिलेखन करना मुश्किल लगता है। आपको क्या लगता है कि एक आम आदमी इसे कैसे समझ पाएगा?

क्या लोग आपके पास आकर आपसे मूर्खतापूर्ण सवाल पूछते है, जैसे क्या उन्हें फेफड़े का स्कैन, डी-डिमर टेस्ट, आदि करवाना चाहिए?

(हंसते हुए सिर हिलाते है)।

क्या आप अभी भी प्रतिदिन 100 मरीज देख रहे है?

अपोलो अस्पताल और मेरे क्लिनिक दोनों जगह 150 से अधिक - इनपेशेंट और आउट पेशेंट दोनों। लेकिन लॉकडाउन लगने के साथ, पिछले तीन दिनों में इस संख्या में गिरावट आई है। बाहर तो सरासर पागलपन फैला हुआ है।

दूसरी लहर में, अधिक लोगों की मौत हो रही है; क्या हम जानते है कि वायरस का यह प्रकार/उत्परिवर्ती फेफड़ों के लिए अधिक घातक और खतरनाक क्यों है?

हम अभी भी पूरी तरह से कारण नहीं जानते है, लेकिन कुछ अनुमान है। दूसरे प्रकार में अधिक उत्परिवर्तन है जो निश्चित रूप से पहले वाले की तुलना में अधिक संक्रामक है। यदि एक घर में पहली लहर में दो लोग संक्रमित हुए थे, तो इस बार कम से कम 4-5 लोगों के संक्रमित होने की संभावना है। संख्या के साथ, मृत्यु दर भी बढ़ जाती है। हम यह भी जानते हैं कि यह पहली बार की तुलना में युवा लोगों को अधिक नुकसान पहुंचा रहा है, और उनकी मृत्यु दर अधिक है, लेकिन हम अभी भी इसका कारण नहीं जानते। ऐसा इसलिए क्योंकि इस बार वायरस उन लोगों को निशाना बना रहा है जो थोड़े अधिक संपन्न और कम स्वस्थ है, मुझे नहीं पता!

क्या आपको तीसरी लहर आती दिख रही है?

जी हां, यह इस साल के अंत तक आ जाएगी, लेकिन मुझे नहीं पता कि यह कितनी प्रचंड होगी। लेकिन यह अपरिहार्य है और यह आएगी।

और जिन्हें टीके लग गए है वे सुरक्षित रहेंगे?

हां, वे सुरक्षित रहेंगे लेकिन संक्रमण को रोका नहीं जा सकता। हमें इसकी गंभीरता में, अस्पताल में होने वाली भर्तियों में और मृत्यु में कमी देखने को मिल सकती है। इस बात में कोई संदेह नहीं है। संक्रमण फैलेगा, लेकिन वह निश्चित रूप से हल्का होगा।

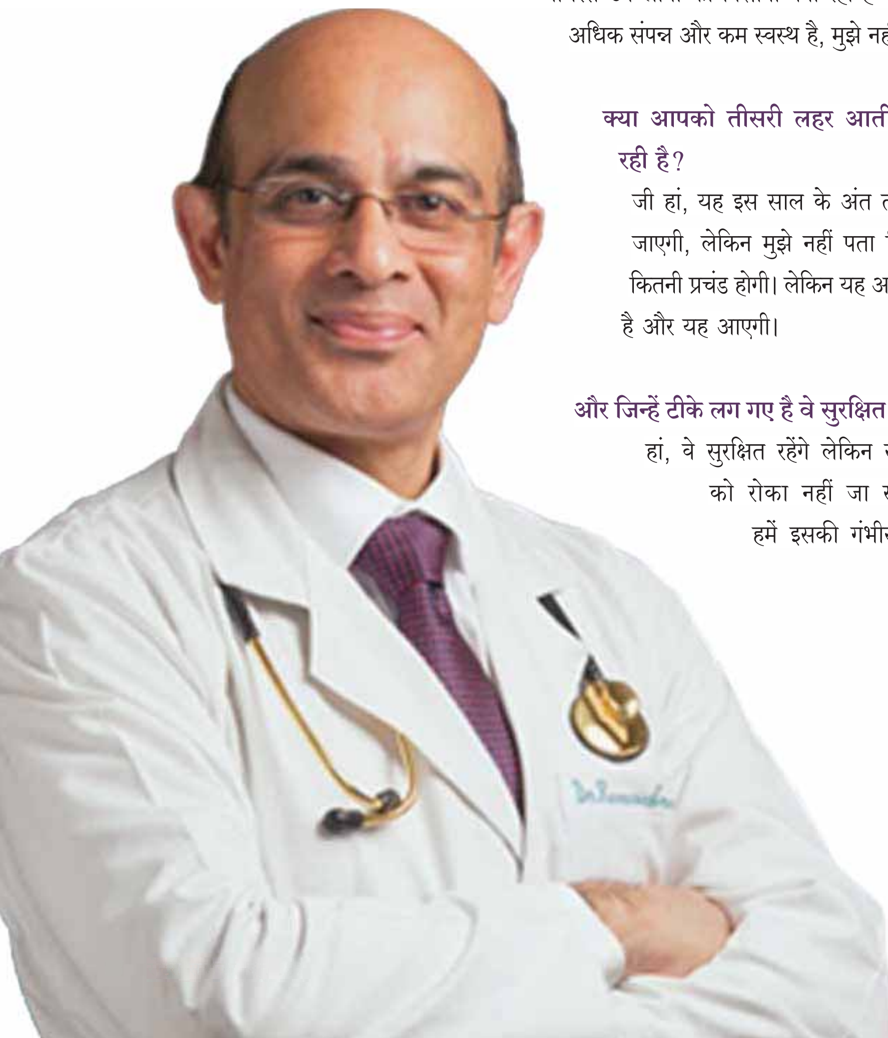

एक आम व्यक्ति की बात करें तो, यदि उसे सर्दी खांसी, निम्न श्रेणी का बुखार है, तो उसे क्या करना चाहिए?

अगर आपको कोविड संक्रमण होने का संदेह है, तो सबसे पहले खुद को अलग कर लीजिए। आप एक या दो दिन तक रुककर देख कर सकते है कि आपको परीक्षण करने की आवश्यकता है या नहीं। पहले दिन सर्दी होने के बाद, यदि आप अगले दिन बिल्कुल ठीक महसूस करते है, तो मुझे चिंता नहीं होगी। लेकिन यदि आपको अभी भी बुखार, सुस्ती, तेज सिरदर्द, पीठ दर्द, दस्त, सूंघने में तकलीफ और भूख न लगना महसूस हो रहा है, तो टेस्ट कराएं। लेकिन पहले खुद को अलग कीजिए।

और यदि आपका टेस्ट पाज़िटिव आता है, तो घबराएं नहीं। शांत रहें। पाज़िटिव टेस्ट होने के बाद लोग मुझे रात 10 बजे फोन करते है, और कहते है कि उन्हें मुझसे तुरंत मिलने की जरूरत है! आपको अगले दिन डॉक्टर को दिखाना है और उन्हें यह तय करने देना है कि आपको किसी परीक्षण की आवश्यकता है या नहीं। उढ और खून की जांच सभी के लिए अनिवार्य नहीं है।

आपने, एम्स निदेशक और अन्य कई विशेषज्ञों ने कहा है कि सी टी स्कैन से निकालने वाले विकिरण एक्स-रे की तुलना में 300-400 गुना अधिक होते है। क्या यह सही है?

बिल्कुल।

तो इसे करवाने की सलाह कब दी जाती है?

चिकित्सकीय रूप से कहें तो, हम ऐसा 7 दिनों तक लगातार लक्षण वाले व्यक्तियों के लिए करते है। यदि खांसी लगातार बनी रहती है या बदतर हो जाती है, यदि लोगों के ऑक्सीजन का स्तर धीरे-धीरे गिरने लगता है, यदि सैचरैशन अचानक से गिर जाता है या दर्द होने लगता है। सभी के लिए CT जरूरी नहीं है; 10 प्रतिशत से कम लोगों को इसकी जरूरत होती है।

क्या ठीक होने के बाद परेशानियाँ हो सकती है?
लगभग 30 से 40 प्रतिशत लोग जो ठीक हो जाते है, जिसका अर्थ है कि कोविड के लक्षणों की शुरुआत के दो सप्ताह बाद, उन्हें कुछ समस्याएँ होंगी। कुछ को मुंह में सूखापन, भारी सिर, जोड़ों में हल्का दर्द, नींद में अनियमितता, नींद की कमी या बहुत अधिक नींद जैसी छोटी समस्याएं हो सकती है। कुछ लोगों में अधिक गंभीर लक्षण दिख सकते है जैसे भूख न लगना, छाती में जकड़न, बहुत ज्यादा खाँसी, बालों का अचानक झड़ना, घबराहट के दौरे, ध्यान केंद्रित करने और काम करने में असमर्थता, भय और संविभ्रम। ये सभी लक्षण दिख सकते है। हमें व्यक्तिगत रूप से हर मामले का इलाज करना होता है।

क्या आपने अपने मरीजों से मनोवैज्ञानिक परामर्श लेने के लिए कहा है?
बिल्कुल; क्योंकि लोग सो नहीं पाते, उन्हें संविभ्रम है। उन्हें लगता है कि वे मर जाएंगे।

महामारी में स्वस्थ रहने के पांच तरीके

इस महामारी के दौरान स्वस्थ रहने और प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने के लिए व्यायाम कितना महत्वपूर्ण है, मैं संक्रामक रोगों के सर्वोत्कृष्ट विशेषज्ञ डॉ वी रामसुब्रमण्यन से पूछती हूं।

उनकी प्रतिक्रिया: व्यायाम बहुत महत्वपूर्ण है। स्वस्थ और मजबूत रहने के पांच तरीके यहां दिए गए है।

- संतुलित भोजन लेना सुनिश्चित करें, शाकाहारी हो या मांसाहारी कोई फर्क नहीं पड़ता।
- रात में कम से कम 6 से 8 घंटे की नींद जरूर लें। और आधे घंटे की शारीरिक गतिविधि सप्ताह में पांच बार करें, सप्ताह में 1.5 घंटे किसी भी खेल को खेलने या पैदल चलना, साइकिल चलाने, तैराकी करने, जो भी हो, में अनिवार्य रूप से दें।
- धूम्रपान से बचें, शराब काम करें... सप्ताह में 7 यूनिट से कम।
- तनाव को काम करें। यह सबसे महत्वपूर्ण कारक है।
- टीकाकरण। कोविड से पहले फ्लू, टेटनस आदि के टीके लगवाते थे। कोविड के समय में कोविड का टीका लगवाए। यह आपको सुरक्षित और स्वस्थ रखेगा।

अगर फिर से अस्पतालों में इतनी भीड़ होती है तो हम तीसरी लहर को कैसे संभालेंगे?
जब तक हम सोशल मीडिया और प्रेस को शांत नहीं करेंगे, जब तक मीडिया बुरी खबरों और जनता पर नकारात्मकता के हमले की गंभीरता को कम नहीं करेगा, तब तक हालात में सुधार नहीं होगा। मैं बार बार एक बात कहता हूँ; संक्रमण से होने वाली मनोवैज्ञानिक समस्याओं के मुकाबले शारीरिक परेशानियों का इलाज करना आसान होता है। यदि बेड की कमी होने पर मरीज भर्ती होने पर अड़ जाता है, तो डॉक्टर उन्हें कैसे समझा सकते है कि उन्हें अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं है? ये बहुत ज्यादा मुश्किल होता है।

कोविड से संक्रमित हुए अधिकांश लोग अच्छे हो सकते है यदि आप घर पर अलग रहें। अस्पतालों की दौड़ लगाना और बिस्तरों को रोकना, जिससे ऑक्सीजन की आवश्यकता वाले व्यक्ति को बिस्तर ही नहीं मिल पाता, दुखद बात है।

संक्रमण के दौरान और ठीक होने बाद व्यक्ति को किस प्रकार का भोजन करना चाहिए?
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कोविड में भोजन की भूमिका बहुत ज्यादा नहीं है, बस जरूरत है संतुलित, पौष्टिक आहार की; शाकाहारी हो या मांसाहारी।

कौन सा टीका लगवाना चाहिए?
जो भी उपलब्ध हो। सभी टीके सुरक्षित है और प्रभावी पाए गए है।

हम खून के थक्के जमने के डर से कैसे निपटते है?
कोई भी दवा, चाहे वह सिर्फ एक पेरासिटामोल ही क्यों न हो, के दुष्प्रभाव होते है। सवाल यह है कि संभावनाएं क्या है। जब आप सड़क पर गाड़ी चलाते है तो किसी दुर्घटना में आपकी मृत्यु हो सकती है या आप चोटिल हो सकते है। तो क्या इस बात पर आपको सड़क पर यात्रा नहीं करना चाहिए और घर पर बैठ जाना चाहिए? नहीं। इस मामले में भी ठीक ऐसा ही है। आपको लाभ और जोखिमों की तुलना करनी होगी। मेरी नज़रों में, इसके लाभ जोखिमों से कहीं अधिक है।

टीके लगवाने के बाद सुरक्षा चक्र का निर्माण कब होता है?
दूसरी खुराक के दो सप्ताह बाद। पहली खुराक ज्यादा कुछ नहीं करती है।

दोनों खुराकों के बीच कितना अंतर होना चाहिए?
Covaxin के लिए यह 4 सप्ताह है, और Covishield के लिए यह कम से कम 12 सप्ताह है।

क्या एक या दो साल बाद बूस्टर खुराक की आवश्यकता होगी?
अभी इंतज़ार करते है फिर देखेंगे। संभवत: यह फ्लू जैसा होगा जहां आपको वार्षिक रूप से खुराक लेने की आवश्यकता होगी लेकिन अभी तक कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

IMA और एक योग गुरु के बीच विवाद की बात करें तो, कोविड के चमत्कारिक इलाज का वादा

रोटरी क्लब मद्रास की बैठक में डॉ वी रामसुब्रमण्यन, क्लब की पूर्व अध्यक्ष डॉ विजया भारती के साथ।

करने वाली विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों द्वारा किए गए शानदार दावों के बारे में आपका क्या कहना है?

चिकित्सा की वैकल्पिक प्रणालियों के प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान है। कई मामलों में होम्योपैथी या आयुर्वेद बेहतर साबित हुए है, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन मैं केवल यही चाहता हूं कि विश्लेषण करने और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले वे थोड़ा अधिक वैज्ञानिक तर्क-वितर्क कर ले। आप यह नहीं कह सकते कि मैंने इसे 50 रोगियों को दिया है, वे सभी बच गए और इसलिए यह अच्छी है। नहीं, कुछ वैज्ञानिक विश्लेषण होना चाहिए। तथ्य यह है कि वे सदियों से चली आ रही है, जिसका अर्थ है कि उन्होंने कुछ प्रभावी हस्तक्षेप किए है।

चिकित्सा की वैकल्पिक प्रणालियों के प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान है। लेकिन मैं केवल यही चाहता हूं कि विश्लेषण करने और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले वे थोड़ा अधिक वैज्ञानिक तर्क–वितर्क कर ले।

क्या वे संक्रामक रोगों के इलाज में मदद करते है?

अरे हाँ, वे करते है, लेकिन आमतौर पर विकट स्थितियों के लिए, एलोपैथी बेहतर होती है। ऐसा मेरा मानना है।

आप एक रोटेरियन है, जिस तरह से रोटरी, और समुदाय के बड़े हिस्से ने इस महामारी के दौरान इतनी दया और उदारता के साथ प्रतिक्रिया दी है, उसके बारे में आप क्या महसूस करते है?

दहशत पैदा करने के लिए मीडिया की आलोचना करने के बावजूद भी, मुझे मानवजाति में अभूतपूर्व विश्वास है। ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर देकर, लोगों के लिए बेड का इंतजाम करके, टीकाकरण शिविरों का आयोजन करके, रोटरी और समुदाय के बड़े तबके ने शानदार तरीके से इस मुश्किल घड़ी में एक दूसरे का साथ दिया है। इसी तरह हमें दहशत को कम करने की जरूरत है और यह सबसे अच्छी चीज है जो मीडिया कर सकता है।

रोटरी की बात करें तो, यह पहले से ही और अब इस महामारी के दौरान भी कई लोगों के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन ला रहा है। चाहे वह किसी को जीवित रहने में मदद करना हो, या बेहतर महसूस करवाना हो... सहानुभूति दिखाना हो जो बहुत महत्वपूर्ण है, या आंतरिक खुशी महसूस करना हो जो केवल दूसरों की मदद करके मिल सकती है। रोटरी एक शानदार संगठन है, बढ़िया तरह से सुव्यवस्थित और विनियमित है। मुझे रोटेरियन होने पर गर्व है।

मुझे पता है कि आप वास्तव में लंबे समय तक काम कर रहे है। आपका दिन कैसे बीतता है?

(मुस्कुराते हुए) मैं सुबह 5.30 बजे उठता हूं, सुबह 7 बजे अपने क्लिनिक (कैपस्टोन क्लिनिक, उनके द्वारा शुरू किया गया एक मल्टीस्पेशलिटी क्लिनिक) जाता हूं, 9 बजे यहाँ से निकलकर सुबह 10.15 बजे तक अपोलो हॉस्पिटल्स (ग्रीम्स रोड) पहुंचता हूं, जहां मैं बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के रोगियों को देखता हूं। फिर दोपहर 3.30 बजे मेरे क्लिनिक पर लौटता हूँ और शाम 7 बजे तक वहां काम करता हूँ। इस तरह मैं लगातार 12 घंटे काम करता हूँ। और फिर शाम को मैं आप जैसे लोगों से बात करता हूं, जूम कॉल्स, मीटिंग्स, कमेटी मीटिंग्स, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इंटरव्यू, इंस्टा और एफबी चैट्स में शामिल होता हूं

आप व्यायाम कैसे करते है?

शारीरिक व्यायाम कोई समस्या नहीं है। मैं अस्पताल में घूमते हुए दिन में कम से कम 10,000 कदम चल लेता हूं। दिन पूरा होने तक मैं थक जाता हूं, और 5 सेकंड के भीतर तब तक के लिए सो जाता हूं जब तक कि अलार्म मुझे जगा नहीं देता। मैं सप्ताह में तीन बार योग भी करता हूँ, 45 मिनट का प्रत्येक सत्र। ■

कोविड से लड़ना हमारी प्राथमिकता

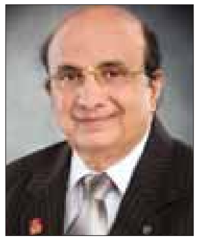

अशोक महाजन

एक तरफ, हमें रोजाना कोविड-19 वायरस के कहर की खबरें सुनने को मिलती रहती है। दूसरी तरफ, यह देखकर खुशी भी होती है कि पूरे भारत के रोटेरियन इस खतरनाक वायरस के खिलाफ लड़ाई में आगे आए है। पिछले कुछ महीनों में रोटरी द्वारा किए गए महान कार्यों पर एक नज़र डालें।

कई राज्यों में नि:शुल्क टीकाकरण केंद्र स्थापित किए गए है; अस्पतालों में ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित किए गए है; ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर प्रदान किए जा रहे है; प्लाज्मा आपूर्ति का समन्वय किया जा रहा है; और सटीक जानकारी प्रदान करने एवं कोविड राहत कार्यों के समन्वय को सुनिश्चित करने के लिए कॉल सेंटर स्थापित किए गए है।

रोटरी क्लब मद्रास ने सबसे पहले तमिलनाडु सरकार के साथ कोविड राहत कार्य में भागीदार होने का समझौता किया था जिसमें टीकाकरण भी शामिल है। क्लब ने टीके के परिवहन के लिए राज्य सरकार को ₹ 1 करोड़ से अधिक लागत के चार प्रशीतित ट्रक और अन्य कोल्ड चेन लॉजिस्टिक सुविधाएं दान की। चेन्नई कॉरपोरेशन के साथ, इसने पूरे शहर में दो दिनों में नौ शिविरों का आयोजन किया, जिसमें 3,000 लोगों का मुफ्त में टीकाकरण किया गया। मैं क्लब के अध्यक्ष, सचिव और अन्य पदाधिकारियों को उनकी स्वेच्छा से की गई सेवा के लिए बधाई देता हूं।

रोटरी क्लब उज्जैन ने रोटेरियन अविनाश गुप्ता के प्रशांति गार्डन में 100 बेड का क्वारंटाइन सेंटर स्थापित किया है। अप्रैल के अंत में मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री द्वारा समुदाय को समर्पित इस अद्भुत परियोजना में कई रोटेरियनों ने मदद की है।

दिल्ली में, DG संजीव राय मेहरा ने अस्पतालों में 10 ऑक्सीजन संयंत्र लगाने का वचन दिया है और अकेले एक क्लब, रोटरी क्लब दिल्ली प्रीमियर, ने दो सप्ताह के भीतर सात अस्पतालों में सात संयंत्र स्थापित किए है।₹2 करोड़ की इस परियोजना से सैकड़ों मरीजों को तुरंत लाभ मिलेगा।

मैं इस राष्ट्रीय संकट के दौरान मंडल और क्लब के नेतृत्वकर्ताओं को उनके अनुकरणीय नेतृत्व के लिए बधाई देता हूँ और उन्हें सलाम करता हूं।

मामलों की संख्या में वृद्धि जैसे विभिन्न कारकों के परिणामस्वरूप, देश भर के अस्पतालों में चिकित्सीय ऑक्सीजन की कमी हो गई है। तरल चिकित्सीय आक्सिजन के परिवहन के लिए मात्र 1,200 क्रायोजेनिक टैंकर उपलब्ध होने कारण, आज हमें हर एक अस्पताल और नर्सिंग होम तक पहुंचने के लिए ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटरकी आवश्यकता है।

> मैं प्रत्येक रोटरी नेतृत्वकर्ता से अनुरोध करता हूं कि वे विदेशों में अपने साथियों और सिस्टर क्लबों से बात करें और भारत में ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर के परिवहन में समन्वय करें।

भारत सरकार ने जून के अंत तक ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर पर GST को घटाकर 12 प्रतिशत कर दिया है और सीमा शुल्क माफ कर दिया है। ऐसे आयातों को जीवन रक्षक दवाओं के समान मानकर सीमा शुल्क मंजूरी दी जाएगी। मैं प्रत्येक रोटरी नेतृत्वकर्ता से अनुरोध करता हूं कि वे विदेशों में अपने साथियों और सिस्टर क्लबों से बात करें और भारत में ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर के परिवहन में समन्वय करें। रोटरी क्लबों को अपने समुदाय एवं अन्य संगठनों में परोपकारी लोगों से संपर्क करके इस जीवन रक्षक उपकरण का निधीयन करने में सक्षम होना चाहिए।

टीकों की आपूर्ति के पर्याप्त स्तर पर पहुँचने के साथ, हम जिस समुदाय में रहते है उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हमें कमर कस लेनी चाहिए। हमारे सामने एक वास्तविक चिंता यह भी है कि वायरस युवा आबादी को संक्रमित कर सकता है। अधिक से अधिक लोगों को जल्द से जल्द कवर करने के लिए टीकाकरण के सुरक्षा जाल को दूर-दूर तक फैलाने की आवश्यकता है।

लेखक पूर्व रोटरी अंतर्राष्ट्रीय निदेशक और रोटरी इंडिया की कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष है।

रोटरी क्लब मद्रास ने कोविड टीकाकरण के लिए ₹1.1 करोड़ के उपकरण दान किए

वी मुत्तुकुमारण

रोटरी क्लब मद्रास के अध्यक्ष कपिल चितले के साथ RIDE ए एस वेंकटेश, तमिलनाडु के स्वास्थ्य सचिव डॉ जे राधाकृष्णन (बीच में), पूर्व आईटी सचिव विवेक हरिनारायण (दाएं से पांचवे) और तमिलनाडु के सार्वजनिक स्वास्थ्य निदेशक डॉ टी एस सेल्वविनायगम (दाएं से चौथे) कोविड टीकाकरण के लिए कोल्ड चेन उपकरण सौंपे जाने के कार्यक्रम में शामिल हुए।

तमिलनाडु सरकार द्वारा शुरू किए गए कोविड टीकाकरण को प्रदान की गईसमर्थन पहल के हिस्से के रूप में,रोटरी क्लब मद्रास, रो ई मंडल 3232, को इस प्रयास के लिए नोडल क्लब चुने जाने के बादसे क्लब ने राज्य सरकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विभाग को 150,000 डॉलर (₹ 1.1 करोड़ से अधिक) की कोल्ड चेन लॉजिस्टिक सुविधाओं का दान किया है।

सुविधाओं में दो 14 फुट लंबे प्रशीतित ट्रक शामिल है जिनमें केंद्रीय वैक्सीन स्टोर से ज़ोनल वैक्सीन स्टोरों तक 44 लाख खुराकेंले जाने की कुल क्षमता है; दो 8-फीट प्रशीतित ट्रक जो ज़ोनल स्टोर्स से ज़िला स्टोरों तक 20 लाख खुराक ले जा सकते है; 15 आइस-लाइन वाले रेफ्रिजरेटर जो जिला स्टोरों में टीकों की 10 लाख खुराक जमा कर सकते है; पांच डीप फ्रीजर; और 1,000 वैक्सीन वाहक (बॉक्स प्रकार के) जिनका उपयोग हर बार 30 लाख लोगों को टीका लगाने के लिए किया जा सकता है।

RIDE एस वेंकटेश ने राज्य के स्वास्थ्य सचिव जे राधाकृष्णन को राज्य के सार्वजनिक स्वास्थ्य निदेशक डॉ टी एस सेल्वाविनायगम, क्लब अध्यक्ष कपिल चिताले, सचिव पी बी प्रसाद, परियोजना प्रमुख डॉ गौतमदास उडुपी, सह-अध्यक्ष ए एम विश्वनाथन, विशेष परियोजना निदेशक एस बालकृष्ण एवं चिकित्सा अधिकारियों की उपस्थिति में कोल्ड चेन सुविधाओं की चाबियाँ भेंट की। इस अवसर पर बोलते हुए वेंकटेश ने कहा, 'तमिलनाडु में सभी 35,000 से अधिक रोटेरियन आवश्यक मदद प्रदान करने और महामारी के खिलाफइस लड़ाई में लोगों के टीकाकरण हेतु कोल्ड चेन के बुनियादी ढांचे एवं अन्य सुविधाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार को उपकरण दान करने के लिए तैयार है।

पिछले 35 वर्षों में, इस 92 वर्षीय क्लब ने दुनिया के इस हिस्से में पोलियो उन्मूलन का बीड़ा उठाया है; और उन्होंने कहा कि 'अब यह राज्य के प्रत्येक व्यक्ति को टीका लगाने के लिए डिलीवरी ट्रक और वैक्सीन वाहक उपलब्ध करा रहा है।'

वेंकटेश ने पांच प्रमुख प्रायोजकों - कुकसन इंडिया, SRF, विनायक मिशन्स हॉस्पिटल एंड रिसर्च, गोदरेज बॉयस और रोटरी क्लब माधवराम - और 15 छोटे प्रायोजकों, जिनमें क्लब के सदस्य और रोटरी क्लब चेन्नई

आईटी सिटी शामिल है, को प्रशस्ति पत्र प्रदान दिए।

चिताले ने कहा कि क्लब दूर दराज के इलाकों और उन क्षेत्रों में लोगों का टीकाकरण करने के लिए अपोलो हॉस्पिटल्स के साथ मिलकर एक चलित टीकाकरण इकाई (एम वीयू) शुरू करेगाजहां कोई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र या चिकित्सा सुविधा नहीं है। टीकाकरण पर जागरूकता पैदा करने जैसे टीका संबंधी कार्यक्रमों

बाएं से: क्लब अध्यक्ष चितले, तमिल नाडु के स्वास्थ्य सचिव जे राधाकृष्णन और ***RIDE*** *वेंकटेश।*

पोलियो के बाद, 1995 में एक बार फिर रोटरी ने हमारे हेपेटाइटिस-बी टीकाकरण में हमरी मदद की और अब यह बुनियादी ढांचे की कमी को भर रहा है, विशेष रूप से कोल्ड चेन नेटवर्क में,

डॉ जे राधाकृष्णन
तमिलनाडु स्वास्थ्य सचिव

को शुरू करने के लिए क्लब सुंदरम मेडिकल फाउंडेशन के साथ भी हाथ मिलाएगा।

डॉ गौतमदास ने *रोटरी न्यूज़* से बात करते हुए कहा कि कोविड ट्रक कस्टम-निर्मित है ताकि वैक्सीन के असर को बनाए रखने के लिए इसके अंदर 2-8 डिग्री सेल्सियस का तापमान निरंतर रह सके। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन के इस कथन का उल्लेख करते हुए कि भारत सरकार को जुलाई 2021 तक लगभग 20-25 करोड़ लोगोंका टीकाकरण करने के लिए 400-500 मिलियन वैक्सीन प्राप्त करने की उम्मीद है,परियोजना अध्यक्ष ने कहा कि केंद्र ने राज्यों को 15 अक्टूबर तक वैक्सीन भंडारण एवं वितरण के लिए एक सुदृढ़ योजना बनाने निर्देश दिए है।

शुरुआत से अंत तक की संयोजकता केन्द्रीय टीकाकरण भंडारण, चेन्नई, को निर्माता से टीके प्राप्त होने से लेकर शहरों, कस्बों एवं गांवों में टीकाकरण केंद्रों पर इनके पहुँचने तक सुनिश्चित करना एवं इस बात को आश्वस्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि टीका लगने से पहले किसी भी जगह कोई गड़बड़ ना हो। केवल इससे ही टीकाकरण कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित हो सकेगी,उन्होंने कहा।

एक बड़ा धन्यवाद

1985 से रोटरी के साथ संबंध को याद करते हुए जब राज्य ने पल्स पोलियो अभियान के लिए इसके साथ भागीदारी की थी, राधाकृष्णन ने तमिलनाडु में रोटरी क्लबों द्वारा प्रदान की गई सेवा के लिए एक बड़ा धन्यवाददिया। "पोलियो के बाद, 1995 में एक बार फिर रोटरी ने हमारे हेपेटाइटिस-बी टीकाकरण में हमरी मदद की और अब यह बुनियादी ढांचे की कमी को भर रहा है, विशेष रूप से कोल्ड चेन नेटवर्क में," उन्होंने कहा। ■

कोयंबटूर के रोटेरियनों ने की स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि

जयश्री

कोविड की दूसरी लहर के खिलाफ अपनी जंग में,कोयंबटूर के अस्पतालों ने ऑक्सीजन की आवश्यकता वाले मरीजों की भारी भीड़ के साथ ही ऑक्सीजन की भरी कमी का भी सामना किया।

कोयंबटूर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (CMCH) की डीन डॉ ए निर्मला ने कोयंबटूर के गंगा अस्पताल के वरिष्ठ सलाहकार-एनेस्थेसियोलॉजिस्ट डॉ बालवेंकट से मदद मांगी। रोटरी क्लब कोयंबटूर के एक सदस्य, इस रोटेरियन ने तुरंत रोटरी, राउन्ड टेबल और अन्य संगठनों के बीच मदद की एक अपील वाला वीडियो प्रसारित किया। "अगले 48 घंटों में हमारी झोली में ₹2.4 करोड़ थे!" वह कहते है। कोयंबटूर के रोटरी क्लबों ने ₹1 करोड़ जुटाए और CMCH के पूर्व विद्यार्थी डॉ राजेश और डॉ नित्या ने भी अमेरिका से इतनी ही धन राशि एकत्रित की। उन्होंने आगे कहा कि धन राशी अभी भी आ रही है और विभिन्न कोविड संबंधित गतिविधियों के लिए इसका इस्तेमाल किया जा रहा है।

इन पैसों से GH में चार और कोयंबटूर के ESI अस्पताल में तीन ऑक्सीजन संयंत्र लगाने में मदद मिली। इनमें से प्रत्येक संयंत्र की लागत ₹27 लाख आई जो प्रति मिनट 100 लीटर ऑक्सीजन पैदा कर सकते है।

"यह सब एक संयुक्त प्रयास है। सीमाएं खत्म हो गई है और सभी क्लब इस महत्वपूर्ण समय में सेवा देने के लिए एक साथ आ रहे है," रोटरी क्लब कोयंबटूर स्पेक्ट्रम, रो ई मंडल 3201,के सदस्य चेला राघवेंद्र कहते है। क्लब ने CMCH में दो संयंत्र स्थापित करने के ऑर्डर दिए और रोटरी क्लब कोयंबटूर ईस्ट भी एक और ऑर्डर लेकर आगे आया। इन में से प्रत्येक संयंत्र 20 बिस्तरों को एक साथ पाइप से ऑक्सीजन प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, रोटरी क्लब कोयंबटूर सैटेलाइट ने एक्वासब पंप्स के साथ मिलकर CMCH में एक उच्च प्रवाह वाला ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित किया। यह एक दिन में 72 सिलिंडर भर सकता है और इस तरह वहाँ के अन्य 40 बिस्तरों को भी मदद मिलती है।

रोटरी क्लब कोयंबटूर नॉर्थ के एक सदस्य, विवेकानंदन, ने अपनी कँप्नी, फैराडे ओजोन, के माध्यम से एक सप्ताह के भीतर इन मशीनों की आपूर्ति की व्यवस्था की। "उन्होंने अपनी कीमतों में कमी की और हमरी आपातकालीन आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने निर्यात ऑर्डरों को भी रोक दिया।" रोटरी क्लब कोयंबटूर स्पेक्ट्रम ने ताइवान के एक गैर सरकारी संगठन को 200 ऑक्सीजन कँसंट्रेटर्स प्रदान करने हेतु राज़ी किया। राघवेंद्र कहते है, "उन कँसंट्रेटर्स को जिला कलेक्टर को कोविड देखभाल

एक संयोजन इकाई में रोटेरियन ऑक्सीजन सांद्रता के निर्माण और परीक्षण की देखरेख करते हुए।

केंद्र में तब्दील PHC यों में स्थापित करने के लिए दिया जाएगा।"

प्रोजेक्ट संजीवनी

रोटरी इंडियास कोविड टास्क फोर्स के ज़ोन समन्वयक सुनील जकारिया ने युद्ध स्तर पर राहत प्रदान करने के लिए DG जोस चाको, सहायक गवर्नरों और मंडल निदेशकों के साथ एक ऑनलाइन बैठक बुलाई। मंडल निदेशक आर एस मारुति कहते है, "'अगर हम रोटेरियन अभी कार्यवाही नहीं करते है तो यह एक अपराध होगा,' उन्होंने कहा और इस बात ने गहरा प्रभाव डाला।" शहर के 41 रोटरी क्लबों के रोटेरियनों ने तुरंत G41 नामक एक कोविड कार्यवाही टीम का गठन किया ताकि वे अपने *प्रोजेक्ट संजीवनी* के माध्यम से जनता, अस्पतालों और अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को समर्थन प्रदान कर सकें। क्लबों के स्वयंसेवकों को इस समिति में रखा गया था, जिसका नेतृत्व मारुति और सामुदायिक सेवाके मंडल प्रमुख पी पी लक्ष्मणन ने किया। "हमने प्रत्येक क्लब से संसाधनों को एकत्र किया और उन्हें विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत किया डॉक्टर/अस्पताल और नर्सिंग होम, चिकित्सा उपकरण, खानपान और एम्बुलेंस सेवाएं। इससे जरूरत पड़ने पर त्वरित संपर्क करने में मदद मिली," वह कहते है।

चाको ने एक 20 सूत्री एजेंडा तैयार किया जिसे DGE राजशेखर, PDG ए वी पथी, राघवेंद्र और AG यों के परामर्श से तीन कार्यक्षेत्रों में विभाजित किया गया। ये रोटेरियनों, उनके परिवारों और कर्मचारियों और रोटारेकटरों को टीकाकरण प्रदान करने; डिजिटल और प्रिंट मीडिया के माध्यम से समर्थन हासिल करने और सरकारी एवं निजी अस्पतालों और PHCयों को आवश्यक उपकरण प्रदान करने से संबंधित है; इसके प्रचार के लिए प्रचलित यूट्यूबरों, प्रभावकरी व्यक्तियों और एनेट्स को शामिल किया गया। DRR जननी के

जब यह संकट बीत जाएगा, तो हम सभी के पास इससे संबंधित शक्तिशाली कहानियां होगी।

नेतृत्व में रोटरेकटर टीम के साथ मिलकर टीकाकरण हेतु ऑनलाइन पंजीकरण में जनता की मदद कर रहे है और ऑनलाइन हेल्प डेस्क एवं एक कोविड युद्ध कक्ष, जो कोविड से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दे सकता है, स्थापित करने में सहायता कर रहे है।

"हम जल्द ही ESI अस्पताल को सात मशीनें उपलब्ध करवाएंगे," मारुति कहते है। अस्पताल ने कोविड रोगियों के इलाज के लिए अपने बिस्तरों को 600 से बढ़ाकर 1,000 कर दिया है और इसलिए ऑक्सीजन की भारी कमी आ गई। कोरोमंडल फर्टिलाइजर्स, चेन्नई, के साथ साझेदारी में रोटरी क्लब कोयंबटूर साईं सिटी ने ऊटी के GH में ₹50 लाख की लागत से एक ऑक्सीजन जनरेटर स्थापित किया है।

हाल ही में G41 टीम को CMCH और ESI अस्पताल से RTPCR परीक्षण मशीनों और अन्य बुनियादी चिकित्सा उपकरणों के लिए एक अनुरोध प्राप्त हुआ जिसे प्रदान किया जाएगा। मानव संसाधन एजेंसियों को चलाने वाले रोटेरियनों के माध्यम से प्राप्त श्रमशक्ति के साथ इस टीम ने लॉकडाउन के दौरान PHCयों में उपयोग के लिए 33 ऑटोरिक्शा किराए पर लिए है। प्रत्येक ऑटोरिक्शा के लिए ₹10,000 का किराया क्लबों द्वारा वहन किया जाता है। क्लब PHCयों और अस्पतालों में मास्क, सैनिटाइज़र, ऑक्सीमीटर, दस्ताने और PPE किटों जैसी उपभोग्य आवश्यकताओं का भी ध्यान रख रहे है।

कोयंबटूर के अस्पतालों को सहायता प्रदान करने के लिए कई रोटेरियन CSR साझेदारों और विदेशी दोस्तों के साथ काम कर रहे है। यहाँ तक कि स्थानीय समुदाय भी शामिल है। हाल ही में एक श्री रंगराज ने मुझे फोन किया और कहा कि उन्होंने हमारे काम के बारे में सुना है और वह ₹1 लाख दान करना चाहते है। पैसे आ रहे है और हम उन क्लबों के साथ समन्वय कर रहे है जिनके पास विदेशी निधि लाने के लिए FCRAपंजीकृत खाते है,वह मुस्कुराते है। CII, SITR, CAI जैसे व्यावसायिक मंचों ने भी रोटरी के माध्यम से अपने योगदान को दिशा देने में रुचि दिखाई है।

रोटेरियन गंभीर रूप से बीमार मरीजों को अस्पताल में भर्ती कराने में भी मदद कर रहे है। "ऐसे ही एक मरीज,जिसे मेरे नौ घंटे के समन्वय के बाद बिस्तर प्राप्त हुआ, ने मुझसे कहा कि ठीक होने के बाद वह सबसे पहले रोटरी में शामिल होना चाहते है!" मारुति आगे कहते है, "जब यह संकट बीत जाएगा, तो हम सभी के पास इससे संबंधित शक्तिशाली कहानियां होगी।" ■

भारतीय रोटेरियन कोविड की दूसरी लहर से लड़ने में मदद करते हैं

वी मुत्तुकुमारण

कोविड की दूसरी लहर द्वारा बरपाये जा रहे अनकहे कहर की वजह से जब अस्पतालों में तहलका मच गया और देश भर की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली एवं सरकारी तंत्र बोझ तले दब गए, जब संक्रमित लोग ऑक्सीजन ना मिलने से तड़प रहे थे, उस समय समस्त भारत के रोटरी क्लबों ने उपचार सुविधाओं की स्थापना और पूरे भारत में टीकाकरण शिविर आयोजित करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ हाथ मिलाया।

रोटरी क्लब गांधीधाम, रो ई मंडल 3054

10 दिनों के अंदर, रोटरी क्लब गांधीधाम, रो ई मंडल 3054, ने गुजरात के कच्छ जिले की एक नगरपालिका, अंजर, के नागलपार स्थित एक अप्रयुक्त इमारत में 40 बेड वाला कोविड अस्पताल स्थापित किया।

अंजर के डिप्टी कलेक्टर डॉ विमल के जोशी ने अपने तहसीलदार ए एम मंदोरी को क्लब के सदस्यों से मिलने इस अनुरोध के साथ भेजा कि वे कोविड रोगियों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने के लिए आपात स्थिति में ऑक्सीजन बेड के साथ एक अस्पताल स्थापित करें। क्लब के 63वें स्थापना दिवस पर, क्लब अध्यक्ष घेला अहीर के नेतृत्व में सात सदस्यीय परियोजना दल ने साइट का दौरा किया और नागलपार स्थित इस खाली इमारत में एक कोविड अस्पताल स्थापित करने की योजना तैयार की। हमने रोटेरियनों को अलग-अलग भूमिकाएँ सौंपीं और काम करना शुरू कर दिया। 80 ऑक्सीजन बेड बनाने के हमारे लक्ष्य के साथ परियोजना को दो चरणों में विभाजित किया गया। पहले चरण में, "हमने पुरुषों और महिलाओं के लिए 36-40 कोविड बेड वाले दो अलग-अलग वार्डों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया," अहीर ने कहा।

जबकि परियोजना का अनुमानित खर्च ₹50 लाख था, जोशी के नेतृत्व में जिला प्रशासन ने क्लब को आश्वासन दिया कि इंडियन ऑयल, कांडला, कोविड अस्पताल के लिए छ25 लाख का योगदान करेगा। चिकित्सीय उपकरणों को इमारत में ले जाने से पूर्व, पुराने भवन को एक नया स्वरूप देने के लिए उसके कमरों एवं परिसर की पूरी तरह से सफाई की गई, दीवारों की पुताई की गई, मरम्मत कार्य किया गया, ट्यूब लाइट, पंखे जैसे विद्युत उपकरण

अंजर में कोविड अस्पताल के उद्घाटन के मौके पर रोटरी क्लब गांधीधाम की परियोजना टीम।

नीचे: पीडीजी दीपक शिखारपुर (बाएं से दूसरी, पिछली पंक्ति में) पुणे के मेयर मुरलीधर मोहोल को कोविड किट दान करते हुए।चित्र में पुणे के रोटरी क्लबों के सदस्य भी शामिल हैं।

लगाए गए और ऑक्सीजन लाइन, अग्नि सुरक्षा एवं अस्पताल में इस्तेमाल होने वाली अन्य सामग्रियाँ स्थापित की गई।

सरपंच संजीभाई के नेतृत्व में, नानी नागलपार पंचायत ने परियोजना के पहले चरण को 10 दिनों के रिकॉर्ड समय में पूरा करने के लिए साइट पर क्लब के सदस्यों की सहायता के लिए एक दल को प्रतिनियुक्त किया। गुजरात के सामाजिक एवं पिछड़ा वर्गों के मंत्री वासनभाई अहीर, स्थानीय विधायक मालतीबेन माहेश्वरी और जिला कलेक्टर प्रवीण डी के ने परियोजना स्थल का दौरा किया और कोविड अस्पताल की स्थापना में रोटेरियनों के पूरे दिल से किए गए योगदान की सराहना की।

कोविड मरीजों के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति, जल आपूर्ति, शौचालय खंड एवं अन्य सुविधाओं सहित सभी बुनियादी व्यवस्थाएं, संबंधित नेटवर्क और फीडर लाइनें उपलब्ध कराई गई। घेला अहीर ने कहा, "सब कुछ योजना के अनुसार सम्पन्न हुआ और 10 दिनों में हमने अंजर के SDM जोशी एवं अन्य जिला अधिकारियों की मौजूदगी में ऑक्सीजन और अग्नि सुरक्षा लाइनों का परीक्षण करने के बाद 36 बिस्तरों वाले पूर्णतः ऑक्सीजन से लैस इस अस्पताल का शुभारंभ किया गया।" एक महत्वपूर्ण आपातकालीन परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए उनकी पूरी टीम बेहद संतुष्ट है।

रोटरी क्लब हावड़ा, रो ई मंडल 3291

रोटरी क्लब हावड़ा, रो ई मंडल 3291,ने निवासियों एवं क्लब के सदस्यों को कोविशील्ड का मुफ्त टीका लगाकर अपने तीन उद्देश्यों - कोविड टीकाकरण पर जागरूकता पैदा करना, गलत सूचना के कारण स्थानीय प्रतिरोध को संबोधित करना और सरकार को लॉजिस्टिक सहायता प्रदान करना को पूरा किया है।

क्लब अध्यक्ष डॉ पामेला घोष ने स्थानीय प्रशासन के साथ साझेदारी में क्लब हॉल में कोविड के टीकों की व्यवस्था की। रोटेरियन डॉ मोनोसिज धारा के नेतृत्व में एक दल टीकों को लगाने में मदद की। डॉ पामेला ने कहा, "हमने अपने टीकाकरण अभियान में स्थानीय निवासियों के अलावा, 60 से ऊपर के अपने सभी सदस्यों, मंडल के रोटेरियनोंएवं हमारे सदस्यों के जीवनसाथियों को शामिल करने का प्रयास किया।100 से अधिक लोगों को टीका लगाया गया।"

चिकित्सीय टीम को डॉ धारा, उपाध्यक्ष डॉ देबासिस सान्याल, पूर्व अध्यक्ष डॉ डी के दत्ता और

डॉ गुरु प्रसाद भट्टाचर्जी सहित क्लब के सदस्यों द्वारा सहायता प्रदान की गई।

रोटरी क्लब सुनाम, रो ई मंडल 3090

रोटरी क्लब सुनाम, रो ई मंडल 3090, ने सुनाम स्थित अपने रोटरी कॉम्प्लेक्स में 120 व्यक्तियों का मुफ़्त में टीकाकरण किया। टीकाकरण शिविर में सिविल अस्पताल के डॉक्टर मुनीश गुप्ता और पांच सदस्यीय मेडिकल टीम ने यह सेवाएं दीं। क्लब के अध्यक्ष राकेश सिंगला, परियोजना अध्यक्ष अशोक गोयल, रोटेरियन वनीत गर्ग, कमल गर्ग और हरिदेव गोयल ने लॉजिस्टिक का ध्यान रखा और आयोजन स्थल पर कोविड-उपयुक्त व्यवहार बरकरार रखा गया। तस्वीरें लेने एवं सोशल मीडिया पर संदेश फैलाने हेतु टीका लगवाने वालों के लिए एक सेल्फी स्टैंड लगाया गया था। क्लब ने चीमा स्थित उप-मंडल परिसर में और रोटरी पब्लिक स्कूल सहित शेरोन और सुनाम स्थित तीन स्कूलों में चार स्वचालित हैंड सैनिटाइज़र मशीनें भी लगाई। परियोजना अध्यक्ष सुभाष कात्याल, नवीन गर्ग और देविंदरपाल सिंह के साथ अध्यक्ष सिंगला परियोजना स्थलों पर मौजूद थे। वायरस के प्रसार को रोकने के लिए क्लब जनता को हाथ धोने, मास्क पहनने और सामाजिक दूरी का पालन करने के लिए जागरूक करने का प्रयास कर रहा है। जागरूकता अभियान का नेतृत्व रोटेरियन शिव जिंदल कर रहे है।

रोटरी क्लब तेलिचेरी, रो ई मंडल 3202

नीचे दक्षिण में केरल में, रोटरी क्लब तेलिचेरी, रो ई मंडल 3202, ने इरिट्टी नगर पालिका और तालुक अस्पताल के साथ संयुक्त रूप से दो दिन (9 और 16 अप्रैल) को तेलिचेरी से 40 किमी दूर स्थित फाल्कन प्लाजा ऑडिटोरियम, इरिट्टी, में टीकाकरण शिविर का आयोजन किया। पूर्व अध्यक्ष रवींद्रनाथन ने कहा, "हमने लॉजिस्टिक सहायता प्रदान की और हमारे कुछ रोटेरियन शिविर में मौजूद थे, जिसमें लगभग 2,700 लोगों को टीका लगाया गया।" DG हरिकृष्णन नांबियार ने माल्या अस्पताल, कासरगोड़, में एक मुफ्त टीकाकरण शिविर का उद्घाटन किया, जिसे स्थानीय लोगों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली। केरल में रोटरी क्लबों ने 30 अप्रैल तक अपने रोटरी केंद्रों एवं रो ई मंडल 3201, 3202 और 3211 में विशेष शिविरों में 1 लाख लोगों का निःशुल्क टीकाकरण किया है। पल्स ऑक्सीमीटर की तीव्र कमी के बाद केरल में सरकार ने एक ऑक्सीमीटर चुनौती शुरू की हैं और लोगों से आग्रह की के वे अस्पतालों को उनके पल्स ऑक्सीमीटर उधार दें ताकि वे कोविड रोगियों की ऑक्सीजन की निगरानी कर सकें। रोटरी के कोविड समन्वयक तीन जिलों के रोटरी क्लबों के माध्यम से इन उपकरणों को जुटा रहे हैं।

रोटरी क्लब पुणे ईस्ट, पुणे शिवाजीनगर, पुणे डाउनटाउन, रो ई मंडल 3131

पुणे के महापौर मुरलीधर मोहोल द्वारा किए गए एक अनुरोध के बाद, तीन क्लबों रोटरी कलब पुणे ईस्ट, पुणे शिवाजीनगर, पुणे डाउनटाउन, रो ई मंडल 3131 – ने रोटेरियन प्रभाकर बटवाल के साथ मिलकर कोविड योद्धाओं के साथ-साथ नगर निगम के 10,000 से अधिक संविदा कर्मियों को 20,000 मास्क, 500 लीटर सैनिटाइज़र और 1,000 PPE किट दान किए। परियोजना को RMB (रोटरी मीन्स बिजनेस), पुणे सर्कल के साथ साझेदारी में निष्पादित किया गया था। निगम इन एंटी-कोविड किटों को सफाई कर्मियों सहित अग्रिम पंक्ति के कर्मियों को वितरित करेगा। हस्तांतरण कार्यक्रम में RPIC डॉ दीपक शिकारपुर, एक पूर्व गवर्नर, मंडल सेवा निदेशक शीतल शाह और अन्य रोटेरियन मौजूद थे। बाद में, मोहोल ने सुरक्षात्मक किट दान करने हेतु रोटरी क्लबों को धन्यवाद देने के लिए ट्वीट किया।

रोटरी क्लब अमरेली गिर, रो ई मंडल 3060

रोटरी क्लब अमरेली गिर, रो ई मंडल 3060, द्वारा केवल तीन दिनों में रोटेरियनों एवं परोपकारी लोगों

RID 3211 के डीजी थॉमस वावाणिकुनेल (बाएं) केरल में एक रोटरी कोविड टीकाकरण केंद्र का दौरा करते हुए।

के उदार दान के साथ एक ऑक्सीजन बैंक शुरू किया गया था। इस बैंक में 15 किलो क्षमता के 55 ऑक्सीजन सिलेंडर, 35 किलो क्षमता के छह जंबो सिलेंडर और दो ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर शामिल है। क्लब के सदस्य रोटेरियन प्रतीक संघरजका ने कहा, "यह ऑक्सीजन बैंक जरूरतमंद मरीजों की सेवा कर रहा है और अब तक 320 से अधिक लोग इससे लाभान्वित हो चुके है।" रो ई मंडल 3060 ने पूरे मंडल में 11 रोटरी टीकाकरण केंद्रों, 21 गोद लिए गए केंद्रों और 44 टीकाकरण शिविरों में 62,000 टीके लगाए है।

ऊपर: हरियाणा के डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा (दाएं से तीसरे) और हिसार के मेयर गौतम सरदाना (बाएं से दूसरे) ऑक्सीजन थेरेपी मशीनों का उद्घाटन करते हुए।

रोटरी कलब लातूर, रो ई मंडल 3132

लातूर में पांच क्लब, रो ई मंडल 3132, पिछले साल पहले लॉकडाउन के दौरान *प्रोजेक्ट मिशन ऑक्सीजन* शुरू करने के लिए एक साथ आए थे। उन्होंने 15 ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटरखरीदे थे और जरूरतमंद मरीजों को इन मशीनों की डिलीवरी को संभालने के लिए एक गैर सरकारी संगठन, सावरकर रुग्ण सेवा, को चुना था। इन मशीनों के शुभारंभ के अवसर पर जिला कलेक्टर जी श्रीकांत और महापौर विक्रांत गोजमगुंडे मुख्य अतिथि थे।

एक मशीन के लिए प्रति दिन ₹ 50 की टोकन राशि (बाजार में ₹ 500 प्रति दिन के मुकाबले) ली जाती है और मशीन को डॉक्टर की सलाह के बाद ही वितरित किया जाता है। अब तक 80 मरीज आक्सीजन कन्सन्ट्रेटरसे लाभान्वित हो चुके है। क्लब लातूर में कोविड के बढ़ते मामलों के साथ पांच और मशीनें खरीदेंगे। PDG डॉ हरिप्रसाद सोमानी *मिशन ऑक्सीजन* के मुख्य प्रवर्तक है, जिसका नेतृत्व परियोजना अध्यक्ष सुधीर लातूरे और उनके उपाध्यक्ष राज धूत कर रहे है।

लातूर में प्रोजेक्ट मिशन ऑक्सीजन के शुभारंभ के अवसर में शामिल पीडीजी हरिप्रसाद सोमानी।

रोटरी क्लब हिसार, रो ई मंडल 3090

रोटरी कलब हिसार द्वारा सेवक सभा चैरिटेबल ट्रस्ट को तीन उच्च प्रवाह वाली ऑक्सीजन थेरेपी मशीनें (₹ 9 लाख) दान की गई। क्लब के अध्यक्ष मोहित गुप्ता, सचिव आनंद बंसल और परियोजना प्रमुख अरविंद बंसल ने परियोजना की सफलता के लिए समन्वय किया। "ये मशीनें कोविड रोगियों के लिए प्रभावी उपचार प्रदान करती है, विशेष रूप से दूसरे या तीसरे चरण के मरीजों को। वे ऑक्सीजन सहायता प्रदान करके जीवन बचाने में वेंटिलेटर का कार्य करती है," रो ई मंडल 3090 के रोटेरियन नवीन आर गर्ग ने कहा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3190 में एक फोटो प्रतियोगिता विशाल परियोजनाओं के निधीयन में मदद करती है

किरण ज़ेहरा

रोई मंडल 3190 के एनवायरनमेंट सस्टेनेबिलिटी रोटेरियन एक्शन ग्रुप (ESRAG) और इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ रोटेरियन फोटोग्राफर्स (IFRP) ने जैव विविधता और विविध संस्कृति के संरक्षण पर जागरूकता पैदा करने के लिए एक फोटो प्रतियोगिता का आयोजन कियाऔर तीन प्रमुख मंडल परियोजनाओं के लिए धन भी जुटाया। यह प्रतियोगिता एक ऑनलाइन मंच के माध्यम से मंडल के विभिन्न रोटरी एक्शन ग्रुप, रोटेरियनों और रोटरेक्टरों को एक साथ लाई। "RAGs,अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप और स्थानीय क्लबों के बीच रणनीतिक साझेदारी रोटरी में नई जान डाल देगी क्योंकि यह दुनिया भर के सदस्यों को धन एकत्रित करने, सदस्यता में वृद्धि करने और आभासी रूप से परियोजना के विचारों का आदान-प्रदान करने की अनुमति देती है। सभी पहल स्थानीय स्तर पर की गई,फोटो प्रतियोगिता की समन्वयक लता कृष्णन कहती है।

तीन परियोजनाओं राजाकुंटे गांव में *रूपांतरा* नामक एक मासिक धर्म स्वास्थ्य कार्यक्रम, कोइरा झील का कायाकल्प और सरकारी स्कूलों में वर्षा जल संचयन (RWH) - को लोगों एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के पैमाने को ध्यान में रखते हुए वित्त पोषण हेतु चुना गया। मंडल RAGs अध्यक्ष रघु आलम द्वारा हरी झंडी दिखाने के बाद, एक आभासी *द रोटरी एन-विज़न फोटोग्राफी कॉन्टेस्ट* की घोषणा की गई। इसमें हमारे मंडल द्वारा की गई पर्यावरण संबंधित परियोजनाओं का प्रदर्शन किया गया। हमने शौकिया और पेशेवर फोटोग्राफरों को समृद्ध जैव विविधता को कैमरे में कैद करने और इसे दुनिया के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्होंने कहा। IFRP विशेषज्ञों ने देश भर से 500 प्रविष्टियों का मूल्यांकन किया। DG बी एल नागेंद्र प्रसाद मुख्य अतिथि थे; 28 रोटरी क्लबों और चार रोटरेक्ट क्लबों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम ने ₹ 5.27 लाख जुटाने में मदद की, जिसे तीन

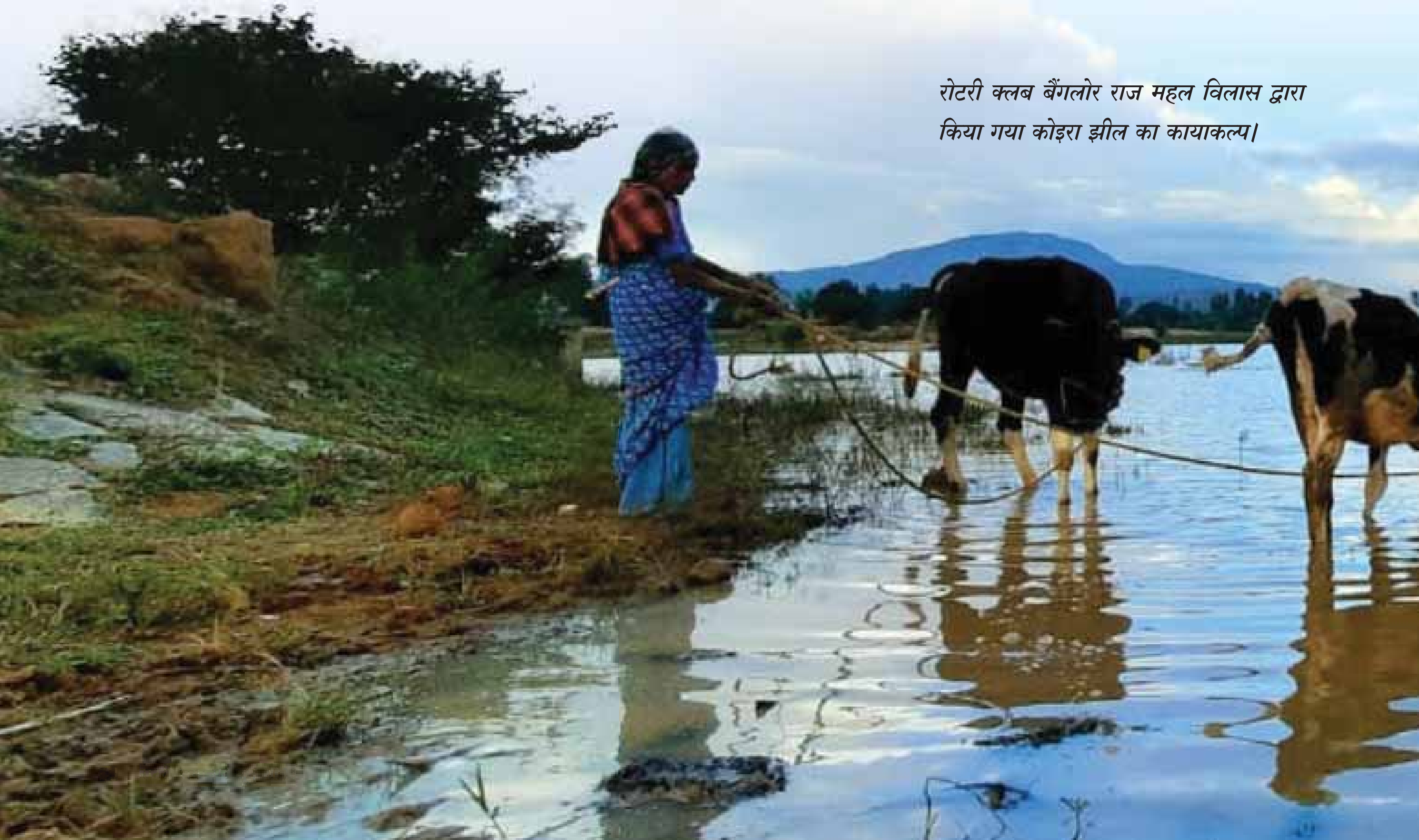

रोटरी क्लब बैंगलोर राज महल विलास द्वारा किया गया कोइरा झील का कायाकल्प।

परियोजनाओं के लिए आवंटित किया गया। फोटो प्रतियोगिता को रोटरी फेलोशिप ऑफ वाइल्डलाइफर्स फॉर कँजर्वेशन द्वारा समर्थित किया गया था।

रूपांतर परियोजना

मंडल MHM अध्यक्ष निशा बैलेरी का कहना है कि चक्रपहल तीन साल पहले राजाकुंटे,बेंगलुरु के पास स्थित एक अर्ध शहरी इलाका, में मौजूदा जानकरी, दृष्टिकोण और प्रथाओं को ध्यान में रखते हुए शुरू की गई थी। स्व-सहायता समूहों, आशा कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी कर्मचारियों की मदद से हमने छात्राओं को स्कूली और सामुदायिक स्तर पर व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए शामिल किया। प्रशिक्षण के दौरान 12 कार्यान्वियन भागीदारों, रूपांतर सखियाँ, जैसा उन्हें नाम दिया गया है, को कपड़े के पैड और मासिक धर्म के कप से युक्त निशुल्क किटें दी गई और उनसे कहा गया कि वे गाँव की महिलाओं से इसके बारे में बात करने से पहले उन्हें खुद आज़माएँ। इन MHM किटों को बेंगलुरू के एक सामाजिक उद्यम नरीयारी द्वारा प्रायोजित किया गया था।

जमीनी स्तर पर इन सखियों ने घर-घर जाकर महिलाओं से आग्रह किया कि वे पुन: प्रयोग किए जा सकने वाले मासिक धर्म उत्पादों पर ध्यान दें ताकि एकल-उपयोग वाले सैनिटरी नैपकिन से उत्पन्न जहरीले कचरे को कम किया जा सके। निशा कहती है, "चूंकि स्वयंसेवक जाने-माने चेहरे है और उन्होंने वर्षों से विश्वास बनाया है, इसलिए इस संदेश को आसानी से स्वीकार कर लिया गया।"

शैलजा, एक आशा कार्यकर्ता और *रूपांतरा सखी*, जो गांव में मासिक धर्म कप को प्रोत्साहित करती है, का कहना है, "मैंने खुद इसे आजमाया है और अब मेरे मासिक धर्म बिना किसी परेशानी के निकलते है। इससे मेरा बहुत सारा पैसा भी बचता है क्योंकि अब मुझे हर महीने सैनिटरी नैपकिन नहीं खरीदना पड़ता। मैं राजनकुंटे को हरा-भरा रखने और उसमें परिवर्तन लाने में एक छोटा सा योगदान दे रही हूँ।" सखियों द्वारा किए गए एक हालिया सर्वे क्षण से पता चलता है कि 75 प्रतिशत महिलाएं कपड़े के पैड खरीदने को तैयार है और उनमें से 30 प्रतिशत उचित दरों पर उपलब्ध होने वाले मासिक धर्म कप का उपयोग करने हेतु तैयार है "यदि यह रासायन मुक्त मासिक धर्म सुनिश्चित करें औरउनके परिवेश को प्रदूषित नहीं करें तो," शैलजा कहती है। रूपांतरा लाने से पहले अपने क्लब रोटरी क्लब बेंगलुरु प्लेटिनम सिटी की मदद सेनिशा ने शहर और उसके आसपास की जगहों की 10,000 से अधिक लड़कियों और महिलाओं के लिए MHM जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए थे।

पाँच क्लब प्रारम्भिक मूलधन के साथ एक स्व-सहायता समूह, ग्रामलक्ष्मी, का गठन करने हेतु एक साथ आए थे। यह स्व-सहायता समूहअब सरकारी स्कूलों, कॉलेजों और रूपांतर परियोजना के लिए आराम नामक कपड़े के पैडों का उत्पादन एवं आपूर्ति कर रहा है। "बेंगलुरू के पास स्थित श्रीरमनहल्ली की चार महिलाएं सफलतापूर्वक इस स्व-सहायता समूहको चला रही है। हमारे मिशन को आगे बढ़ाने के लिए सात गांवों की लगभग 350 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया। कुछ गैर सरकारी संगठनों के साथहम लगभग 200,000 एकल उपयोग करने वाले नैपकिन को अपशिष्ट भराव क्षेत्र में फेंके जाने से रोकने पर काम कर रहे है।"

झील का पुनरुद्धार

दशकों से ग्रेनाइट पत्थरों का बड़े पैमाने पर अनियंत्रित उत्खनन ने ग्रामीण बेंगलुरु के देवनहल्ली तालुक के कोइरा गांव के निवासियों को बेरोजगार कर दिया क्योंकि झीलों और अन्य जल निकायों के सूखने के

कोइरा गांव में धान की खेती।

कारण कृषि नष्ट हो गई थी। "हमारे पास गांव छोड़ने या उत्खनन व्यवसाय में शामिल होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था," एक स्थानीय निवासी चिक्केगौड़ा (54) ने कहा।

उन्होंने रोटरी क्लब बैंगलोर राज महल विलास की मदद मांगी और इसके अध्यक्ष संजय कृष्ण ने कोइरा में झील के पुनरुद्धार का फैसला लिया। परियोजना समिति को एक अध्ययन रिपोर्ट सौंपी गई और पहले सहायक नहर की सफाई करते हुए लगभग 57,000 घन मीटर गाद साफ करने का निर्णय लिया गया। ग्रामीण पहले ही अपने दम पर 15,000 क्यूबिक मीटर मलबा हटा चुके थे। हमने इस परियोजना को दो साल में पूरा किया,कृष्णा कहते है।

परियोजना की लागत ₹80 लाख आंकी गई थी और फोटो प्रतियोगिता के माध्यम से उन्हें ₹1.8 लाख प्राप्त हुए थे। अतिरिक्त धनराशि का योगदान उन गांवों द्वारा किया गया थाजो श्रम दान करने में शामिल हुए और जिन्होंने झील के जीर्णोद्धार कार्य के लिए अन्य संसाधन जुटाए। वह कहते है, "आठ परिवारों ने झील के पास अपनी अतिक्रमण क्षेत्र वाली 10 एकड़ जमीन छोड़ दीक्योंकि वे झील को बहाल करना चाहते थे और खोई हुई आजीविका हासिल करना चाहते थे।" आज कोइरा झील अपने चारों गांवों के कुओं सहित पानी से भरी हुई है और किसानों ने अपनी जमीन पर काम करना शुरू कर दिया है। "हम चाहते है कि जो गांव छोड़कर चले गए है, वे लौट आएं," चिक्केगौड़ा मुस्कुराते हुए कहते है।

वर्षा जल संचयन परियोजना, जिसका उद्देश्य कर्नाटक के 100 सरकारी स्कूलों में वर्षा जल संरक्षण इकाइयां स्थापित करना है, ने हाल ही में बेंगलुरु के पास हुडी सरकारी स्कूलों में दो इकाइयों का उद्घाटन किया है। परियोजना की ₹1.25 लाख की लागत को निर्माण और खनन उपकरण निर्माताकैटरपिलर के कर्मचारियों के योगदान से जुटाया गया था। इन इकाइयों का रखरखाव एक छात्र समिति द्वारा किया जाएगा और रोटरी क्लब बेंगलुरु लेक वर्ल्ड द्वारा इनकी निगरानी की जाएगी। परियोजना प्रभारी जॉन डेनियल का कहना है कि इस छात्र समिति को एक रोटरेक्ट क्लब में बदलने की योजना है। फोटो प्रतियोगिता से प्राप्त धनराशि का उपयोग अन्य विद्यालयों में वर्षा जल संचयन इकाइयों को स्थापित करने के लिए किया जाएगा। ■

कपड़े से बने सेनेटरी नैपकिन को बढ़ावा देती रूपंतरा सखियाँ।

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी ने बांदीपुर में चेक डैम का निर्माण किया

जयश्री

रोटरी मंडल 3181 के अंतर्गत, मैसूर साउथ ईस्ट के रोटरी क्लब ने मैसूर के पास बांदीपुर टाइगर रिजर्व से 10 किमी इंटीरियर, घने जंगल के बीच में 48 फीट लंबे चेक डैम का निर्माण किया। 800 वर्ग किलोमीटर में फैले इस क्षेत्र में वन्यजीवों की मोटी आबादी है। सहायक गवर्नर हरीश एच एम ने कहा, "मानसून के बाद जब बांध भरेगा तो यह प्यास बुझाने में मदद करेगा तथा पशुओं और पक्षियों के लिए भीषण गर्मी के तनाव को दूर करेगा।" आगे जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि महत्वपूर्ण महीनों में फरवरी और मार्च होता है, जब अधिकांश पानी के स्रोत सूख जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप खाद्य और पानी के लिए जानवरों को गंभीर असुविधा होती है।

800 वर्ग किलोमीटर में फैले इस क्षेत्र में वन्यजीवों की मोटी आबादी है। मानसून के बाद जब बांध भरेगा तो यह प्यास बुझाने में मदद करेगा तथा पशुओं और पक्षियों के लिए भीषण गर्मी के तनाव को दूर करेगा।

डीजी रंगनाथ भट ने कन्नड़ अभिनेता दर्शन थुगुदीपा, सहायक गवर्नर हरीश एच एम, क्लब अध्यक्ष एम राजीव और सचिव एम मोहन की उपस्थिति में चेक डैम का उद्घाटन किया।

जिले ने इस वर्ष अपने फोकस क्षेत्रों में से एक के रूप में वाटरशेड का विकास शुरू किया है और रोटरी क्लबों से आग्रह किया गया है कि जहां भी संभव हो चेक डैम का निर्माण किया जाए। एम राजीव और सचिव एम मोहन के नेतृत्व में क्लब ने वन विभाग से उचित अनुमति लेने के बाद ₹6.5 लाख रुपये की लागत वाले प्रोजेक्ट को लागू करने पर आसानी से सहमति जताई। "जैसा कि क्षेत्र जंगल में काफी अंदर स्थित है, हमें सामग्री के परिवहन के लिए लागत को दोगुना करना पड़ा। हालांकि, हमने स्थानीय श्रमिकों को इसमें शामिल कर लिया," राजीव ने कहा।

डीजी रंगनाथ भट ने जिला सचिव विक्रमदत्ता, वन संरक्षक एस आर नतेशा और कन्नड़ फिल्म अभिनेता दर्शन थुगुदीपा की मौजूदगी में चेक डैम का उद्घाटन किया। भट ने क्लब के सदस्यों को जिले की सर्वश्रेष्ठ परियोजनाओं में से एक को लागू करने के लिए बधाई दी।

आम तौर पर जुलाई में बांदीपुर में मानसून शुरू होता है और दिसंबर तक क्षेत्र में अच्छी खासी बारिश देखने को मिलती है। हरीश ने कहा, छह फीट गहरे चेक डैम गर्मियों के महीनों के उपयोग के लिए पर्याप्त पानी इकट्ठा कर सकते हैं। इस सुविधा से आसपास के एक स्थानीय आदिवासी समुदाय को भी फायदा होगा। इसका रखरखाव वन विभाग करेगा।

इस साल के शुरू में क्लब ने, अपने इनर व्हील क्लब के साथ मिलकर, मैसूर से 18 km दूर हदिनारू गांव में एक तालाब का कायाकल्प किया। यह जगह कई प्रवासी पक्षियों को यहाँ पर आकर्षित किया करता था, लेकिन वर्षों से यह संख्या जल निकाय के खराब रखरखाव के कारण घटती चली गई। राजीव ने कहा,"हमने ₹4 लाख खर्च किए और उसमें से करीब छह टन कचरा बाहर निकाला। अपनी जरूरतों और स्वच्छता और स्वास्थ्य का ख्याल रखने के लिए गांव में एक आरसीसी का गठन किया गया था।" *ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग* के सहयोग से श्रवण सहायक यंत्र वितरण शिविर आयोजित किया गया था, और ऐसे श्रवण-यंत्र 100 ग्रामीणों को दिए गए थे। ■

रोटरी नेतृत्वकर्ताओं को श्रद्धांजलि जिन्हें हमने हाल ही में खो दिया

पीडीजी यू बी भट

एम वी रविकुमार

एक महीने से भी कम समय में रो ई मंडल 3190 ने तीन असाधारण रोटेरियन - पूर्व मंडल गवर्नर एस उदय कुमार (1989-90), डॉ पृथ्वी रावल (2000-01) और यू बी भट (2008-09) - को खो दिया जिससे रोटरी को बहुत क्षति पहुंची है। मैं भाग्यशाली और गौरवान्वित रहा कि मुझे इन नेताओं के साथ काम करने का मौका मिला जिन्होंने मेरी रोटरी यात्रा को आकार दिया।

भट (यूबी) के साथ मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब हमारे क्लब ने जून 1996 में अपने गृह क्लब - रोटरी बैंगलोर साउथ परेड - को अधिकृत किया था जिसके वह चार्टर अध्यक्ष थे। उनकी शैक्षणिक और व्यावसायिक उपलब्धियों के बावजूद - REC सुरथकल से एक इंजीनियरिंग स्नातक और आईआईएम-अहमदाबाद से स्नातकोत्तर, यूनाइटेड ब्रुअरीज में शानदार मार्केटिंग करियर - यूबी सभी के लिए एक सरल और जमीन से जुड़े मित्र थे। वह 24 दिसंबर, 1999 को काठमांडू से नई दिल्ली जाने वाली फ्लाइट IC814 में सवार यात्रियों में से एक थे, जिसे हाइजैक करके कांधार ले जाया गया था। यूबी ने अपनी पुस्तक *टेरर ऑन बोर्ड* में उन कष्टदायी, बेचैन कर देने वाले लम्हों को कैद किया, जब जीवन और मृत्यु में कुछ खास अंतर नहीं बचा था, और साथ ही इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला कि दृढ़ता के साथ विरोधियों का सामना करना साहस की बात होती है।

पीडीजी पृथ्वी रावल

मैंने 2002-03 में उनके साथ तब करीब से काम किया जब वह सम्मेलन अध्यक्ष थे और फिर शताब्दी रोटरी वर्ष के दौरान, जब मैं मंडल सदस्यता अध्यक्ष था और उनके गृह क्लब ने क्लब सेवा पर ICGF की मेजबानी की थी जिसके वह अध्यक्ष थे। ICGF में भागीदारी बढ़ाने के लिए उन्होंने एक विशेष लैपल पिन डिजाइन किया और उन सभी रोटेरियनों को सम्मानित किया जिन्होंने रोटरी में 25 साल पूरे कर लिए थे। जब वह वर्ष 2008-09 के लिए DG के रूप में चुने गए तो उन्होंने मुझे फोन किया और कहा, "मुझे पता है कि आपका जुनून परिहार्य दृष्टिहीनता (AB) है, लेकिन मैं यह भी चाहता हूँ कि आप उप मंडल प्रशिक्षक बनें," और मुझे AGयों, PETS और SETS के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने का काम सौंपा गया। उस वर्ष हमारे मंडल ने *मोतियाबिंद (बैकलॉग मुक्त) रो ई मंडल 3190* परियोजना शुरू की और हमने मोतियाबिंद की वजह से होने वाली नेत्रहीनता को कम करने का एक लंबा सफर तय किया है।

मुझे जुलाई 1999 में डॉ रावल के साथ मेरी पहली मुलाकात याद है, तब अध्यक्ष और ऋजत के रूप में मेरे कार्यभार संभालने की तारीख को तय किया जाना था क्योंकि 2000-1 के दौरान वह DG के रूप में कार्यभार संभलने जा रहे थे। इस पहली मुलाकात ने जैसे हमारे बीच एक रिश्ता सा जोड़ दिया, क्योंकि वह मेरी ही तरह - बल्कि मुझसे भी बढ़कर - समय के पाबंद है।

2002-03 के दौरान, जब उन्हें दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय -इ समन्वयक के रूप में नियुक्त किया गया, तो उन्होंने नवनिर्वाचित DG भंसाली से मुझे मंडल -इ समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने का अनुरोध किया। इस प्रकार AB के साथ मेरी लंबी यात्रा शुरू हुई जिसने मुझे स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार दिलवाया। रावल ने 2003 में *इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ मोटरसाइकिलिंग रोटेरियन्स* - इंडिया चैप्टर की शुरुआत की जिससे यह ढळ्क्र के लिए दूसरे स्तर का प्रमुख दानकर्ता बन गया।

जब मैं 1988 में रोटरी से जुड़ा, तब उदय DGE थे। उन्होंने कुओं को बहाल करके और भंडारण टंकियों का निर्माण करके 40 गांवों में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कई MG परियोजनाएं कीं। वह इस बात में विश्वास रखते थे कि एक बार जब किसी

विनोद बंसल: एक समर्पित रोटेरियन

ऐशानी बंसल

विनोद बंसल अपने वित्त, स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र, में एक समर्पित एवं अत्यधिक योग्य पेशेवर और एक प्रसिद्ध कॉर्पोरेट सलाहकार थे। एक समर्पित रोटेरियन होने के नाते, उन्होंने विशिष्टता के साथ सभी ध्यानाकर्षण क्षेत्रों पर काम किया। 2001 में रोटरी में अपनी एक अनुकरणीय शुरुआत के बाद, 2013-14 में वह रो ई मंडल 3010 के मंडल गवर्नर बने। उनका कार्यकाल मंडल, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोटरी के लिए लगातार सफलताओं को सुनिश्चित करने एवं नए मील के पत्थर स्थापित करने के रूप में चिह्नित किया गया।

बंसल 2019-22 के लिए रोटरी संस्थान की प्रतिष्ठित 'निवेश समिति' के सदस्य थे। उन्होंने TRF के लिए DG के रूप में, दो साल तक ARRFC के रूप में और अब EMGA के रूप में सर्वाधिक धन जुटाया। उन्होंने 2013-14 में रिकॉर्ड 1.7 मिलियन डॉलर इकट्ठा किए थे जो दुनिया में वार्षिक कोष में दिया गया सबसे बड़ा योगदान था।

2016-2020 में रोटरी ब्लड बैंक के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण करते हुए, बंसल ने बुनियादी ढांचे में सुधार करने और गतिविधियों के विस्तार हेतु साहसिक कदम उठाने के साथ ही भविष्य को देखते हुए निवेश करके समाज की वर्तमान जरूरतों को पूरा करने की उसकी क्षमता को स्पष्ट रूप से समझते हुए संस्थान में बदलाव किए।

रोटरी के भविष्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता प्रेरणादायक थी। उनकी करुणा, उत्कृष्टता और ध्यान केंद्रण ने उन्हें रोटरी के लिए एक चिरकालिक दृष्टिकोण की नींव रखने हेतु प्रेरित किया, जिसमें इस कहानी में भारत की भूमिका पर स्पष्ट ध्यान दिया गया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि उन्हें 2021-22 के लिए रोटरी के भविष्य को आकार देने वाली समिति के सदस्य के रूप में सेवा देने हेतु आमंत्रित किया गया था।

अपने समकक्षों में सबसे आगे रहने के कारण, उन्होंने हमेशा आगे रहकर नेतृत्व किया। हर एक सहकर्मी उन्हें एक ऐसे मानवतावादी के रूप में याद करता है जो बहुत ही साहस और जोश के साथ हर चुनौती का सामना करते थे और विपरीत परिस्थितियों में भी अवसरों की तलाश करते थे। उनकी गहन कुशाग्रता और अद्वितीय आकर्षण ने कई प्रारंभिक रोटरी परियोजनाओं और स्थायी सहयोग को आकार देने में मदद की; ना कोई विकल्प नहीं था।

उनकी बहुत याद आती है और उनकी विरासत को उनकी पत्नी संगीता बंसल, जो एक रोटेरियन भी है, बेटी दामिनी और ऐशानी, दामाद नील और दुनिया भर में एवं रोटरी में उनके सभी प्यारे दोस्तों और सहयोगियों द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है।

(लेखक दिवंगत PDG विनोद बंसल की बेटी है।)

पीडीजी एस उदय कुमार

व्यक्ति को रोटरी में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है, तो उसे आजीवन के लिए रोटेरियन बनना चाहिए और वह पूरी तरह से सत्यापन करने और यह सुनिश्चित करने कि वे रोटरी के सिद्धांत - *स्वयं से ऊपर सेवा* - को समझते हो, के बाद सही पेशेवरों को आमंत्रित करने पर जोर देते थे।

उदय कुमार क्लब की बैठकों में नियमित वक्ता थे और उनके विषय ज्यादातर मॉडल क्लब पर ही आधारित होते थे, जो उनका जुनून था। वह रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट के निष्ठावान समर्थकों में से एक थे, जहां रोटेरियनों को प्रशिक्षण और सहयोग के माध्यम से महान नेतृत्वकर्ता बनने हेतु शिक्षित किया जाता है। उन्होंने सभी को बड़ा सोचने के लिए प्रेरित किया और रोटरी बैंगलोर इंदिरानगर के पूर्व अध्यक्ष, डॉ श्रीनागेश सिम्हा, याद करते है कि कैसे डॉ किशोर राव, गुरमीत रंधावा और वह स्वयं इससे प्रभावित हुए और 1994 में क्लब की चिन्हक परियोजना - *करुणाश्रेय,* गंभीर रोगियों का एक अस्पताल - की अवधारणा की गई।

ये पूर्व तीनों गवर्नर *स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार* के प्राप्तकर्ता थे। भगवान उनकी आत्मा को शांति दें!

(लेखक - मंडल परिहार्य दृष्टिहीनता समिति, रो ई मंडल 3190, के अध्यक्ष है)

Membership Summary

(As on May 1, 2021)

RI Districts	RCC	Interact Clubs	Rotaract Clubs	Women Rotarians (%)	No of Rotarians	Rotary Clubs
2981	225	40	54	7.68	5,503	127
2982	66	97	88	6.83	3,327	73
3000	213	259	193	9.56	5,299	131
3011	35	112	69	26.98	4,381	112
3012	59	72	74	24.72	3,779	113
3020	350	166	59	6.7	4,460	74
3030	359	224	130	14.85	5,142	96
3040	183	78	48	12.75	2,414	95
3053	115	44	29	16.72	2,766	63
3054	533	165	116	19.67	7,346	166
3060	144	65	65	14.73	5,034	107
3070	58	23	55	16.66	3,460	119
3080	113	152	120	9.24	3,416	85
3090	123	9	46	5.68	2,265	85
3100	146	18	18	8.48	2,276	101
3110	105	7	30	8.63	3,658	136
3120	55	22	56	15.4	3,608	86
3131	126	217	127	22.11	5,273	138
3132	165	120	43	9.93	3,452	88
3141	98	166	140	25.93	5,912	111
3142	74	133	90	21.8	3,559	95

Rotary at a glance			
Rotary clubs	: 36,782	Rotary members	: 1,198,766
Rotaract clubs	: 10,063	Rotaract members	: 217,186
Interact clubs	: 15,035	Interact members	: 368,805
RCCs	: 11,587		*As on 18 May 2021*

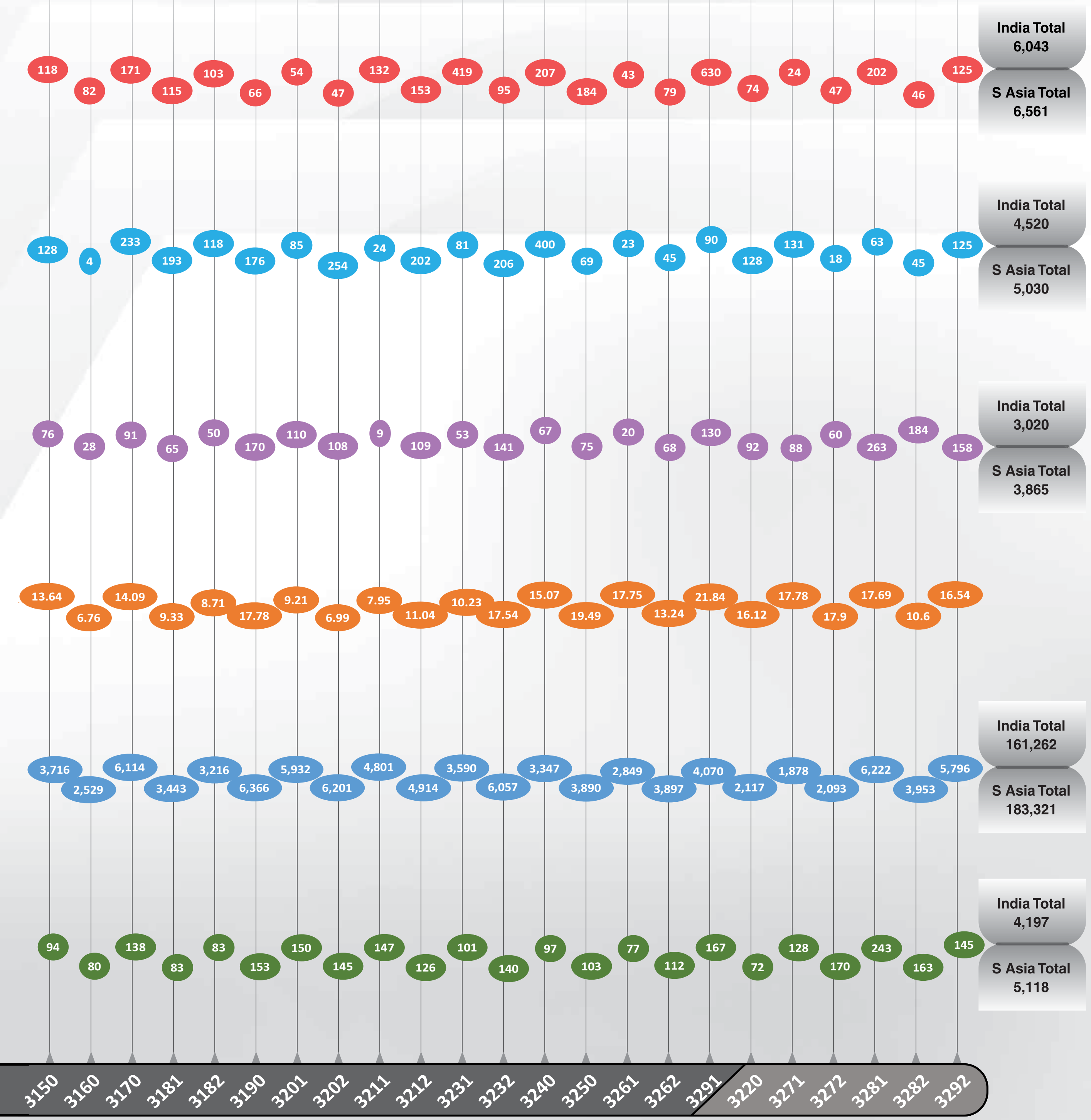

Source: RI South Asia Office

बेहतर प्रकाश को चमकने दिया जाए

प्रीति मेहरा

कोई भी आधुनिक शहरी आवास बिना बिजली के नहीं चल सकता। यह ऊर्जा का स्रोत है जो हमें उपकरणों की एक लंबी सूचि को चलाने में सक्षम बनाता है, जो हमें इनडोर तापमान को बनाये रखने, खाना पकाने, धोने और हमारे पास जो भी है, उसे चलाने में मदद करता है। यह हमारे घरों को भी रोशन करता है और ऐसे उपकरण चलाता है, जो हमारा मनोरंजन करते हैं और हमारा ज्ञानवर्धन करते हैं। इस समय हमारा ध्यान प्रकाश पर है। यह वह जादू की रोशनी है, जिसे हम शाम होने के बाद या जब भी प्राकृतिक प्रकाश को इनडोर गतिविधि की सुविधा के लिए निर्माण करने की आवश्यकता होती है, हम इसे शुरू करते हैं।

खुशी की बात यह है, कि ऊर्जा कुशल और पर्यावरण के अनुकूल प्रकाश व्यवस्था के लिए स्विचओवर करना आसान है और किया जा सकता है। इसके लिए आवश्यकता है तो बस एक शाम की खरीददारी और उन लाइट्स को बदलना जिन्हें आप फ़िलहाल इस्तेमाल कर रहे हैं। यह सरल कसरत आपके बिजली के बिल पर 6 प्रतिशत की बचत करने में मदद कर सकता है।

खुशी की बात यह है, कि ऊर्जा कुशल और पर्यावरण के अनुकूल प्रकाश व्यवस्था के लिए स्विचओवर करना आसान है और किया जा सकता है।

इसलिए, यहां बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकाश विकल्पों पर एक विस्तृत चर्चा की गई है। इसके साथ-साथ प्रत्येक विकल्प पर थोड़ी समीक्षा है, जो आपकी पसंद को हरित क्रांति के क़रीब लेकर जाता है।

अधिकांश घरों में पाया जाने वाला प्रकाश का स्रोत गरमागरम बल्ब है, जिसने उन्नीसवीं शताब्दी में जोसेफ स्वान और थॉमस एडीसन द्वारा इसके आविष्कार होने के बाद से कई सुधार देखे हैं। यह एक सरल सिद्धांत पर काम करता है, कि जब बिजली एक ग्लास बल्ब में संलग्न टंगस्टन फिलामेंट से होकर गुजरती है तो यह चमकती है तथा गर्मी और प्रकाश की पीली चमक पैदा करती है। गरमागरम बल्ब कई आकारों और वोल्टेज में आता है।

हालांकि, हाल के वर्षों में इस बल्ब को धीरे-धीरे अधिक कुशल लाइट एमिटिंग डायोड (LED), कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट लैंप (CFL) और फ्लोरोसेंट ट्यूब द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। वाणिज्यिक और अन्य विशेष उद्देश्यों और स्थानों के लिए हैलोजन लैंप, धातु हैलाइड लैंप, नियॉन लैंप, उच्च तीव्रता वाले डिस्चार्ज लैंप और कम दबाव वाले सोडियम लैंप उपलब्ध हैं।

वर्तमान में, LED वह है जो सबसे लोकप्रिय है। इसका जीवनकाल लंबा है और पर्यावरण के सबसे अनुकूल होने के रूप में इसका मूल्यांकन किया गया है। यह मूल रूप से बल्ब में इकट्ठा होने वाले सेमीकंडक्टर डिवाइस में इलेक्ट्रॉनों के आंदोलन के माध्यम से प्रकाश उत्सर्जित करता है। इसमें फिलामेंट नहीं होता और वह कम बिजली का इस्तेमाल करता है। LED गरमागरम बल्ब की तुलना में अधिक प्रकाश देते हैं और ऊर्जा बचाने में मदद करते हैं। यह एक गरमागरम बल्ब की तुलना में बहुत अधिक खर्चीला हो सकता है, लेकिन लंबे समय में प्रतिस्थापन लागत पर बचत के रूप में सस्ता साबित होता है। LEDs ना सिर्फ़ गरमागरम बल्बों की तुलना में 8-25 गुना अधिक समय तक चलने के लिए जाने जाते हैं, बल्कि सिर्फ़ 25 से 30 प्रतिशत बिजली का ही उपयोग करते हैं।

बहुत से लोग LED रोशनी की तुलना में सभी गरमागरम बल्बों को बदलने के लिए अनिच्छुक रहते हैं, क्योंकि इस पर अग्रिम लागत अधिक आती है। दरअसल, कई उपभोक्ता एक बार में एक बल्ब बदलना पसंद करते हैं। यह एक बुरा विचार नहीं है क्योंकि इस तरह से खर्च समय की एक लंबी अवधि में विभाजित होता है। फिर भी, ऊर्जा की बचत के संदर्भ में लाभ में छल होना शुरू हो जाएगा और यह जल्द ही बढ़ता चला जाएगा।

अक्सर गरमागरम प्रकाश को कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट लैंप (CFL) द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। इनमें कुछ ट्यूबलर लूप होते हैं और गरमागरम बल्ब के समान दिखाई देते हैं। यह प्रकाश की समान मात्रा देता है, कम बिजली का उपयोग करता है, और कम से कम 10 गुना अधिक समय चलता है। हालांकि, CFL एक राइडर के साथ आता है। इसमें जहरीले पारे की एक छोटी मात्रा होती है और इसलिए इसके जीवन के खत्म होने के बाद इसे नाजुक रूप से संभाला जाना चाहिए। यदि आप CFLबल्बों का उपयोग करने के इच्छुक हैं तो आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि वे अन्य ई-कचरे के साथ-साथ सही तरीके से निपटाए जाएं ताकि वे रीसाइक्लिंग के लिए सही जगह तक पहुंचें। सीएफएल सुंदर लग सकते है, लेकिन वे पर्यावरण के अनुकूल सबसे अच्छे विकल्प नहीं हैं।

घर के उन क्षेत्रों के लिए फ्लोरोसेंट ट्यूब काफी लोकप्रिय है जहाँ बहुत सारे प्रकाश की आवश्यकता होती है जैसे रसोईघर, बालकनी या बाथरूम। यह एक गैस डिस्चार्ज ट्यूब है जो सफेद दृश्यमान प्रकाश का उत्पादन करने के लिए फ्लोरेसेंस का उपयोग करती है। इसका जीवनकाल लंबा होता है और इसकी चमकने की क्षमता उच्च है। यह एक गरमागरम बल्ब की तुलना में कम बिजली का उपयोग करता है लेकिन अधिक महंगा है। हालांकि, CFL की तरह, इसे भी इसकी गैसीय सामग्री के कारण सावधानीपूर्वक निपटाने की आवश्यकता है। इसे रीसाइक्लिंग के लिए ई-वेस्ट हैंडलर को दिए जाने की जरूरत है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो लोग हरित क्रांति में जाना चाहते हैं उनके लिए सबसे अच्छा विकल्प LED बल्बों पर स्विच करना है। दूसरों की तुलना में इसके दो फायदे हैं। यह पारा रहित होते हैं और गर्मी

इस में कोई संदेह नहीं है कि जो लोग हरित क्रांति में जाना चाहते हैं उनके लिए सबसे अच्छा विकल्प LED बल्बों पर स्विच करना है।

बहुत कम देते हैं। विशेषज्ञ हमेशा समझाते हैं कि चूंकि आप एक बल्ब से प्रकाश की तलाश कर रहे हैं और गर्मी की नहीं, इसलिए एक बल्ब से निकलने वाली किसी भी गर्मी का मतलब ऊर्जा की बर्बादी है। इसके अलावा, गर्मी पैदा करने वाले बल्बों को गर्मी के महीनों में घर को ठंडा रखने के लिए अधिक एयर कंडीशनिंग की आवश्यकता होती है।

सरकारों द्वारा नागरिकों को एलईडी लाइटिंग पर स्विच करने के लिए प्रोत्साहित करने और कई राज्यों में बल्बों पर सब्सिडी प्रदान करने की वजह से, धीरे-धीरे और लगातार डएऊ बल्बों की कीमतें कम हो रही हैं, जिससे वे और अधिक सुलभ हो गए हैं। लंबे समय तक प्रकाश-विकल्प के लिए वे सबसे अच्छे होते हैं और आपको एक हरित क्रन्तिवाली जीवन शैली में प्रवेश करने में मदद करते हैं। डएऊ का निपटान भी सरल है। उन्हें सामान्य कचरे में निपटाया जा सकता है। उन्हें सावधानी से लपेटने के बाद कचरे में फेंकना चाहिए ताकि उनमें से किसी के टूटने की स्थिति में, यह कचरा-बल्ब कर्मचारी को चोट न पहुंचाए। अंत में, बल्ब एक रिसाइकलर तक पहुंच जाएगा, जो शीशे और एल्यूमीनियम जैसी सामग्री को पुनर्प्राप्त कर सकेगा।

घर में, ऊर्जा के कई आयाम हैं, और इसका कुशल उपयोग अब न केवल बिजली की खपत में कटौती बल्कि ग्रीनहाउस गैसों को कम करने और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए एक मंत्र है। अगली बार हम प्रकाश व्यवस्था से परे अन्य रास्तों पर देख रहे होंगे जहां हम ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए अपना योगदान दे सकते हैं।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

Wordsworld

Bookmarks as signals and sentinels

Sandhya Rao

Mostly they tell us how far we've travelled in a book, occasionally they remind us that the journey remains unfinished.

Early April, I returned to *The Library Book* months after having inserted a bookmark to indicate where I had stopped reading. Some of you may remember the name: it's a book by Susan Orlean about a massive fire that was deliberately set off at the Los Angeles Public Library on April 29, 1986, in which some 400,000 books were destroyed. It begins: 'Even in Los Angeles, where there is no shortage of remarkable hairdos, Harry Peak attracted attention. "He was very blond. Very, very blond," his lawyer said to me, and then he fluttered his hand across his forehead, performing a pantomime of Peak's heavy swoop of bangs. Another lawyer, who questioned Peak in a deposition, remembered his hair very well. "He had a lot of it," she said. "And he was very definitely blond." An arson investigator I met described Peak entering a courtroom "with all that hair," as if his hair existed independently.'

I remember the book was so compelling that I told many friends about it. If the felicitous writing and amazing accounts of people, events, places, libraries and reading was so fascinating, why had I left it half-way?

Returning to it now is proving as engrossing as ever, the historical details enlightening, the anecdotes engaging, the descriptions of librarians and patrons absorbing. For instance, around page 160, we are introduced to a young man 'with a sweet, distracted look on his face'. This is CJ. He is deaf and autistic and has an extraordinary knowledge of maps. When the library acquires the Feathers Collection, maps occupying 'the equivalent of two football fields of shelving', it is found to be all jumbled up. CJ is called in to help organise the maps. In the course of putting the maps in order, CJ finds one stuck between the pages of a street atlas. It turns out to be a 'map of the 1932 Summer Olympics, which were held in Los Angeles just as the Great Depression bore down. … along the top of the map was the encouraging yet commanding phrase AVOID CONFUSION. The map had the frozen-moment quality of a snapshot.'

So, again: Why had I stopped reading? If you look online for reasons why people don't finish reading books, the most common answer is that they lose interest in them because they are bad or boring. In my case, two things happened: I was distracted by a whole pile of new books, and laid low by a mountain of work-related deadlines. After a while *The Library Book* was forgotten, although it remained — bookmark visible — on my open reading shelf, it was not consigned to a cupboard with closed doors. There were several occasions when I could have picked it up, given the ever-lengthening of our collective coronavirus isolation period, but the mood did not permit. Until this

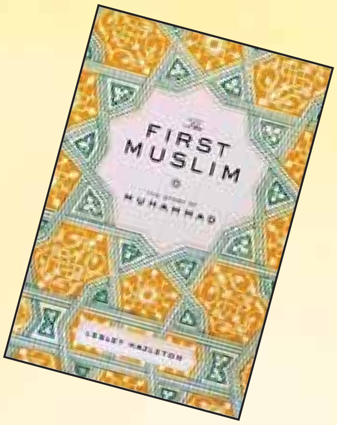

moment. Thanks be for the return of the mojo because *The Library Book*, with its unprepossessing, old-fashioned cover design, is a book lover's delight.

The fact is, I rarely read only one book at a time, although usually I prefer to generally do things one at a time and cross them off the list as I complete the tasks. With books, however, three at one go is normal; it's like savouring the flavour of the moment, each book a different flavour. *The Library Book* is quite distinct from Lesley Hazleton's *The First Muslim* (brilliant) which is a far cry from Naguib Mahfouz's *The Quarter* (not as compelling as his other work) and Burhan Sönmez's *Istanbul Istanbul* (a tough read). You could argue that there's some similarity between Mahfouz and Sönmez, but while *The Quarter* is a collection of quirky, short sketches featuring individuals inhabiting a certain part of Cairo, Sönmez sets the complex and sometimes confusing narratives of his characters inside a prison ward. Other titles awaiting my return include *Djinn Patrol on the Purple Line* by Deepa Anappara and *The Vanishing Half* by Brit Bennet.

This is where the game of algorithms comes into play. And we all know that the world of cyberspace is completely ruled by algorithms. So, I really shouldn't have been surprised to see the June 2019 article by Nilanjana Roy pop up on my Google menu: 'Why adults abandon more books than children'. The Internet Of All Things (sorry, IoT) had probably tracked my search for reasons why books are left partially read, and decided to help out. Writing in the *Financial Times*, she — I absolutely loved her book, *The Wildings* — says, 'An unfinished book is not necessarily bad or good — perhaps it is only that it took the reader by surprise. It was not the story they were expecting; they didn't like the main characters; they found the book unsettling. You might feel sympathy for readers who turn to *Moby Dick* expecting a rousing man-versus-great-white-whale adventure, and discover a book rippling with digressions on church services, and an entire chapter on the glories of tubs of whale sperm.'

Respectfully going by Nilanjana Roy's explanation, I shall most likely not pick up *Djinn Patrol* again: the prose is lucid and the plot sufficiently twisty-turny, but in my

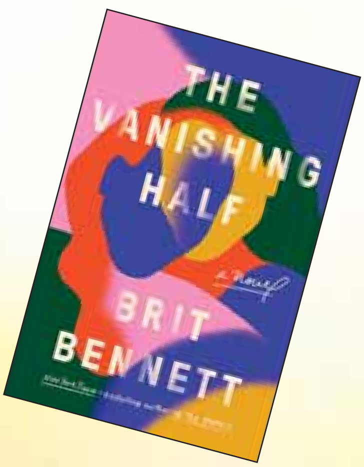

view, the book is overwritten, the voices are not entirely in character, and some of the stylistic devices are definitely illogical. Mind you, this is a subjective opinion, so please feel free to make of it what you will. Still, I would urge you to take a shot at *The Vanishing Half*: it holds your attention from the very first page and the storyline seems promising. That's next on my CTR (continue to read) list. As against TBR (to be read). *Istanbul Istanbul* will take a little more fortitude and possibly time, but fortitude shall be garnered and time made because for one, the cover is too dramatic to disregard, and for another, the voices too compelling to ignore. So, too, *The First Muslim*. There's no way I'm not going to finish that book, and since *The Quarter* is our book club's choice, besides being an easy read, that's going to breast the tape as well. This time, on my Kindle.

Which brings me to a question: Would I (or you or we) love a book more if it were an object 'in person' so to speak, pages, jacket, smell and all, rather than on a 'device'? What do you think?

The columnist is a children's writer and senior journalist.

Subscribe NOW!

Annual Subscription (India)

Print version	e-Version
₹420/-	₹360/-

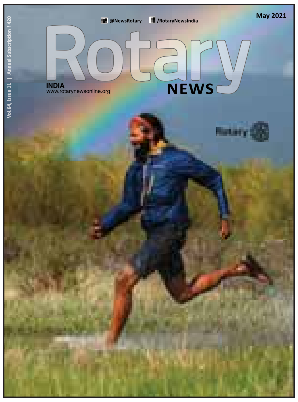

for Rotary News Print Version & e- Version

For the Rotary year 2021 – 2022

Print version ☐ e- Version ☐

	English	Hindi	Tamil
No. of Copies			

For every new member the pro-rata is ₹35 a month.

As concerned citizens of the world, those of you who are alarmed at the degradation of the environment and slaughter of trees, kindly opt for our e-Version.

Please attach the TYPED list of individual members with their complete address, PIN code, Mobile number and e-mail ID. Intimate language preference (English/Hindi/Tamil) against each member's name.

Rotary Club of .... RI District ....

Name of the President/Secretary ....

Address ....

....

....

City .... State .... PIN ☐☐☐☐☐☐

STD Code .... Phone: Off. .... Res. ....

Mobile ....E-mail ....

Cheque/DD No. .... Dated .... for Rs. ....

Drawn on ....

in favour of "**ROTARY NEWS TRUST**" is enclosed.

Date: President/Secretary

Payments can be made online at HDFC Bank, Montieth Road, Egmore, Chennai – Rotary News Trust, SB A/c No 50100213133460; IFSC HDFC0003820. Email us the UTR Number, Club Name, President/Secretary's name, Amount and Date of Transfer.

Mail this form to:
Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
Tamil Nadu, India. Ph: 044 4214 5666, e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Subscription norms

1. Subscription is for the Rotary year (July to June).
2. It is mandatory for every Rotarian to subscribe to a Rotary magazine.
3. The annual subscription for print version is ₹420 and e-version is ₹360 per member.
4. Subscription for the full year must be sent in July, in the prescribed form.
5. Those joining after July can pay for the remaining Rotary year at ₹35 an issue for print version and ₹30 for e-version.
6. Subscription account of the club with *Rotary News* is a running account and does not cease at the end of June every year.
7. Names of all members, with their complete postal address with **PIN CODE, mobile number and e-mail ID** must be sent along with the form and DD/cheques payable at par.
8. Language preference **(English, Hindi or Tamil)** should be stated alongside member's name.
9. Please send the updated mailing address and contact details of your members **directly** to *Rotary News*.
10. Members to ensure their names are included in the Subscribers' list their club sends us. If you've paid, but your name is not sent to us by your club, you will not get a copy of the magazine.
11. When members leave, clubs should inform *Rotary News*. Please help reduce wastage of copies.
12. Clubs are liable to pay for the number of magazines we despatch according to the list available with the Rotary News Trust.
13. Unpaid dues of the club will be shown as outstanding against the club. Any payment received subsequently will be adjusted against earlier dues.
14. Clubs with subscription arrears will be notified to RI and are liable for suspension.
15. We are in the process of tallying our subscriber list with RI membership from India.

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

कार्यालय लॉकडाउन के कारण फाउंडेशन मान्यता में देरी

कोविड-19 के प्रकोप और परिणामी लॉकडाउन के कारणव्यवसाय के लिए कार्यालय खुलने के बाद ही मान्यताएं प्रेषित की जाएंगी। इस बीच मंजू जोशी के साथ Manju.Joshirotary.org पर आगे की प्रक्रिया के लिए हस्ताक्षरित मान्यता हस्तांतरण अनुरोध फॉर्म और पॉल हैरिस सोसाइटी सदस्यता फॉर्म की स्कैन की गई कॉपी (केवल पीडीएफ प्रारूप में) साझा करना जरि रखें। प्रमुख दानकर्ता मान्यता के लिए उत्कीर्णन निर्देश इसी ईमेल पते पर साझा किए जा सकते है।

क्लब मान्यता

रोटरी संस्थान क्लबों को अपने अनुदान और कार्यक्रम ों के समर्थन हेतु मान्यता अर्जित करने के कई अवसर प्रदान करता है। मंडल/क्लब नेतृत्वकर्ताओं के लिए My Rotary में उपलब्ध क्लब फाउंडेशन बैनर रिपोर्ट नीचे सूचीबद्ध विभिन्न क्लब बैनरों के अंतर्गत वर्तमान रोटरी वर्ष में क्लब की प्रगति को प्रदर्शित करती है:

- 100% संस्थान को देने वाला क्लब
- 100% प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष क्लब
- वार्षिक कोष में देने में प्रति व्यक्ति शीर्ष तीन
- 100% पॉल हेरिस सोसाइटी क्लब
- 100% पॉल हेरिस फ़ेलो क्लब (एक बार मिलन वाला बैनर)

प्रभावी रोटरी वर्ष 2015-16,नए क्लब सदस्य (जो वर्तमान रोटरी वर्ष के दौरान किसी अन्य क्लब में शामिल हुए या वहाँ से स्थानांतरित हुए) क्लब बैनर के लिए भागीदारी आवश्यकताओं में शामिल नहीं है (100%पॉल हैरिस फेलो बैनर को छोड़कर)। हालांकिप्रति व्यक्ति गणना हेतु नए सदस्यों के योगदानों का उपयोग किया जाएगा।

स्कूलों में WASH लक्ष्य चुनौती

स्कूलों में WASH लक्ष्य चुनौती की भारतीय मान्यता समिति ने 15 अप्रैल तक कार्यान्वयन करने वाले रोटरी क्लबों/स्कूलों को 233 रोटरी वन स्टार अवार्ड से सम्मानित किया है। सभी भाग लेने वाले रोटरी मंडलों/क्लबों को उनके अविश्वसनीय प्रयास के लिए बधाई! WinS लक्ष्य चुनौती प्रयोग 30 जून, 2021 को समाप्त होने जा रहा है। वर्तमान में, इस परियोजना का मूल्यांकन किया जा रहा है और कार्यक्रम मूल्यांकन परिणामों की समीक्षा करने और न्यासियों को उनकी अनुशंसा करने के लिए प्राप्त निष्कर्षों को WinSसंचालन समिति के साथ साझा किया जाएगा। ■

पॉल हैरिस को सम्मानित करते हुए रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब सीहोर द्वारा पॉल हैरिस की प्रतिमा की स्थापना समारोह में RID 3090 के PDG बाग सिंह पन्नू (दाएं से तीसरे) और RID 3040 के DG गजेंद्र नारंग (बाएं से चौथे)।

रो ई मंडल 3040 के डीजी गजेंद्र नारंग ने कहा, "हमारे 12 लाख सदस्यीय संगठन की शुरुआत एक आदमी-पॉल पी हैरिस की परिकल्पना से हुई और उनके सम्मान में हमने अपने जिले की नौ रोटरी इमारतों में उनकी प्रतिमा लगाई है।"रो ई मंडल 3090 के अंतर्गत, पीडीजी बाग सिंह पन्नू की मदद से प्रतिमाओं को बनवाया गया और इंदौर, मंदसौर, नीमच, झाबुआ, खंडवा, सोनकच्छ, सीहोर, भोपाल और छिंदवाड़ा पहुंचाया गया, जहां उन्हें क्लबों ने अपने रोटरी हॉल में लगवाया।

2017 में जब वह गवर्नर थे, तब रो ई मंडल 3090 के अंतर्गत, रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पन्नू ने जिले के 20 क्लबों में, जिनके अपने सामुदायिक हॉल हैं, रोटरी संस्थापक के प्रतिमा की स्थापना की शुरूआत की थी। उनसे प्रेरित होकर, डीजी नारंग, जिले के क्लबों को रोटरी की सार्वजनिक छवि को मजबूत करने के उद्देश्य से इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए आग्रह कर रहे हैं। ■

District Wise TRF Contributions as on April 2021

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	78,363	5,351	12,128	0	95,843	356	7.3
2982	40,731	16,977	20,770	49,946	128,424	120	3.9
3000	85,046	27,496	492	47,958	160,992	83	1.6
3011	86,648	16,120	65,653	282,154	450,576	123	3.4
3012	12,808	2,580	0	42,321	57,710	76	2.1
3020	162,332	67,334	81,660	42,726	354,053	280	6.9
3030	54,832	2,315	27,743	143,546	228,436	140	2.7
3040	37,139	354	0	11,876	49,369	50	2.4
3053	22,076	3,298	0	211,400	236,774	53	1.9
3054	74,395	3,562	0	368,873	446,830	266	4.4
3060	94,114	1,341	105,257	161,665	362,377	1,350	31.0
3070	46,199	1,813	0	52,573	100,586	299	9.5
3080	54,707	13,069	0	(13,308)	54,468	181	5.5
3090	35,919	533	0	(736)	35,716	117	5.3
3100	58,126	252	0	15,630	74,009	193	8.6
3110	43,364	200	0	0	43,564	70	1.9
3120	14,665	1,769	0	8,609	25,043	116	3.5
3131	239,586	43,760	136,935	778,326	1,198,606	1,068	20.8
3132	24,107	4,012	15,000	6,451	49,570	57	1.7
3141	652,937	44,754	397,179	1,250,422	2,345,292	968	18.2
3142	232,306	33,969	451	50,782	317,509	802	25.0
3150	128,947	10,115	160,043	38,280	337,385	794	24.0
3160	40,246	9,486	16	440	50,189	82	3.3
3170	55,582	24,189	1,240	206,105	287,116	260	4.6
3181	87,308	6,618	0	7,050	100,976	338	10.1
3182	93,031	6,138	0	16,207	115,375	400	13.0
3190	200,360	80,872	52,035	220,236	553,503	1,092	21.9
3201	170,413	39,821	0	398,400	608,633	595	10.7
3202	54,103	24,622	8,468	54,957	142,150	161	3.0
3211	47,482	3,441	0	106,447	157,369	71	1.6
3212	19,281	55,154	10,153	140,733	225,321	55	1.3
3231	4,776	589	0	23,767	29,132	25	0.6
3232	90,357	45,062	21,500	1,142,888	1,299,807	200	3.5
3240	123,691	25,428	0	49,328	198,448	283	9.3
3250	47,820	4,439	7,195	62,199	121,653	345	9.4
3261	105,540	1,733	50,000	47,471	204,745	37	1.4
3262	100,581	3,253	2,777	(2,060)	104,552	146	4.1
3291	77,124	13,027	35,758	71,251	197,160	138	3.8
India Total	**3,597,043**	**6,44,848**	**1,212,456**	**6,094,914**	**11,549,261**	**11,790**	**7.95**
3220 **Sri Lanka**	168,897	21,022	26,000	48,781	264,701	258	13.6
3271 **Pakistan**	48,292	97,291	0	239,793	385,376	202	12.4
3272 **Pakistan**	72,158	20,559	0	1,168	93,885	445	26.6
3281 **Bangladesh**	188,712	15,881	33,012	303,777	541,383	440	6.2
3282 **Bangladesh**	62,851	8,235	0	8,270	79,356	123	3.0
3292 **Nepal**	286,637	9,867	0	242,429	538,934	1,768	35.8
South Asia Total	**4,424,591**	**8,17,703**	**1,271,468**	**6,939,133**	**13,452,894**	**1,5026**	**8.86**

Source: RI South Asia Office

एक झूले पर स्थिरता

भरत और शालन सवुर

यह एक साल झूले की तरह निकला है, है न? एक महीना ऊपर, एक महीना नीचे। जब टीके बन गएतो हम सभी तैयार थे और ऐसा लग रहा था कि प्रतिरक्षा प्रणाली और अर्थव्यवस्था हमारे उत्साह के साथ ही बढ़ रही है। लेकिन दुख की बात है कि कोविड-19 वायरस भी तेजी से बढ़ रहा था बेशक बहुत से नागरिकों ने अपने मास्क हटाकर और एकदम बेपरवाह होकर इतना फैलने में इसकी मदद की है जैसे कुछ हुआ ही न हो... और यह झूला फिर शुरू हो गया।

फिर भी हमें निराश नहीं होना चाहिए। हमें इसे मुस्कुराकर सहने की जरूरत नहीं है। एक बीच का रास्ता भी है, एक पुराना नया सामान्य जापानियों के लिए पुराना, लेकिन बाकि दुनिया के लिए नया - हम इसे अपना सकते है। इसे *वाबी-साबी* कहा जाता है। यह एक प्यारि, प्रशंसनीय अवधारणा, एक कला हैजो वास्तव में हर चीज़ का जश्न मनाती है चाहे वे अपूर्ण, नश्वर, टूटी हुई, अनिश्चित स्थिति में ही क्यों न हो। आप स्वीकार करने के साथ ही अपूर्णता की संुदरता की सराहना करते है, आप स्वयं इसमें वैसा ही सहज महसूस करते है जैसा आप एक पुरानी, परिचित, आरामदायक टी-शर्ट में करते है।

अपने आप को इसके अनुकूल बनाने का यह एक शानदार दृष्टिकोण है। आप अपनी झुर्रियों से प्यार करते हुए अपने चेहरे को दर्पण में प्रेम से निहार सकते हैजो भले अब बूढ़ा हो गया हो पर अब भी आपके साथ है। आप कटोरे के टूटे हुए हिस्से के माध्यम से आती हुई धूप की प्रशंसा करते है जो असंख्य इंद्रधनुषी रंग बिखेर देती है और यह आपके मन और घर में कला के एक क़ीमती टुकड़े के रूप में जगह ले लेता है।

महामारी के साथ समझौता। इसी तरह चिंतित, भटकता मन शांत हो जाता है जब यह महामारी और आपके जीवन में लाए गए परिवर्तनों को अपनाकर शांति स्थापित करता है। अनिश्चिताएं बहुत है। जब लोग घर से काम करने में सहज हो गए, तो उन्हें कार्यालय परिसर में वापस रिपोर्ट करने के लिए कहा गया... कई छोटे-लॉकडाउन, वेतन-कटौती, पदावनति, मिश्रित सेट-अप से संचालन हो सकता है...

चलिए जानते है इसे कैसे किया जाए। पहली चीज़ जो आपको करनी है वो अपने दिमाग को ज्यादा सोचने से रोकना है। इसे शांत करें। कुछ गहरी साँसें लें। दिमाग में जितना भी डर है उसे बाहर निकालें। यह सुनिश्चित करें कि आप केवल बर्दाश्त करने वाले नहीं है, आप अनिश्चितता स्वीकार करने वाले है। *वाबी-साबी* के अनुसार: अनिश्चितता का मतलब यह नहीं है कि कुछ बुरा होगा। सब कुछ नियंत्रित न कर पाना भी गलत नहीं होता। जीवन हमेशा बदलता है, अधूरा, अपूर्ण होता है... इसकी प्रकृति का विरोध न करें, बस इसके साथ बहते रहें। इसे स्वीकार करें। इसमें निहित संुदरता देखें। एक *वाबी-साबी* के अनुसार:अपने अपूर्ण, अनिश्चित और संुदर जीवन के निर्माण की रचना की जिम्मेदारी लें।'

अलग ढंग से सोचें। आप जिम्मेदारी कैसे लेते है? उत्सुक रहिए, उत्साहित रहिए। पूर्वेक्षा में अपने हाथों को रगड़ें। संभावनाएं क्या है? बड़ी खबर यह है: आप अपने मस्तिष्क को पानी की तरह ही रचनात्मक ढंग से बहने दे सकते है। दिमाग में न्यूरोप्लास्टिसिटी होती है और हम *वाबी-साबी* के अनुसार अलग तरह से सोचकर इसे पुरानीअवधारणाओं से मुक्त कर सकते

है। हमरि अवधारणाएं हमरि सोच को मुक्त करती है, *वाबी-साबी* सोच में स्वीकृति की भावना को मिलाकर इसे अधिक लचीला बनाती है। मैं व्यक्तिगत अनुभव से जानता हूँ कि अवसाद, अस्वीकृति का एक भावहमें एक अनियंत्रित गिरावट की ओर ले जाता हैजबकि स्वीकृति एक अद्भुत नींव बनाती है और लचीलापन एवं स्थिरता लाने में मदद करती है।

और आप महसूस करेंगे कि एक झूले पर भी स्थिरता का अनुभव करना संभव है! आप कहाँ से शुरू करते है? पहले, कृपया यह समझ लें कि मस्तिष्क में तीन प्रणालियाँ हैं जिनके साथ आप काम कर सकते है और अपने आप को एक शानदार जीवन का उपहार दे सकते है। यह प्रणाली व्यापक स्तर पर तीन न्यूरो-मॉड्यूलेटर - रसायन डोपामाइन, एपाइनफ्राइन, सेरोटोनिन से प्रभावित होती है। आपके पास अपने मस्तिष्क की इन रसायनों के स्राव में मदद करने के साधन है जो क्रमशः उत्तेजना, तात्कालिकता और संतोष लाते है।

उद्देश्य के साथ आगे बढ़ें। हर सुबह जब आप काम पर जाने के लिए उठते है, तो आप अपना डोपामाइन-सिस्टम उत्तेजित करते है। यह रसायन पूर्वेक्षा के साथ उत्सर्जित होता है। तोइधर आप दफ्तर जाने के लिए तैयार हुए और उधर आपको पता चला कि लॉकडाउन लग गया... तो क्या इसमें कोई आश्चर्य है कि निराशा डोपामाइन के स्तर को नीचे गिरा देती है? अब आप देखते है कि आप के अंदर यह झूला कैसे काम करता है? आप एक पल खुश होते है और अगले ही पल उदास। यहीं पर आप संयम से काम लेते है। आप एक उद्देश्य के साथ चलते है। शुरुआत से ही आपके मस्तिष्क ने अच्छी तरह से काम किया क्योंकि आप दफ्तर जाने के उद्देश्य से आगे बढ़ें, है ना? अब इसे थोड़ा अलग ढंग से सोचें। आपका उद्देश्य फिट होना है, अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार करना है और इसके लिए आपको सुबह की सैर पर जाना है। यह अग्रणी कदम उठाना मस्तिष्क के लिए बड़ी बात है। उत्तेजित करने वाला रसायन डोपामाइनअपने साथी रसायन एपाइनफ्राइन को पुकारता है जो तीव्रता प्रदान करके आपको तैयार करता है। इसलिए, आप एक उद्देश्य के साथ अच्छे स्वास्थ्य के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं और आपके दिन को एक बढ़िया उत्तेजक शुरुआत मिलती है। अवसाद का विपरीत खुशी नहीं होतायह असहाय, निराश और नाउम्मीद महसूस करना नहीं होता। आपका आगे बढ़ता हुआ कदम सफल जीवन की ओर बढ़ता हुआ कदम है।

यह आत्म-उदाहरण गुणगान करता है। अपना खुद का प्रशंसक होना ही आपके मस्तिष्क को प्रभावित करता है। टहलने के लिए, एक विचार के लिए, अपने कँम्प्यूटर पर पूरी की गई एक परियोजना के लिए, स्वस्थ भोजन के लिए, इतना खूबसूरत प्रबंधन करने के लिए हमेशा दिन भर स्वयं की सराहना करते रहें। आत्म-प्रशंसा करने के पीछे एक बढ़िया कारण है। यह इनाम रसायन के नाम से प्रसिद्ध डोपामाइन को उत्तेजित करता है। और एपाइनफ्राइन को अपने साथी के रूप में डोपामाइन की आवश्यकता होती है। डोपामाइन के बिना, एपाइनफ्राइन की तात्कालिकता बैचेनी और तनाव में बदल जाती है। इसलिएसीधे शब्दों में कहेंतो आपके द्वारा की गई सभी चीजों से प्रसन्न रहें और आपका मस्तिष्क खुद ही अच्छा महसूस करेगा।

वर्तमान की खुशी।एक और चीज़ है जो आपको अपने और अपने कल्याण के लिए करनी है - सेरोटोनिन नामक एक अन्य इनाम रसायन को उत्तेजित करना है। जहाँ डोपामाइन आपके बाहर जाकर किए गए कार्य का आनंद लेता है, वहीं सेरोटोनिन आपके तात्कालिक वातावरण में पहले से मौजूद चीजों का आनंद उठाता है। यह आपका घर, दोस्त, परिवार, पालतू हो सकता है... यह आपको शांत करता है, एक शांत, संतुष्ट भावना को बढ़ावा देता है। सेरोटोनिन तब निकलता है जब आप अपने जीवनसाथी, अपने बच्चों को गले लगाते है,अपने कुत्ते या बिल्ली को लाड़-प्यार करते है, फोन पर किसी प्रिय भाई या दोस्त से बात करते है... इसे बंधन से प्यार है। और यह बंधन न केवल महामारी में, बल्कि हर समय एक महान समर्थक होता है। बंधन मस्तिष्क की रीढ़ हैं जो हमें बाहर जाने और कार्य करने का साहस और आत्मविश्वास प्रदान करते है।

यह कितना आश्चर्यजनक हैकि हमारे मस्तिष्क में ही हमारे सवालों का जवाब देने के लिए तीन मित्र रसायन मौजूद है? जब आप नियंत्रित की जा सकने वाली चीजों को नियंत्रित करने और अपनी भावनाओं को प्रभावित करने में सक्षम होते है, तो आप खुद को अधिक महसूस करना शुरू करते है। जब आप अपने मस्तिष्क की इन तीन प्रणालियों को जोड़ते है, तो आप अपने जीवन के बिंदुओं को जोड़ सकते हैं।

जब आप नियंत्रित की जा सकने वाली चीजों को नियंत्रित करने और अपनी भावनाओं को प्रभावित करने में सक्षम होते है, तो आप खुद को अधिक महसूस करना शुरू करते है।

एक या दो वर्षों के लिए, इस निरंतर अनिश्चितता की संभावना है। कोरोनावायरस पूरी तरह से दूर नहीं जा सकता लेकिन यह कमजोर पड़ रहा है। इसके अलावा, हमारे टीके, मास्क, सामाजिक दूरी इसे आभासी रूप से हानिरहित बना देगी। विशेषज्ञों को उम्मीद है कि यह अगले पांच वर्षों में 'खाँसी और सर्दी' फैलाने वाला एक और वायरस होगा। इस बीचवे कहते हैं, भले ही हम संक्रमित हैं, यह अन्य वायरस के खिलाफ हमरि प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाएगा।

मैं काफी हूँ। इस समय, छोटे-लॉकडाउन के दौरान घर में रहने पर झल्लाहट महसूस न करें जो हमारे सामूहिक भविष्य का हिस्सा हो सकता है। कँन्ट्री गर्ल नामक एक फिल्म में, शहर में जन्मी एक किशोरी को ग्रामीण परिवेश में झल्लाते देख, घोड़े की चिकित्सक सहजता से अपना दर्शन शास्त्र साझा करती है: 'मैं वहीं हूँ, जहाँ मुझे होना चाहिए... मैं काफी हूँ।' तथ्य यह है, हम में से अधिकांश लोग इसी विचार में खोए रहते है कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए और हम इसपर ध्यान नहीं देते कि हमारा जीवन कैसा है। जब हम अपनी अभिमानी धारणाओं, अपनी जिद्दी मान्यताओं से परे हो जाते हैतो हम इसकी अनिश्चितताओं को जीवन के रहस्यों के रूप में देखते है और हम धीरे-धीरे इसके आदी हो जाते है यह वही है जो होना चाहिए। मैं वहीं हूँ जहाँ मुझे होना चाहिए। मैं काफी हूँ।'

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तिरुवरूर मिडटाउन - रो ई मंडल 2981

तिरुवरूर मेडिकल सेंटर में एक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसमें 400 से अधिक महिलाओं की त्वचा रोग, मधुमेह और नेत्र विकार जैसी सम स्याओं के लिए जांच की गई।

रोटरी क्लब राजमुन्डरी रिवर सिटी - रो ई मंडल 3020

विश्व किडनी दिवस पर सफाई कर्मियों के लिए दो दिवसीय विशाल स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। DGN भास्करराम वी उपस्थित थे और डॉ पी शशांक के नेतृत्व में डॉक्टरों ने लगभग 500 रोगियों की जांच की।

रोटरी क्लब सेलम - रो ई मंडल 2982

रोटरी हॉल में एक कोविड टीकाकरण शिविर आयोजित किया गया जिसमें सलेम निगम के सहयोग से 160 लोगों को टीका लगाया गया।

रोटरी क्लब संगम चालीसगाँव - रो ई मंडल 3030

क्लब ने बसों और ट्रेनों में अपना माल बेचने वाले शारीरिक रूप से विकलांग 25 फेरीवालों को किराने की थैलियाँ दान की। परियोजना में आई ₹30,000की लागत को सदस्यों द्वारा वहन किया गया था।

रोटरी क्लब दिल्ली कनॉट प्लेस रैसिना हिल्स - रो ई मंडल 3011

क्लब ने गाजियाबाद में सात और मशीनों के साथ अपना दूसरा सिलाई केंद्र खोला। व्यावसायिक केंद्र के विस्तार से लगभग 50-80 महिलाओं को लाभ होगा।

रोटरी क्लब बीकानेर - रो ई मंडल 3053

कोविड मरीजों के इलाज के लिए सरकारी अस्पताल को श्वासयंत्र और पीपीई किटें दान की गईं। यह वैश्विक अनुदान परियोजना रोटरी क्लब डेनवर, रो ई मंडल 5450,के सहयोग से की गई थी।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब उदयपुर वसुधा - रो ई मंडल 3054

बेदला गांव के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में छात्राओं के लिए मासिक धर्म स्वच्छता सत्र आयोजित किया गया। उन्हें सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए।

रोटरी क्लब सहारनपुर - रो ई मंडल 3080

सिविल अस्पताल में आयोजित किए गए कोविड टीकाकरण शिविर में 50 से अधिक रोटेरियनों एवं उनके परिवार के सदस्यों को टीका लगाया गया। एजी पवन अरोड़ा और नोडल कोविड वैक्सीन अधिकारी डॉ मनदीप सिंह उपस्थित थे।

रोटरी क्लब तारापुर - रो ई मंडल 3060

तारापुर और आसपास के गांवों की 24 वंचित महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए एक सिलाई कक्षा शुरू की गई। कक्षाओं का निरीक्षण एक रोटेरियन द्वारा किया जा रहा है और इस परियोजना की लागत ₹ 36,000 है।

रोटरी क्लब कानपुर नॉर्थ - रो ई मंडल 3110

शहर में कोविड टीकाकरण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए पांच अन्य क्लबों और रो ई मंडल 3110 के साथ साझेदारी में एक कार रैली का आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब कांगड़ा - रो ई मंडल 3070

बंगाल से आए प्रवासी कामगारों को सैनिटाइजर, मास्क और साबुन वितरित किए गए। क्लब के अध्यक्ष सुनील डोगरा और पूर्व अध्यक्ष नवनीत शर्मा ने वायरस से बचाव के उपाय बताए।

रोटरी क्लब वाराणसी ईस्ट - रो ई मंडल 3120

अयाज सर्जिकल एंड क्रिटिकल केयर यूनिट के साथ साझेदारी में आयोजित एक चिकित्सा शिविर में लगभग 190 रोगियों की आंख, दांत, बीपी, शुगर, ऑर्थो और तंत्रिका संबंधी विकारों की जांच की गई।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब मलकापुर - रो ई मंडल 3132

क्लब द्वारा आयोजित एक आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर ने 100 रोगियों को लाभान्वित किया। इस मौके पर क्लब के अध्यक्ष सलीम मुजावर और सचिव प्रवीण जाधव मौजूद थे।

रोटरी क्लब मैंगलोर सीसाइड - रो ई मंडल 3181

बेंगरे स्थित DKZP हायर प्राइमरी स्कूल को उनकी स्मार्ट कक्षाओं में मदद करने हेतु एक डेस्कटॉप कँप्यूटर (₹23,000) दान किया गया। क्लब अध्यक्ष सुरेश एम एस ने स्कूल प्रधान को कँप्यूटर सौंपा।

रोटरी क्लब सुलूरपेट - रो ई मंडल 3160

महिला दिवस पर जरूरतमंद लोगों की सेवा करने के लिए पांच गृहणियों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा क्लब अध्यक्ष प्रतिमा सुनकारा द्वारा गरीबों को 250 साड़ियाँवितरित की गई।

रोटरी क्लब मणिपाल - रो ई मंडल 3182

क्लब ने अपनी व्यावसायिक सेवा परियोजनाओं को लागू करने के लिए सामाजिक सशक्तिकरण केंद्र की स्थापना की है। डीजी राजाराम भट द्वारा इस सुविधा का उद्घाटन किया गया।

रोटरी क्लब सांगली मिडटाउन - रो ई मंडल 3170

करनाल गांव में पालतू पशुओं के लिए एक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसमें पशु चिकित्सकों द्वारा 50 से अधिक पशुओं की जांच की गई। क्लब ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि वे हर साल इस शिविर का आयोजन करेंगे।

रोटरी क्लब पलारीवत्तोम - रो ई मंडल 3201

मंडल निदेशक बालगोपाल, एजी चित्रा अशोक और क्लब अध्यक्ष रमेश कुमार की उपस्थिति में दो बालिकाओं वाली विधवा को एक नवनिर्मित घर सौंपा गयाजिन्होंने मिलकर लाभार्थी को चाबी सौंपी।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कासरगोड़ - रो ई मंडल 3202

DG हरिकृष्णन नांबियार द्वारा मंडल के *प्रोजेक्ट ROPE* के अंतर्गत पुलिस विभाग को ट्रैफिक बैरिकेड्स सौंपे गए। इसने रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाया।

रोटरी क्लब धर्मनगर - रो ई मंडल 3240

रोटेरियन मलॉय कांति रॉय ने उत्तरी त्रिपुरा में अपनी इमारत को टीकाकरण केंद्र में बदलने के लिए उसे दान कर दिया। अभियान को संचालित करने हेतु मंडल अधिकारियों द्वारा क्लब के सदस्यों के लिए एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। अप्रैल में 950 से अधिक लोगों को टीका लगाया गया था।

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - रो ई मंडल 3211

क्लब ने एक सरकारी अधिकारी को केरल के मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष (CMDRF) में योगदान देने के लिए ₹ 1 लाख का चेक भेंट किया।

रोटरी क्लब राउरकेला रिवर साइड - रो ई मंडल 3261

क्लब ने कल्पतरु आश्रम परिसर में स्थित एक अनाथालय के स्कूल में बच्चों को कँबल बांटे। हाई-टेक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल को बीस व्हीलचेयर दान की गई।

रोटरी क्लब वेल्लोर कॉसमॉस - रो ई मंडल 3232

क्लब ने अपने कोविड-राहत प्रयासों के अंतर्गत वेल्लोर स्थित सरकारी पेंटलैंड अस्पतालको पल्स ऑक्सीमीटर, बीपी उपकरण और एक बड़ा स्पीकर फोन दान किया।

रोटरी क्लब कस्बा - रो ई मंडल 3291

क्लब के सदस्यों ने कायस्थपारा बस स्टॉप के पास स्थित एक सार्वजनिक शौचालय-सह-स्नानगृह की सफाई की। 1,000 से अधिक यात्री प्रतिदिन इस सुविधा का उपयोग करते है।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

LBW

साधारण जानकारी का ऊंचा मूल्य

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

आप कितना कमाते हैं, इस में आपके भाग्य की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। 1991 में मेरी और मेरे कुछ साथियों की किस्मत अचानक बदल गई। मेरी किस्मत का पलटना तो वाकई चौंकानेवाला था। 1972 में मैंने अर्थशास्त्र में मास्टर्स की डिग्री पूरी कर ली थी और नौकरी के लिए आवेदन करना शुरू कर दिया था। लगातार तीन वर्षों तक भारतीयस्टेट बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक, एयर इंडिया द्वारा बारी बारी से मेरा आवेदन निरस्त कर दिया गया और यू पी एस सी द्वारा भी जिसका कहना था कि अर्थशास्त्र की अपेक्षा ब्रिटिश राजनीति और संवैधानिक इतिहास की मुझे अधिक जानकरी थी। मैं अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर था पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ा जबकि ब्रिटिश राजनीतिक और संवैधानिक इतिहास के बारे में मैं ने इधर उधर से और कुंजियों से पढ़कर सीखा था।

अंततः, 25 साल का होने से कुछ दिन पहले पहले, मुझे एक अग्रणी ब्रिटिश प्रकाशन समूह में उनके अर्थशास्त्र संपादक की नौकरी मिली। मेरी किस्मत के रास्ते में यह पहला मोड़ था। मुझे सार्वजनिक क्षेत्र और सरकारी नौकरियों से दो गुना वेतन मिलता था, जिन्होंने मेरी प्रतिभा पहचानने से इनकार कर दिया था । लेकिन पांच साल में ही मैं ऊब गया और मै नें पत्रकारिता में उतरने का निर्णय किया। वेतन था वर्तमान का एक तिहाई, प्रतिमाह जो ₹1,800 से ₹1,200 हो गया था - 1980 में यह खासी रकम होती थी। लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। काम भी तो दिन में तीन घंटे कम था। यूं समझो मैंने आराम खरीदा था। हालांकि यह एक महँगा सौदा था, लेकिन ठीक था क्योंकि अब मैं अपनी पत्नी और बाद में अपने बेटों के साथ अधिक समय व्यतीत कर सकता था।

वैसे भी प्रिंट पत्रकारिता के पेशे में वेतन कम ही रहा है और 1980 से 1990 के बीच मेरा वेतन बढ़कर ₹4,000 होग या, दस वर्षों में सिर्फ ₹2,800 रुपये कीवृद्धि। हां, इतनी ही क्योंकि कम तनख्वाह की भर पाई, संपादकीय पृष्ठ या मुख्य पृष्ठ पर अपना नाम देखकर हुआ रोमांच कर देता था ।

लेकिन, जैसा कि मैंने कहा, हर किसी की ज़िंदगी में कुछ पैसा तो आसमान से भी टपकना चाहिए और 1993 में टीवी समाचारों के आने के बाद पत्रकारों की मांग अचानक से बढ़ गई। टीवी ने प्रिंट पर कब्जा कर लिया और बाजार के अर्थशास्त्र नेतेजी से प्रवेश ले लिया। अचानक सभी का वेतन बढ़ गया। यह लॉकडाउन के दौरान व्हिस्की की बड़ी हुई कीमत की तरह था - अगर आपको चाहिए तो आपको भुगतान भी वैसा ही करना होगा। या, जैसा कि कहा जाता है, एक उठता हुआ ज्वार समुद्र की सभी नावों को ऊपर उठा लेता है। फिर साधारण खच्चर हो या रेस का घोड़ा, कोई फर्क नहीं था। हम सब काफी अमीर हो गए थे।

मैं खच्चर की श्रेणी में नहीं था, नाही मैंरे सके घोड़े की श्रेणी में था। मैं निहायत ही आराम पसंद आदमी था बल्कि आज भी बहुत आलसी हूँ। जो मेरी आलोचना करते थे उनके समक्ष, मैं अपनी इस आदत को, अर्थशास्त्र के सिद्धांत के माध्यम से न्याय संगत बताते हुए अपनी सफाई देता था। कर्मचारी के काम की सी मांत उपयोगिता उसके सीमांत राजस्व से कम है। मेरे बच्चे, इसे बाबा का पहला और एक मात्र का यदा कहते हैं। सौभाग्य से, मेरी पत्नी एक मेहनती पेशेवर है और उसने कभी कोई शिकायत नहीं की। उसने हमें आराम से रहने केलिए काफी कमाई करते है। आज भी, एक प्रोफेसर के रूप में, वह तीन गुना अधिक कमाती है और मेरी तुलना में छह गुना अधिक मेहनत करती है।

> कर्मचारी के काम कीसी मांत उपयोगिता उसके सीमांत राजस्व से कम है। मेरे बच्चे, इसे बाबा का पहला और एक मात्र का यदा कहते हैं।

लेकिन भुगतान की बात करें, टीवी और भाग्य, हम में से वो लोग,जो टीवी पर नहीं जा सके थे क्योंकि हम न तो दिखने में अच्छे थेऔर न ही युवा थे अचानक से हमारी भी तनख्वाह बढ़ गई। 1990 और 2000 के बीच मेरी आय लगभग 15 गुना बढ़ गई थी। और सोने में सुहागाये कि मैं अब.जरा सी. ज्यादा मेहनत कर रहा था।

इस अप्रत्याशित वृद्धि ने हमें पूरी तरह से आश्चर्य में डाल दिया था, जब तक एक दिन मालिक का दायां हाथ समझे जानेवालेवाले व्यक्ति ने हमें नहीं समझाया। "आप जैसे लोग विलक्षण हैं। आप थोड़ा बहुत अर्थशास्त्र जानते हैं, काफी है। आप थोड़ी बहुत अंग्रेजी जानते हैं, चलेगा। लेकिन आप स्वाभिमानी अर्थशास्त्री लोग, पत्रकार नहीं बनना चाहतेहैं न ही गंभीर सा हित्यकार। हालांकि आपके साधारण और तथा कथित औसतदर्जेके ज्ञान और जानकारी ही आपको महत्वपूर्ण बनाती है।"

तो जनाब,अब अगर ये किस्मतन हीं है तो फिर क्या है? सही समय पर सही जगह मौजूद होना, उचित कौशल के साथ? ■

संक्षेप में

मास्क रीसाइक्लिंग

लंदन की एक कँम्पनी ने इस्ते माल किए गए फेस मास्कर का उचित उपयोग करने की शुरूआत की है। मछली पकड़ने के जाल एवं प्ला स्टिक के कचरे को रिसाइक्ल करने वाली कँम्पनी वाटरहॉल ने पुराने मास्कप को प्लाास्टिक ब्लॉकक में रूपांतरित करने के लिए एक परियोजना की शुरूआत की है जिसका उपयोग नये उत्पाकदों, डस्टकबिन जैसे उत्पादिों को बनाने के लिए किया जाएगा। सामाजिक उपक्रम एक अस्पोताल के साथ इस पहल को अंजाम दे रहा है जो पीपीई को जलाने के लिए प्रति टन : 550 पौण्ड का भुगतान करता है। स्टांर्ट अप अस्पहताल को इस्तेकमाल किए गए फेस मास्कद के लिए भुगतान करेगा जिससे कचरे से सकारात्मक परिणामों को पाया जा सकता है।

रिसाइक्लड रॉकेट बूस्टीर का उपयोग अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजने हेतु किया

नासा और स्पेसएक्स ने चार अंतरिक्ष यात्रियों के एक दल के साथ एक रॉकेट को अंतरिक्ष में भेजने के लिए एक रिसाइक्लड रॉकेट बूस्टतर का उपयोग किया, 2017 से ही स्पेसएक्स ने रिसाइक्लड रॉकेट बूस्ट्रस का उपयोग केवल कार्गो परिवहन के लिए किया है।क्रू -2 अंतरिक्ष यात्रियों को उसी फाल्कन 9 रॉकेट बूस्टहर द्वारा अंतरिक्ष में लॉन्च किया गया था, जिसने क्रू -1 मिशन के दौरान नवंबर 2020 में अपने चार सहयोगियों को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) भेजा था। फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से उड़ान भरने वाला रॉकेट अब अंतरिक्ष स्टेशन पर छह महीने का विज्ञान मिशन शुरू करने के लिए क्रू ड्रैगन स्पे सक्राफ्टकी परिक्रमा कर रहा है।

एक अस्पशताल के डीन ने नर्सों को धन्य वाद दिया

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के दिन,सरकारी मेडिकल कॉलेज और ईएसआई अस्पताल, कोयंबटूर में फ्लोरेंस नाइटिंगेल के चित्र के चारों ओर एकत्रित हुई नर्सों के आश्चय का ठिकाना न रहा जब अस्पोताल के डीन ने परम आदर के साथ उनके सामने नतमस्त क होकर उन्हें कोविड फ्रंटलाइन के रूप में प्रदान की गई सेवाओं के लिए गर्मजोशी से धन्यमवाद दिया।

शेर के कोविड पॉजिटिव पाए जाने के बाद चिड़ियाघर बंद

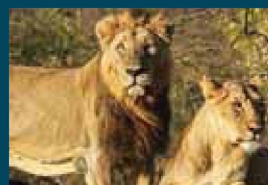

हैदराबाद के नेहरू जूलॉजिकल पार्क में चिड़ियाघर के अधिकारियों ने चेतावनी जारी की जब उन्होंने शेरों के एक सम ूह को सूखी खांसी के साथ सांस में घरघराहट होते, नाक बहते एवं उन्मेंा भूख न लगने के लक्षणों को देखा, और फिर इनका कोविड-19 का टेस्टज किया गया। आठ शेर परीक्षण के बाद पॉजिटिव पाए गए और उनमें कोरोना के हल्के लक्षण पाए गए। उन्हें अलग रखा गया और चिड़ियाघर के रखवाले जो इनकी देखभाल करते थे उन्हें सुरक्षात्मकक उपकरणों एवं मास्कय को पहनने के लिए कहा गया। सुरक्षा उपायों के मद्देनजर पार्क को जनता के लिए बंद कर दिया गया है और अन्यन जानवरों को निगरानी में रखा गया है।

डच शहरों में मधुमक्खीक होटल

मधुमक्खी होटल, मधुमक्खी स्टॉप और हनी हाइवे ऐसी कुछ तकनीकें हैं जिनका उपयोग डच लोगों ने हाल के वर्षों में अपनी शहरी मधुमक्खी आबादी को स्थिर बनाए रखने के लिए किया है। बी होटल (मधुमक्खी होटल) खोखले पौधों के तनों या पतले बांस का संग्रह होता है जो एकांतवासी मधुमक्खियों को घोंसला बनाने के लिए एकांत गुस्रख स्था न प्रदान करता है और बी स्टॉतप बस स्टॉ प के छतें मधुमक्खियों को आकर्षि‍त करने, धूल कणों एवं वर्षा के जल को अवशोषित करने के लिए देशी पौधों से ढ़की हुई होती हैं। मधुमक्खी गिनती अभ्या स के एक भाग के रूप में चौथी राष्ट्रीय मधुमक्खी जनगणना में पूरे नीदरलैंड के 11,000 लोगों ने भाग लिया, और शोधकर्ताओं ने कहा कि परिणाम उत्साकहजनक हैं।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Regn. No. TN/CCN/359/2021-2023
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

DISCOVER NEW HORIZONS

AT THE 2022 ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION IN HOUSTON, TEXAS, USA, 4-8 JUNE 2022

Take advantage of the limited-time registration rate of US$425* from 12 to 16 June.
Register today at **convention.rotary.org**.

New this year: Nonmembers are welcome to attend, so invite a friend to join you! Information about nonmember registration rates and virtual-only attendance can be found at **convention.rotary.org**.

**Registration must be paid in full between 12 and 16 June 2021 to receive the US$425 rate.*

Rotary | HOUSTON 2022